वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़
तर्कशील पथ
मार्च - 2016
अंदर पढ़े ...
धार्मिक समाधि
मस्तिष्क की सत्ता
अंधविश्वास में घिरता देश
प्रदूषण...
व अन्य स्थाई स्तम्भ
20/-
किस्मतवाद मेहनत से भागने का एक रास्ता है। कमजोर, कायर एवं भगौड़े लोगों की आखरी पनाह ...शहीद भगत सिंह

ईश्वर नहीं आया

–शरद कोकास

ईश्वर को याद किया उसने
सुख के दिनों में
आरती उतारी/प्रसाद बांटा
व्रत रखे/कीर्तन करवाये
ताकि सनद रहे
वक्त पर काम आये
आश्चर्य की बात है
वक्त पड़ा तो ईश्वर नहीं आया
पांच वक्त के नमाजी
पड़ोस के रहमान चाचा
भोपाल गए थे
गैसकांड में गुज़र गए
हफते में सात व्रत रखते थे बाबा
सूख पड़ा तो भूख से मर गए
रोज जल चढ़ाती थी अम्मा
पिछली बाढ़ में बह गई
पूजा प्रार्थना, घंटी पोथी
धरी की धरी रह गई
वह जीवित रहा/ भोगता रहा दुख
भोग लगाता रहा ईश्वर को /अपना पेट काटकर
ईश्वर के लिए/बिछौने का इंतजाम कर
खुद सोता रह टाट पर
करता रहा जीवन भर/ईश्वर की प्रतीक्षा
ईश्वर होता तो आता
नहीं था सो नहीं आया

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क जमा कराते समय 1000 रूपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416036203 पर एस.एम.एस करें।

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969
Email: baldevmehrok@gmail.com

Reg. No. HARHIN/2014/60580

संपादक :

आर.पी. गांधी - 93154-46140

संपादक सहयोग :-

बलवन्त सिंह - 94163-24802
गुरमीत अम्बाला - 94160-36203
अनुपम राजपुरा - 94683-89373
बलबीर चन्द लोंगोवाल - 98152-17028
हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

वार्षिक : 200/- रू.
विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला
Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं. 1062, आदर्श नगर,
नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।
जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)
Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel on Whatsapp : 9416036203
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com
Tarksheel on Twitter:
@gurmeeteditor

संपादकीय

शव दहन में लकड़ी का विकल्प

इंटर्नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने मृत्योपरांत शवदहन में लकड़ी की बजाए अन्य विकल्प तलाशने के स्वागत योग्य निर्देश दिए हैं। आज के समय में यह एक अच्छा संदेश है। आज देश में प्रति मिनट दस लोग मरते हैं, अर्थात लगभग 15000 मौत प्रतिदिन, जिनको जलाने के लिए अगर कम से कम दो क्विंटल लकड़ी भी लगे तो लगभग 3000 क्विंटल लकड़ी, यानि लाखों पेड़ों की बलि एक चौंकाने वाला आंकड़ा बन जाता है जिसमें लाखों टन कार्बन उत्सर्जन होना अलग से तथ्य बनता है।

आज देश का वन क्षेत्र धीरे-धीरे सिकुड़ता जा रहा है। हरियाणा-पंजाब जैसे राज्य तो न्यूनतम वन क्षेत्र से भी खाली हो चुके हैं। एक आंकड़े के अनुसार प्रत्येक वर्ष 3000 हेक्टेयर वन क्षेत्रफल का सफाया हो रहा है। ऐसी परिस्थिति में लकड़ी का आवश्यक सेवाओं में प्रयोग लगातार कम होता जायेगा। फलस्वरूप पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ रहा है।

शवदहन के अन्य विकल्प तलाशने इसलिए भी जरूरी हैं कि लकड़ी पर निर्भरता कम हो सके। कई विकसित देशों में आजकल जैव दाह की शुरूआत हो चुकी है। इस प्रक्रिया में शरीर को राख में न बदल कर तरल द्रव्य में बदल दिया जाता है।

भारत में कुछ स्थानों पर विद्युत शवदाह गृह बनाए गए हैं जिनमें शव दहन की प्रक्रिया बेहद कम समय में प्रदूषण मुक्त सम्पन्न होती है। पहले पहले इनमें मुख्यतः लावारिस लाशों को जलाया जाता था परन्तु देश में प्रबुद्ध लोगों ने जब स्वयं ऐसी प्रतिज्ञा ली कि उनका शरीर विद्युतशव दाह गृह में जलाया जाए तो अन्य लोग भी प्रेरित होने लगे। भारत की प्रसिद्ध शख्शियतों जैसे डा. राममनोहर लोहिया, दिल्ली प्रेस के संस्थापक एवं संपादक विश्वनाथ, प्रसिद्ध पत्रकार खुशवंत सिंह एवं प्रसिद्ध रंगकर्मी गुरशरण सिंह को भी विद्युत शवदाह गृह में ले जाकर अंतिम विदायगी दी जा चुकी है।

तर्कशील सोसायटी ने तो काफी समय पहले साथी कृष्ण बरगाड़ी की मृत्यु के बाद शव को मेडीकल खोजों के लिए अस्पतालों में सौंपने की शुरूआत की थी जिसके बाद एक बड़ा आंदोलन इस दिशा में चल पड़ा। स्थिति यहां तक बन गई कि मेडीकल कालेजों में शव उनकी जरूरत से भी ज्यादा आने लगे । इसके लिए सरकारी स्तर पर देश के अन्य मेडीकल कालजों में शव को ले जाने की व्यवस्था की जरूरत है ताकि ये आंदोलन भी चलता रहे और शवों का उचित उपयोग भी होता रहे। साथ ही प्रत्येक बड़े शहर में विद्युतशव गृह, एल पी जी क्रिएशन मशीन, सी एन जी आधारित शवदाह बनाये जाने चाहिएं ताकि लकड़ी का अनावश्यक जलाया जाना रोका जा सके।

ईमेलःgurmeetambala@atheist.com

संकेतिका

विशेष लेख ः **पृष्ठ संख्या**

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक इस्मालाबाद (कुरुक्षेत्र) में दिनांक 15-05-2016, दिन रविवार को प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

संपर्क सूत्रः

टहल सिंह गिल- 8901287805

कर्मजीत ठसका- 9896766335

23 मार्च पुण्य तिथि पर विशेष

धार्मिक समाधि

''पाश''

शहीद 'पाश' को जन-मानस में ज्यादातर एक जुझारू कवि के रूप में जाना जाता हैं। परन्तु उन्होंने ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों का कितना गम्भीर अध्ययन किया हुआ था, उनका यह पक्ष जनमानस के सामने बहुत कम आया है। कविता जिन्दगी में जहां भावुक पक्ष को प्रस्तुत करती है, वहीं विज्ञान जिन्दगी में तार्किक पक्ष को पेश करता है। पाश की कविता ने जहां बुंलदियों को छुआ है उनका गद्य पक्ष भी विश्लेषण करने की उनकी सामर्थ्य का बेजोड़ नमूना है। 'पाश' को इस बात का अहसास था कि वैज्ञानिक चिन्तन का हमारे समाज में बेहद अभाव है, अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर उन्होंने हरदयाल स्टडी सेंटर बनाया, अध्ययन के लिए पुस्तकें इकट्ठी कीं और आपस में गहन विचार विमर्श किए और इस आधार पर जो विचार बने उन्हें 'पाश' ने गद्य के रूप में लिखकर 1980 से 1985 तक 'हाक' नाम के अखबार में छापकर लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया, जिसे 1988 में उनकी शहादत के पश्चात तर्कशील सोसायटी पंजाब द्वारा अपनी पत्रिका के माध्यम से लोगों के सामने दोबारा लायी गयी। यह रचना उन्हें स्मरण करते हुए तर्कशील के पाठकों के लिए 'पाश' की पुण्यतिथि पर विशेषतौर पर अनुवाद करके प्रकाशित की जा रही है। ***-संपादक मण्डल***

समाधि के धार्मिक संकल्प के बारे में :-

धार्मिक लोगों से आपने समाधि लगाना, ध्यान या रुहानी अभ्यास जैसे शब्द आम ही सुने होंगे, बेशक आम आदमी के लिए यह गोरख धंधा ही है, परन्तु जनसाधारण के अतिरिक्त धार्मिक लोगों के लिए भी यह गोरख ंधा ही है, प्राचीन ऋषियों ने इस की खोज जंगलों की एकान्तया पहाड़ी गुफाओं में की थी। उस समय विज्ञान एवं मनोविज्ञान नही था । भाषा की सामर्थ्य बहुत ही कम थी, प्रत्येक मानसिक अनुभव को भाषा के द्वारा ब्यान करना असम्भव था, इसलिए समाधि वाली मनोस्थिति को अलग किस्म का होने के कारण ऋषियों को काफी असमंजस की स्थिति में डाले रखा । मध्यकाल के प्रारम्भ में पातंजलि ऋषि के योग मत पर भारतीय समाज के एक चिन्तक वर्ग ने फिर काफी अभ्यास किया तथा गोरखनाथ, मछंदरनाथ, चौरंगीनाथ आदि ने रुहानी अभ्यास के शिक्षण संस्थान शुरू किए ।

हिन्दु फिलासफी अपने विकास के अन्तर्गत जिन छः दर्शन प्रबन्धो में से निकली है, सभी रुहानी मत थे, परन्तु पहले तीन मतों में तपस्या, ध्यान, समाधि का काफी जोर रहा है आत्मा एवं मन के बारे में इन दर्शनों में विभिन्न प्रक़ार के विचार हैं, जैसे सांख्यमत के अनुसार मन एवं उसके विचार या संकल्प के बनने की व्याख्या इस प्रकार है :-

''संसार में दो चीजों का स्वतन्त्र अस्तित्व है - प्रकृति (पदार्थ) तथा पुरश्य (आत्मा) प्रकृति में सत्योत्मा के तीन गुण पैदा होते हैं प्रकृति एवं पुरश्य के मेल में बुद्धि पैदा होती है। बुद्धि से अंहकार पैदा होता है, अंहकार में पांच इन्द्रियाँ, पांच क्रियाएँ और एक (अनुभव-क्रिया का यौगिक) मन कुल ग्यारह चीजें पैदा होती हैं और कुल 24 नियम है, जिन कारण चीजें पैदा होती है और कुल इन 24 नियमों का ज्ञान होने तक बार-बार जन्म होता रहता है।'' सारा ब्रह्मण्ड मनुष्य के अंदर ही मानकर'' स्वयं को जानने का दर्शन है और स्वयं को जानने के आठ रास्ते हैंः

(1) संयम (2) अनुशासन (3) आसन (4) प्राणायाम (5) इन्द्रियों के अनुभव को इकट्ठा करना (6) मन की जड़ता (7) ध्यान की एकाग्रता (8) समाधि ।''

सांख्यमत संसार प्रक्रिया की सोच संरचना बारे धर्म का पहला विचार प्रबन्ध था और योग (हठ योग) मत का मानस मन को मुक्त दशा तक पहुंचाने का एक मात्र प्रबन्ध । आज भी कई लोगों के मन में वे ही पुराने धार्मिक अभ्यासों के संकल्प और विधियां बैठी छुपी हैं .... (प्राप्त पाण्डूलिपि में कुछ शब्द मिटे हुए हैं-संपादक) क्रिया प्रणाली और मानसिक रोग की संरचना के बारे में जानकारी प्राप्त करना मनोविज्ञान का क्षेत्र था, और उसने ही जीव-विज्ञान का आधार बनाकर इस का पता लगाया । इस लेख में विज्ञान एवं मनोविज्ञान द्वार की गयी खोजों पर आधारित व्याख्या ही की जायेगी ।

अनुभव की संरचना ः- भक्ति एवं रुहानी अभ्यास के बारे में समझने के लिए अनुभव की संरचना को समझ लेना अत्यावश्यक है। जीव विज्ञान के विद्यार्थी यह जानते है कि हमारे दिमाग में लगभग दस बिलीयन नर्व सेल (कोशिकाएं) और सौ बिलीयन सपं सैल एक छोटी से बायोलोजीकल बैटरी के रूप में है और कुछ मात्रा में बिजली की ध्‍ाारा पैदा करने योग्य हैं। पांच ही प्रकार के अनुभव दिमागी नाड़ियों के अन्दर विद्युतीय तंरगों के द्वारा संचारित होते है, इन तरंगों की गति लगभग 100 मीटर प्रति सैकिण्ड होती है, परन्तु बिजली के इलैक्ट्रॉनो का बिजली की तार में चलना अलग तरह से है और इन्द्रीय प्रभावों का दिमागी नाड़ियों में चलना थोड़ा अलग और जटिल है। इलैक्ट्रान तार के अन्दर पदार्थ के एटमों के रूप में मौजूद होते है, जबकि इन्द्रीय अनुभव शरीर से बाहर पकड़े जाते हैं। तार में विद्युतीय एक दूसरे को धक्का देते हुए जगह बनाते रहते हैं, परन्तु मस्तिष्क की नाड़ियाँ तार की तरह साधारण एवं एकसार नहीं है, प्रत्येक नाड़ी विभिन्न प्रकार के तंतुओं से निर्मित है, एक नर्व सैल के समाप्त होने से पहले और दूसरे के प्रारम्भ होने में 0.0000005 सैंटीमीटर का फासला होता है, यह फासला सिनैपसिज और नर्व सिरों का न्यूरोनज कहा जाता है, जब इन्द्रीय प्रभाव संदेश न्यरोनों के जोड़ो वाली जगह तक एक आवेश के रूप में प्रवेश करता है, उससे आगे जाने की आवश्यकता नहीं होती दिमागी संदेश के द्वारा उस सिरे से सिनेपासिज में एक खास तरल रसायन टपकाया जाता है, जो अगले नाड़ी कोष में जाता है और उस नाड़ी सैल में से भी आवेश संचारित होकर अगले न्यूरीन तक जाता है, वहां से फिर उसकी ग्रन्थि से रसायन टपक कर आगे फिर बिजली तरंग पैदा करता है, इस संदेश की यह यात्रा एक मिली सैकंड में पूरी हो जाती है, इस तरह हमारे शरीर में एक अनुभव संचारित होता है, बिजली रसायन यात्रा की ''समाधि'' आदि में कैसे और क्या भूमिका बनती है, इसे आगे प्रस्तुत किया गया है।

समाधि की मनोस्थितिः

योग मत का पांचवा, छठा, सातवां पड़ाव एकाग्रता से संबंधित है। एकाग्रता मन में तनाव की एक स्थिति को कहते है अर्थात एक भावना या विचार को समक्ष रखके समस्त मानसिक क्रियाएं केन्द्रित कर लेना । यह एक किस्म का तनाव ही एकाग्रता कहलाता है, जिससे आगे तनाव मुक्त स्थिति या त्मसंगंजपवद में जाया जा सकता है, यह तनाव मुक्त अवस्था आनन्दपूर्ण एवं रहस्यमयी प्रतीत होती है, इसी अवस्था को धार्मिक लोग मोक्ष की प्रथम स्थिति, मंजिल आदि समझते हैं (और इसी प्रकार की मनोस्थिति बनाने हेतू नाम दान आदि की दुकाने चलती रहती है। -सं०)

इस अवस्था तक पहुंचने के लिए भक्तजन आत्म सम्मोहन (ैमस िभ्लचीवजपेउ) करते हैं, यह एक तकनीक है जिसके कि योग मत की तरह आठ पड़ाव है, ध्यान-लगाने (Meditation) के लिए सब से पहले योग वाले चार ढंग ही शारीरिक तैयारी के लिए किसी न किसी रूप में प्रयोग किए जाते हैं, फिर आगामी तीन पड़ावों में आत्म सम्मोहन का अभ्यास किया जाता है और इन पड़ावों में होते मानसिक भ्रम अलौकिक कहे जाते हैं। अनुभव की संरचनाः-

मानवीय अनुभव दो तरह के हैं एक बाह्यमुखी (Subjective) दूसरे अन्तर्मुखी (व्इरमबजपअम) बाहयमुखी अनुभव तथ्यों पर आधारित होते हैं,

यानि एक व्यक्ति द्वारा प्राप्त अनुभवों का निरीक्षण किया जा सकता है अन्तर्मुखी अनुभव तथ्यपूर्ण (थ्ंबजअंस) नहीं होते, इनकी अन्य व्यक्ति पुष्टि नहीं कर सकता, इनकी गवाही सिर्फ अनुभव किया व्यक्ति ही देता है। जैसे अगर एक बच्चा, जिसे बिस्तर पर पेशाब करने की आदत है, गहरी नींद में सपना देखता है कि वह बिस्तर से उठा, और बाथरूम में जाकर पेशाब कर आया, अब अगर उसका बिस्तर तत्काल बदल दिया जाए तो वह यह बात मानने को तैयार नहीं होगा कि उसने बिस्तर गीला किया है, परन्तु उसका सच तथ्यों पर आध ाारित नहीं है, यह उसका अन्तर्मुखीअनुभव है, निरीक्षण करने पर सचाई सामने आ जाएगी । इसी तरह समाधि की अवस्था में बने अनुभव भ्रम कहलाते हैं, उसको विश्वास की कसौटी पर नही परखा जा सकता ।

अन्तर्मुखी अनुभवों में भ्रमों की किस्में :-

मानसिक भ्रमों के तीन रूप हैं, जो भक्ति, रुहानी अभ्यास, समाधि के समय पैदा होते हैं।

1. इलूजन (Illusion) यह ऐसा भ्रम है जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा गलत प्रभाव लेकर दिमाग को गलत सूचना प्रेषित कर देता है, पांच ज्ञानेन्द्रियों के अनुभव भी पांच किस्म के हैं जैसे गर्मी के मौसम में सड़क पर पानी का भ्रम होना । Indian Goo Se Berry खाने के पश्चात साधारण पानी भी मीठा लगना, सिनेमा पर्दे पर तस्वीरों का चलते फिरतेदिखना।जादूगरों, धर्मगुरूओं द्वारा हवा में से चीजें पैदा करके दिखाना भी एक प्रकार का इलूजन है। जहां कहीं भी डा. काव्वूर जैसे साहसी वैज्ञानिकों ने निरीक्षण किया है, सब जगह धोखा ही पाया है। इसी प्रकार सूंघने स्पर्श करने के भी कई बार भ्रामक अनुभव प्राप्त होते हैं।

2-हेलिऊसीनेशन (Hallucination) यह मनोभ्रम ज्यादातर भक्तजनों को होता है, मनोविज्ञान में यह नाम उस नकली अनुभव को दिया गया है जो शारीरिक रसायनिक-जीव-विज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक कारणों से दिमागी क्रियाओं में आए बेढंगेपन के कारण पैदा होते हैं, जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया गया है कि इन्द्रीय के कारण पैदा होते है, और इन्द्रीय आवेश प्रत्येक नाड़ी तंत्र के सिरे (न्यूरीन) से सिनैपसिज में टपकने वाले एक विशेष रसायनी तरल के रुप में तंतु से तंतु तक जाने की क्रिया है। इस प्रकार मस्तिष्क में प्रत्येक संवेदना एक अलग किस्म के ग्रन्थि रस के साथ हुई रासायनिक क्रिया का ही परिणाम होती है। डर, उदासी, नींद, भूख विषाद, आनन्द, काम, वेग, चिंता, उत्तेजना, घृणा, अपनत्व आदि प्रत्येक मनोदशा को पैदा करने वाली विद्युतीय तरंग के लिए अपना अलग तरह का ग्रन्थिरस एवं रसायनी अमल है। हिलुसेनिएशन दिमाग का वह बेढंगापन है जिस में बाहयमुखी सच्चे अनुभव के बिना किसी-बात-विशेष के साथ संबंध ित ग्रन्थि रस को संचारित कर लिया जाता है। स्वीटरजरलैण्ड के डाक्टर वाल्टर हैस, येल विश्वविद्यालय के डा. जे. डेलगडो, मिशीगन विश्वविद्यालय के जेम्स ओल्डन आदि अनेक विज्ञानी लगभग प्रत्येक प्रकार की संवेदना नकली ढंग से पैदा कर चुके हैं। यह अनुभव बिल्कुल वास्तविक अनुभव जैसा ही होता है। हिप्नोटिज्म इसी विधि से खोजा गया है। हिलोसुनिएशन संबंधी नकली संदेश को संचारित करने के चार मुख्य ढंग हैं।

(a) Rhythmical Sensory Stimulation :- यह ढंग नियमत ताल के द्वारा शरीर को एक स्थिति में लाकर विशेष ग्रन्थि रस संचारित करने का है। ढोलक बजाने, तालियां बजाने, मंत्र का उच्चारण, ऊँची आवाज़ में जय बोलना, नाचना, थोड़े अन्तराल के पश्चात रोशनी को पैदा करके आंखों पर फैंकना, काले धब्बे को एक टक निगाह टिका कर देखना आदि तकनीकें हेलीसुनेटरी अनुभव पैदा करती हैं। कई बार जगराते या अन्य धार्मिक समागमों में कुछ लोग जोर-जोर से सिर हिलाने लग जाते हैं उसका कारण-कारण ये ही हेलिसुनेटरी अनुभव है। जोकि ढोलक बजने, तालियां बजाने, चिमटे-छैने बजाने, सुरबद्ध गाने के सम्मिलित तरीके का परिणाम होता है। गुरुद्वारों मंदिरों, सत्संगों में एक आनन्दमयी अनुभव की प्राप्ति होती है, यह भी ''ताल'' क्रिया द्वारा पैदा हेलिसुनेशन ही हैं। एक मंत्र या गुरू द्वारा दिए पैदा हेलिसुनेशन ही है। एक मंत्र या गुरू द्वारा दिए नाम का जाप करने

से भी भक्तों को यह नकली अनुभव ही प्राप्त होता है जिसे अलौकिक ज्ञान की प्राप्ति कहकर मन को भ्रम में रखा जाता है। जबकि ऐसे ज्ञान को प्राप्त भक्त जन भी अन्य लोगों की तरह जीवन में सुख व दुख के शिकार होते हैं। आम आदमी से ज्यादा उनको कुछ प्राप्त नहीं होता लेकिन मनोभ्रम के कारण वे अपने को अलग समझते रहते है।

(B) Chemical Stimulation :- इसका भाव रसायनों की सहायता से आवेश पैदा करना है। रासयनिक क्रियाओं द्वारा मनुष्य हेलिसुनेशन सदियों से प्राप्त करता आया है। भांग, सुल्फा, गांजा, चरस, अफीम आदि रसायनों द्वारा उत्पन्न क्रियाओं से नकली अनुभव से ग्रन्थि रस संचारित हो जाता है। मद्रास का मद्रास का बालाजी मन्दिर भारतीय हिन्दुओं का प्रसिद्ध पूजा केन्द्र रहा है। यह प्रसिद्ध था कि भक्तजन इस मंदिर में अलौकिक अनुभव को प्राप्त करते थे । परन्तु इसकी असलियत शीघ्र ही खुल गया, 7 मई 1963 को मन्दिर के मुख्य पुजारी के पास से पुलिस ने काफी मात्रा में गांजा बरामद किया । जांच-पड़ताल के समय उसने बतलाया कि वह प्रसाद में गांजे की कुछ मात्रा मिला देता था, जिसे हेलीसुनेशन के कारण भक्तजन अलौकिक आनन्द अनुभव करते थे । इसी तरह धार्मिक स्थानों में धूप-अगरबती आदि की सुगन्धियों से यही प्रभाव पैदा किया किया जाता है। अब तो ''भक्ति गोली'' भी तैयार हो चुकी है यह गोलियां दिमागी बूस्टर का काम देती हैं । लाईसरजिक, ऐसिड मानजुआना, हेराइन, मैसकालीन, एल.एस.डी., डिथालामाइड नामक दवाईयां दिमाग को उत्तेजित कर देती हैं जबकि :Legerctip, Librium, Valium, Mlilton, Amital, Lodium आदि दवाइयाँ मन को शांत, एकाग्र और गहरे आनन्द की अवस्था में ले जाती है। डा. अलबिट ह्रॉफ मैन ने स्वयं एल.एस. डी. की थोड़ी सी मात्रा सेवन करने पर अपना अनुभव इस प्रकार प्रकट किया है - ''मैनें अपनी आत्मा को शरीर में से बाहर निकलते देखा । मेरी आत्मा प्रकाश में तैर रही थी और मैं अपना मुर्दा जिस्म देखकर चीखें मार रहा था।'' एल.एस.डी. के एक कण का केवल दस लाखवा भाग भी मानवीय दिमाग में एक रहस्यमयी हेलिसुनेशन पैदा कर सकता है। इसी प्रकार के मनोभ्रम को ही भक्त लोग रुहानी आनन्द कहते हैं और एक भ्रम की छाया में जीते रहते हैं।

(C) Biological Stimuli - शरीर के अन्दर बायोलोजिकल संतुलन में गड़बड़ी के कारण दिमाग में कई बार विशेष अनुभव महसूस होने लग जाते हैं। कैनेडा के प्रो. अरलैडो मिल्लर और ऐलिन फिशर ने खोज की है कि मानवीय व्यवहार में कुछ विशेष बेढंगे रूप शरीर में क्रोमोसोमल के कारण वजूद में आ जाते हैं। उन्होंने पता लगाया कि जिन व्यक्तियों में सदा उदासी, विषाद, वैराग आदि होते हैं उनमें 22 जोड़े गग क्रोमोसोम के और 23वां XYZ क्रोमोसोम का होता है। जब कि साध ारणत् स्वस्थ व्यक्ति में 22 जोड़े 'XX' एवं 23वां 'XY' का होता है। इसी तरह विटामिनों एवं ऐन्जाइमों की कमी के मनुष्य में मानसिक भटकन, अशान्ति का कारण बन जाती है। विटामिन ठप् की कमी से बेरी-बेरी रोग पैदा हो जाता है, कई अवस्थाओं में ऐसे व्यक्ति फक्कड़, मनमौजी या उलजलूल इलहाम आने के कारण जाने जाते हैं । Pellagra के रोगी भी रुहानी शान्ति के लिए भटकते रहते हैं, जबकि असल में उन्हें विटामिनों एवं नाइटोनिको की जरुरत होती है। इसी तरह विटामिनों एवं इन्जाइमों की कमी से हरमोन्स असंतुलित हो जाते हें और आत्माओं, जिन्नो, के दर्शन हो जाते है । ऐसे व्यक्तियों में पैराथराइड गलैंड में निकलने वाले हार्मोन्स च्तंजी ल्तवगपदम की सप्लाई कम हो जाती है, ऐसे व्यक्ति गुरुओं, देवताओं, पीरों के दर्शनों के शिकार होते रहते हैं कई तो उनसे वार्तालाप करने के दावे करते भी देखे जाते हैं।

(D) Psycholoical STI Multi - मनोविज्ञान का आम तथ्य है कि मानवीय मन सुझावों के प्रति बड़ा संवेदनशील एवं ग्रहणशील है। सुझाव एवं प्रेरणा स्वयं के द्वारा भी हो सकते हैं और दूसरों के द्वारा भी । बहुत सारे मानसिक विकार हिप्नोटिक सुझावों द्वारा मन में भरे जा सकते हैं। धार्मिक शिक्षा और जादू, चमत्कारों आदि वाला

सामाजिक वातावरण स्वयं ही धीमी एवं लगातार प्रक्रिया है। आत्मा-प्रेतात्मा के बारे में बचपन से ही रोचक कहानियां सुनते रहने के कारण लगातार ब्रेन वाशिंग होती है। अच्छे पढ़े-लिखे व्यक्ति भी, भक्ति या समाधि के संकल्प के कारण, जो भी देवी देवताओं के चित्र भक्तजनों ने समक्ष उजागर करते हैं। उनके दिमागों में बैठ जाते हैं। हिलुसिनेशन वाली मानसिक स्थिति में उसे सभी चीजे दिखनी शुरू हो जाएंगी । प्रेरणा के माध्यम से हिलुसिनेशन का दायरा बेहद विशाल है। पूजा-पाठ में ताड़ी लग जाना (गुमसुम होना), चेलों के बोलों पर खेलने लग जाना, अरदासों-मन्नतों, तीर्थयात्राओं, धागे टोने के द्वारा बीमारियों से मुक्त हो जाना और कुछ नहीं केवल आटो या हीटरो हिप्नोटिज्म का ही प्रभाव है यह सब सुझावों के प्रति मन की ग्रहणशीलता उत्तेजना से उत्पन्न हिलुसिनेशन को ही सबसे बड़ी जमा पूँजी समझते रहते हैं और खुश होते हैं।

(3) Delusion - यह नकली अनुभवों की तीसरी किस्म है डिलूजन मानसिक भ्रमों की सबसे खतरनाक एवं व्यापाक श्रेणी है। इस की जड़ें हमारी सभ्यता के जंगली जीवन समय से जुड़ी है, यह झूठे विश्वासों का ताना बाना है। भूत-प्रेत, बलि देना, तीर्थ यात्रा, जाप, भक्ति, स्वर्ग-नरक, मोक्ष, और यहां तक की परमात्मा के बारे में पैदा किए हुए पीढ़ी दर पीढ़ी विचार, सभ्यता के अंग बन चुके है। इन बे-सिर पैर की धारणाओं का प्रभाव किसी न किसी तरह प्रत्येक प्राणी में अचेत मन में होश संभालते ही बिठा दिया जाता है। अचेत मन की वह छाप व्यवहार और सोच में डिलूजन के रुप में क्रियाशील रहती है। डिलूजन में रुहानी शान्ति, सहज आनन्द, मुक्त अवस्था आदि दिमागी बेढंगेपन (Abnormality) का जन्म होता है। डिलूजन के वजूद के कारण ही लोग हिलुसीनेशन में ऊंट-पटांग अनुभव प्राप्त करते हैं। तात्पर्य है कि डिलुसन के कारण अंदर की यात्रा का संकल्प पैदा होता है और आगे हिलुसिनेशन लोगों को उस यात्रा के नकली अनुभव कराता है। डिलूजन के कारण ही कई बार बड़े सच्चे व्यक्ति भी ''अन्दर का द्वार खोलने'' का अनुभव ब्यान करते हुए मिल जाते हैं। असल में झूठ तो वे बोल नहीं रहे होते, क्योंकि अन्तर्मुखी अनुभव तो उन्होनें महसूस किया है। बस ये लोग यह नहीं जानते की ये अनुभव मन की एक इब खास स्थिति के कारण पैदा हुए हैं। इनके पीछे कोई दिव्य शक्ति नहीं हैं। वे सिर्फ डिलूजन की सवारी करके हिलुसिनिशेन में प्रवेश करके आए होते है नाड़ी तंत्र में असाधारण बेढंगेपन के कारण संदेश वाहक रसायनों की अबनार्मल क्रिया से मन में भ्रामक अनुभव जन्म लेते रहते हैं।

समय की मांग :- ध्यान लगाते समय सांसो में सुस्ती, परिणाम खून में आक्सीजन का कम होना, कार्बनडाय आक्साईड का बढ़ना - और कार्बनडायअक्साईड के बढ़ने से हेलीसुनेटरी प्रभाव में बढ़ोतरी । इस प्रकार के अनुभव के लिए चाहे मैंडरेक्श या हेरोइन की गोली खाई जाए या समाधि ा लगा कर बैठा जाए । मतलब एक ही है। आज हमारे देश में नशों के प्रयोग की मात्रा बढ़ रही है। दूसरे लोगों के साथ धार्मिक लोग भी नशों के विरुद्ध बोल रहे हैं। (लतीफा) काश ! हमारे देश की जीवन तर्ज भी वैज्ञानिक चिन्तन पर आधारित होती, प्रशासन, राजनीतिक पार्टियों, प्रैस यह जान सकते कि भक्ति या समाधि दूसरे नशों से भी ज्यादा खतरनाक, दुष्प्रभावी, और विकास की विरोधी है, इसलिए नशों पर पाबंदी से पहले धार्मिक समाधियों पर पाबंदी लगानी आवश्यक है।

(अनुवाद : गुरमीत सिंह, अम्बाला)

अनमोल वचन

'व्यक्ति मृत्यु से उसी प्रकार डरते हैं, जिस प्रकार बच्चे अंधेरे में जाने से; जिस प्रकार बच्चों के अन्दर वह स्वाभाविक डर उनको सुनाई गई कहानियों के साथ बढता है, वही बात व्यक्तियों के साथ घटित होती है।'

-सर फ्रांसिस बेकन

विचार श्रृंखला

कण-कण में विज्ञान

□ शरद कोकास

वैज्ञानिक शब्द का अर्थ यदि आप शब्दकोश में ढूंढने जाएंगे तो आपको अनेक अर्थ मिलेंगे, अध येता, अनुसंधानी, खोजी, तत्वज्ञानी, प्रमाणवादी, मीमांसक, विचारक, शास्त्री, साइंटिस्ट, विज्ञानी, आविषकारक इत्यादि। इस सवाल का जवाब सामान्य ज्ञान या विज्ञान की किताबों में ढूंढेंगे तो अनेक उत्तर अनेक परिभाषाएं मिलेंगी। विज्ञान एक ऐसा सम्प्रत्यय है, जिसका उपयोग आज हम बारम्बार करते हैं। मानव जाति के विकास में विज्ञान के माध्यम से अपनी भूमिका का निर्वाह करने वाले मनुष्यों को हम वैज्ञानिक कहते हैं। यह प्रश्न मन में उठना स्वाभाविक है कि मनुष्य के लिए सुविधा जुटाने वाले तथा अपनी बुद्धि से इस संसार को मनुष्य के लिए बेहतर बनाने वाले प्रथम वैज्ञानिक कौन थे? जब विज्ञान को विज्ञान नहीं कहा जाता था, क्या तब वैज्ञानिक नहीं होते थे? सामान्यतः पुरातात्विक और साहित्यिक स्त्रोतों के माध्यम से हमें प्राचीन सभ्यताओं में प्राचीनतम वैज्ञानिक परम्राओं के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है तथा हम वैज्ञानिक विकास के विभिन्न चरणों एवं उपलब्धियों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं

हमारे ज्ञान की सीमा यहीं तक है किंतु ज्ञान यहां पर समाप्त नहीं होता। हम चेतना सम्पन्न मनुष्य हैं और मानव मस्तिष्क के विकास के प्रत्येक चरण का अध्ययन कर सकते हैं इस आधार पर उस मनुष्य के बारे में सोचिये, जिसने लाखों वर्ष पूर्व अचानक हाथों से कोई पत्थर उछाल दिया था और वह किसी और जगह जाकर गिरा था। उसके मन में तुरंत यह विचार आया होगा...'अरे यह तो एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकता है' इस तरह विचार करने वाला व्यक्ति उस युग का प्रथम वैज्ञानिक था।

अब आप ऐसे ही अन्य मनुष्यों के बारे में सोच सकते हैं। पहली बार जिसने अग्नि का प्रयोग किया। पहली बार जिसने पत्थरों से औजार बनाए। पहली बार जिसने छाल को वस्त्र की तरह इस्तेमाल किया। पहली बार जिसने खाने योग्य और न खाने योग्य वस्तुओं की पहचान की। पहली बार जिसने पंछियों की तरह उड़ने की कोशिश की और इस कोशिश में पहाड़ से कूद कर मर गया या जो मछली की तरह तैरने की कोशिश में पानी में डूब गया। ऐसे सभी मनुष्य इस मनुष्य जाति के प्रथम वैज्ञानिक थे। इसी तरह खानपान व अन्य आदतों की खोज करने वले मनुष्यों के विषय में भी कहा जा सकता है। वह मनुष्य जिसने पहला जहरीला फल खाया और मरकर दुनिया को यह बता दिया कि इसके खाने से मौत हो जाती है। क्या दुनिया का पहला वैज्ञानिक डायडीशियन नहीं था?

आज यह विज्ञान बहुत आगे जा चुका है। नित नई खोजों और आविष्कारों ने मनुष्य की दुनिया में तमाम सुख सुविधाएं जुटा दी हैं आज जिसने यह मोबाइल बनाया या कम्पयूटर बनाया और जो मनुष्य रॉकेट को अंतरिक्ष में भेजकर नए-नए ग्रहों पर पहुंच रहा है और वहां बस्ती बसाने के स्वप्न देख रहा है। वह आज का वैज्ञानिक है। भले ही आज हम पेड़ लुढ़का कर चक्के का आविष्कार करने वले उस मनुष्य को वैज्ञानिक न मानें, लेकिन उसके योगदान की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इस

तरह हर युग के अपने वैज्ञानिक हुए हैं। हम उन सभी वैज्ञानिकों के ऋणी हैं, जिन्होंने मानव जाति के उत्थान में अपना योगदान दिया। इतना तो आप जान ही गए होंगे कि यह सब कुछ मनुष्य के इसी मस्तिष्क की वजह से ही संभव हो सका है। मानव जीवन में विकास संबंधी समस्त क्रांति पीढ़ी दर पीढ़ी उसके मस्तिष्क में दर्ज होती रही है। अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए वह मस्तिष्क की क्षमता का उपयोग कर नित नए आविष्कार करता रहा है। आज दस-बारह साल का एक बच्चा मनुष्य द्वारा किए जाने वाले वह तमाम कार्य कर लेता है, जिन्हें सीखने में हमारे पूर्वजों को लाखों साल लगे।

पृथ्वी पर जन्म लेने के बाद मनुष्य निरंतर प्रयोग करता गया और पिछले अनुभव के आधार पर पुराने को छोड़ नए को अपनाता गया। लेकिन सभ्यता के विकासक्रम में धीरे-धीरे यह मनुष्य दो भागों में बंट गया। कुछ लोग तो अपने पुरखों की तरह नवीनता की तलाश में जुट गए और कुछ ने अपने पूर्वजों द्वारा प्रदत्त ज्ञान को अंतिम मान कर संतोष कर लिया। इसका कारण यह नहीं कि वे अपने जीवन के प्रति पूर्णतः संतुष्ट थे, बल्कि शायद उन्हें नवीनता की आवश्यकता ही नहीं थी। हालांकि पूर्णतः ऐसा नहीं हुआ। वे नवीनता और पुरात्नता दोनों को एक साथ स्वीकार करते रहे। आज का मनुष्य इन्हीं दोनों का घालमेल बनकर रह गया है। विडम्बना यह हे कि आज वह जहां नए को स्वीकार कर रहा है, वहीं बगैर उनकी प्रासंगिकता परखे पुराने विश्वासों को भी साथ लिए चल रहा है। एक ओर वह टेस्ट ट्यूब बेबी के जन्म के चिकित्सकीय विज्ञान से परिचित है। वहीं दूसरी ओर प्राचीन ग्रंथों और धार्मिक मान्यताओं के आधार पर इस बात में भी विश्वास करता है कि स्त्री, सूर्य की रोशनी से या हवा मात्र के संसर्ग से संतान को जन्म दे सकती है। एक ओर वह विज्ञान को भी मानता है और दूसरी ओर चमत्कारों में भी विश्वास रखता है।

मानव मस्तिष्क में कार्यरत इस दोहरी प्रणाली में कुछ भी अस्वाभाविक नहीं है। इसलिए कि ज्ञान और विज्ञान दोनों ही उसने अपने पूर्वजों से जस का तस पाया है। जिन मनुष्यों ने विरासत में प्राप्त इस ज्ञान की विवेचना कर नए प्रयोगों के माध्यम से उसे खारिज किय है अथवा आगे बढ़ाया है और जो वास्तव में मनुष्य जाति के भविष्य के लिए चिंतित एवं प्रयासरत है वे मनुष्य ही मानव जाति का सच्चा प्रतिनिधित्व करते हैं। हम सच्चे वैज्ञानिक उन्हें ही कह सकते हैं। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि शेष मनुष्य, मनुष्य कहलाने के हकदार नहीं हैं। उन मनुष्यों का इसमें कोई दोष नहीं है। सैंकड़ों वर्ष पूर्व ही उनके मस्तिष्क को विचार के स्तर पर पंगु बना दिया गया है। उसने सोचने-समझने की शक्ति छीन ली गई है तथा धर्म एवं संस्कृति के नाम पर उनके भीतर यह भ्रम प्रस्थापित कर दिया गया है कि जो कुछ प्राचीन है वही अंतिम है।

विडम्बना यह है कि यह भ्रम उत्पन्न करने वाले स्वयं नवीनता का उपभोग करते रहे और अपने अनुयायियों को इसका निषेध करने के लिए कहते रहे। ए सी में बैठकर प्रवचन करने वाले बाबाओं को हम इसी श्रेणी में रख सकते हैं। वस्तुतः ज्ञान अपने-आप में परिपूर्ण होता है और उसकी बात अंतिम होती है। इसके विपरीत विज्ञान किसी बात को अंतिम नहीं मानता है और प्राचीन की नए संदर्भो में व्याख्या करता है। इसलिए कि यह प्रयोगों और परिणाम पर आधारित होता है। विज्ञान क्या है यह जाने बगैर हम किसी भी बात को विज्ञान से जोड़ देते हैं और उसे ही अंतिम सत्य मान लेते हैं जबकि विज्ञान स्वयं उसे अंतिम सत्य नहीं मानता। हम विज्ञान और छद्म विज्ञान में अंतर नहीं कर पाते। इसका कारण यह है कि अभी हमने विज्ञान को सही तरीके से नहीं जाना है। यह जानने के लिए हमें विज्ञान क्या है। इस बारे में कुछ बातें जानना जरूरी है। विज्ञान पर हमारी आस्था कम होने के कुछ कारण और भी हैं।

आज बहुत सी साम्राज्यवादी और पूंजीवादी ताकतें विज्ञान का अपने हित में उपयोग कर रही हैं। वे मनुष्यता के विनाश के लिए इसका उपयोग कर

रही हैं, जो मनुष्य को विज्ञान द्वारा मिलने वाली सुविधाओं की तुलना में उस पर अधिक हावी है। जैसे कि मोबाइल का आविष्कार हमें इसलिए अच्छा लगता है कि यह हमारे काम की वस्तु है, लेकिन वहीं बम और बंदूकों के आविष्कार से हमें डर लगता है, क्योंकि यह हमारे विनाश के लिए हैं। विज्ञान वस्तुतः अवलोकन, अध्ययन, परीक्षण तथा प्रयोगों के माध यम से प्राप्त किसी विषय का क्रमबद्ध ज्ञान है। प्रकृति में प्रारंभ से ही समस्त चीजें बिखरी हुई हैं। मनुष्य ने अपनी आवश्यकता के तहत उन वस्तुओं का उपयोग करना प्रारंभ किया। जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में उसने उपलब्ध संसाधनों का दोहन किया। फलस्वरूप उसने अनेक वस्तुओं का आविष्कार किया। अपनी परिकल्पना को मूर्त रूप देते हुए उसने ऐसी अनेक विधियों का विकास किया, जो उसके जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को हासिल करने में उसे सुविधा प्रदान करती थीं। विज्ञान का जन्म ही उत्पादन लागत और समय में कमी लाने के लिए हुआ।

इस तरह विज्ञान एक विशिष्ट अध्ययन पद्धति है, जो व्यक्ति की प्रश्नाकुलता का समाधान करती है। घटनाओं के मूल में जो कारण है, उनकी खोज करती है। उनका क्रमबद्ध, तर्कसंगत बोध प्रस्तुत करती है, जिसका प्रयोगों के माध्यम से परीक्षण किया जा सकता है। विज्ञान के सिद्धांत इन्हीं प्रयोगों पर आधारित होते हैं, जिन्कें सुरक्षित रखा जाता है। यह कई असफल प्रयोगों के बाद होता है, जिनका ध्ध्यान रखते हुए वैज्ञानिकों की अगली पीढ़ी इन्हीं सिद्धांतों पर काम करती है। जो प्रयोग सफल हो चुके हैं, उन्हें दोहराया नहीं जाता। विज्ञान मानता है कि हर बात के पीछे कोई कारण होता है और उसका एक निश्चित परिणाम होता है। अगर हम कारण और परिणाम में सम्बन्ध नहीं देखते हैं तो वह विज्ञान के अंतर्गत नहीं आएगा। इसी कारण इतिहास के नए अर्थ उद्‌घाटित होते हैं और पुराने अनुभव तथा नए ज्ञान की रोशनी में भविष्य का मार्ग प्रशस्त होता है।

नौ देशों में धर्म खत्म होने के कगार पर

न्यूयार्क : दुनिया के नौ देशों में धर्म खत्म होने के कगार पर हैं एक स्टडी में यह दावा किया गया हैं सटडी में पाया गया कि इन देशों में धर्म से 'मोहभंग' होने वालों की तादाद बेहद तेजी से बढ़ रही है। ये देश हैं, ऑस्ट्रेलिया, ऑस्ट्रिया, कनाडा, चेक रिपब्लिक, फिनलैंड, आयरलैंड, नीदरलैंड्स, न्यूजीलैंड और स्विट्जरलैंड।

अमेरिका के डैलस में अमेरिकन फिजिकल सोसायटी की बैठक में रिसर्च के इन नतीजों के बारे में बताया गया है। स्टडी इशारा करती है कि धर्म इन नौ देशों मे ं समाप्त होने के कगार पर पहुंच चुका है।

रिसर्च टीम ने लोगों की राय और सामाजिक वजहों को जानने के लिए मैथमेटिकल गॉडर का इस्तेमाल किया और इन देशों के करीब सौ पुराने जनगणना के आंकड़ों को खंगाला।

रिसर्च कॉर्पोरेशन फॉर साईंस अडवांसमेंट के रिचर्ड वेगनर ने कहा कि आधुनिक सेक्युलर लोकतंत्रों में लोगों द्वारा किसी धर्म में खुद जुड़ने का ट्रेंड तेजी से बढ़ रहा है। उन्होंने बताया कि नीदरलैंड्स में ऐसे 40 फीसदी लोग पाए गए, जबकि चेक रिपब्लिक में यह सबसे ज्यादा 60 फीसदी था।

गज़ल

हिन्दू या मुस्लिम के अहसासात को मत छेड़िये
अपनी कुर्सी के लिये जज़बात को मत छेड़िये
हम में कोई हूण कोई शक कोई मंगोल है
दफ़्न है जो बात जब उस बात को मत छेड़िये
गलतियां बाबर की थीं, जुम्मन का घर फिर क्यों जले
ऐसे नाजुक वक्त में हालात को मत छेड़िये
हैं कहां हिटलर हलाकू जार या चंगेज खां
मिट गये सब, कौम की औकात को मत छेड़िये
छेड़िये इक जंग मिलजुलकर गरीबी के खिलाफ
दोस्त मेरे मजहबी नग्मात को मत छेड़िये

--अदब गोंडवी

पिछले अंक का शेष...

देवता-गण

कर्नल इंगलसोल

जिस विज्ञान के द्वारा वे एक संभव तथा अज्ञेय चेतन-शक्ति के अस्तित्व का प्रतिपादन करते हैं वह दर्शन अथवा धर्म कहलाता है। दैववादी लोग स्वीकार करते हैं कि जहां तक प्रकृति की बात है, उससे प्रकृति से परे किसी शक्ति का अस्तित्व असिद्ध ही होता है; क्योंकि प्रकृति में कारणों की अनंत श्रृंखला के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, मशीनगत मजबूरी के अतिरिक्त और कुछ नहीं। इसलिए वे प्रकृति से ऊपर की शक्ति का प्रतिपादन करने के लिए मन अथवा चेतना की बात करते हैं। कठिनाई यह है कि मन अथवा चेतना में भी हमें कारणों की यही अनंत श्रृंखला दिखाई देती है; वही मशीनगत मजबूरी। हर विचार का कोई न कोई पर्याप्त कारण रहा ही होगा। प्रत्येक उद्देश्य, प्रत्येक इच्छा, प्रत्येक भय, प्रत्येक आशा और प्रत्येक स्वप्न की अवश्यंभावी उत्पत्ति हुई ही होगी। आदमी के मस्तिष्क में 'कुदरत' अथवा आकस्मिक घटना के लिए कोई जगह नहीं। ग्रहों की 'गति' जिस प्रकार निश्चित नियमों का अनुसरण करती है, उसी प्रकार विचारों की 'गति' भी। एक कविता भी प्राकृतिक शक्ति की उपज है, वैसे ही जैसे कोई पर्वत अथवा समुद्र। यदि आप मनुष्य के दिमाग में किसी ऐसे विचार की खोज करेंगे, जिसका कोई कारण न हो तो आप अपने प्रयत्न में विफल होंगे। प्रत्येक मानसिक क्रिया कुछ निश्चित घटनाओं अथवा प्रयत्नों का अवश्यंभावी परिणाम होती है। भौतिक प्रक्रिया की अपेक्षा मानसिक प्रक्रिया बहुत सुलझी हुई रहती है और इसलिए बहुत रहस्यमय। क्योंकि वह रहस्यमय होती है, इसलिए लोग उसे ईश्वर के अस्तित्व का श्रेष्ठ प्रमाण मानते हैं। कोई भी, जो सरल है, जो ज्ञात है, जो समझ में आता है, उसकी ओर देखकर ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता, किन्तु जो उलझा हुआ है, जो अज्ञात है, जो अज्ञेय है, उसकी ओर देखकर। हमारे अज्ञान का नाम 'परमात्मा' है, जो हम जानते हैं वही 'विज्ञान' है।

जब हम एक बार सिद्धांत को छोड़ देते हैं कि किसी अनंत शक्ति ने 'प्रकृति' और 'गति' को जन्म दिया और उनका संचालन करने के लिए कुछ नियमों की रचना की, तो 'नियामक' का विचार अपने-आप ही जाता रहता है। तब जो सच्चा पुरोहित है, वह किसी झूठमूठ के ईश्वर का प्रतिनिधि नहीं रहता, किन्तु वह 'प्रकृति' का व्याख्याता बन जाता है।

किन्तु, ईश्वरवादी का कहना है, 'तुम प्रत्येक बात की व्याख्या नहीं कर सकते, तुम प्रत्येक बात समझा नहीं सकते और जिसकी तुम व्याख्या नहीं कर सकते, जिसे तुम समझ नहीं सकते, वही मेरा ईश्वर है।'

हम प्रत्येक दिन अधिकाधिक की व्याख्या करते जा रहे हैं। हम प्रत्येक दिन अधिकाधिक समझते जा रहे हैं। इसका मतलब हुआ कि परमात्मा प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है।

इससे धर्मवादी हतोत्साह ही होगा। उसका आग्रह है कि केवल मूलकारण ही बिना किसी कारण के अस्तित्व में आ सकता है और वह अकारण कारण ही ईश्वर है।

हमारा निवेदन है कि प्रत्येक 'कारण' से 'कार्य' की उत्पत्ति होनी ही चाहिए। यदि कोई 'कारण' किसी 'कार्य' को उत्पन्न नहीं करता, तो वह काम ही नहीं। हर कार्य को फिर 'कारण' बनना ही होगा। इसलिए 'प्रकृति' में कभी कोई 'अंतिम कारण' हो ही नहीं सकता, क्योंकि वह तथाकथित 'अंतिम

कारण' भी किसी न किसी कार्य को उत्पन्न करेगा ही और फिर वह कार्य भी अवश्यमेव कारण बनेगा ही। इन सिद्धांतों का प्रतिरूप भी सत्य होना चाहिए। हर कार्य कभी न कभी एक कारण रहा होगा और हर कारण एक कार्य। इसलिए कभी कोई प्रथम कारण हो ही नहीं सकता। अंतिम कार्य की तरह से ही प्रथम कारण का होना असंभव बात है।

विश्व से परे कहीं कुछ नहीं है और विश्व के भीतर प्रकृति से बढ़कर न कुछ है और न कुछ हो ही सकता है।

ज्यों ही ये महान सत्य समझ में आ जाते हैं और स्वीकार हो जाते हैं, तो फिर किसी सामान्य अथवा विशेष भगवान में विश्वास करना असंभव हो जाता है। उसी क्षण से आदमी किसी काल्पनिक भगवा को प्रसन्न करने के प्रयत्नों से विरत होकर अपना सारा समय और शक्ति इस संसार की बातों में लगाने लग जाता है। वह प्रार्थना के द्वारा किसी इच्छा की पूर्ति की आशा छोड़ देता है। एक बड़ी हद तक भविष्य के साम्राज्य में अनशिचितता का अंतर्ध्यान हो जाता है और मनुष्य प्रकृति पर एक के बाद एक दूसरी विजय से उत्साहित होकर एक ऐसी महत्ता को प्राप्त कर लेता है कि जिसे मिथ्या-विश्वास के शिष्यों ने कभी प्राप्त नहीं किया।

मानव जाति की योजनाओं में कोई सर्वव्यापी कभी किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित नहीं कर सकेगा। अब कोई भी, इस बात पर कभी विश्वास नहीं करेगा कि किसी परम्परा द्वारा जातियों और पक्षपातों से मुक्त विज्ञान अपने क्षेत्र में सर्वोपरि स्थान ग्रहण करेगा। मनुष्य की बुद्धि उन्मुक्त होकर नई-नई खोज करेगी और अपने परिणामों की घोषणा करने में सर्वथा निर्भय होगी।

यदि हम यह स्वीकार कर लें कि किसी अनंत शक्ति का व्यक्तियों और जातियों के भाग्य-निर्माण में हाथ है, तो सारा इतिहास एक अत्यंत निर्दय और रक्तपूर्ण नाटक का रूप धारण कर लेता है। युग के बाद युग-प्रत्येक युग में शक्तिशाली ने दुर्बल को अपने पांव तले रौंधा है, धूर्तों और निर्दय मनुष्यों ने सरल अथवा अबोध आदमियों को अपना गुलाम बनाया है और मानव जाति के इतिहास में कभी किसी परमात्मा ने पद-दलितों की सहायता नहीं की है।

आदमी को अब किसी भगवान से आशा करना छोड़ देना चाहिए। अब उसे यह जान लेना चाहिए कि भगवान के न कान हैं, जिनसे वह सुन सके और न उसके हाथ ही हैं, जिनसे वह किसी की सहायता कर सके। वर्तमान अतीत की अवश्यंभावी उपज है। अकस्मात न कभी कुछ हुआ और न हो ही सकता है।

यदि संसार की बुराइयां नष्ट होंगी तो उन्हें आदमी ही नष्ट करेगा। यदि दास मुकत होंगे तो उन्हें आदमी ही मुक्त करेगा। यदि नवीन सत्यों का आविष्कार होगा, तो आदमी के द्वारा ही होगा। यदि नंगों को वस्त्र मिलेंगे, यदि भूखों को भोजन मिलेगा, यदि अन्याय के स्थान पर न्याय होगा, यदि मजदूर को उसकी उचित मजदूरी मिलेगी, यदि मिथ्या-विश्वासों से मुक्ति मिलेगी, यदि असहायों की रक्षा होगी और यदि अपने सत्य की जय होगी, तो यह सब आदमी का ही काम होगा। भविष्य की सारी विजयों का श्रेय आदमी को और केवल आदमी को रहेगा।

जहां तक हम देख सकते हैं, प्रकृति बिना किसी राग-द्वेष के, बिना किसी उद्देश्य के निरंतर रचती रहती है, परिवर्तन करती रहती है और फिर-फिर परिवर्तन करती रहती है। वह न रोती, न ही प्रसन्न होती है। वह बिना किसी विशेष कारण के आदमी को अस्तित्व में लाती है और बिना किसी पछतावे के उसे मिटा देती है। उसके लिए उपकारी और अपकारी में कोई भेद नहीं। विष और भोजन, दुख और सुख, जीवन और मृत्यु, हास्य और रुदन-सब उसके लिए समान हैं। वह न दयालु है और न निर्दयी। वह प्रसन्न नहीं होती, आंसुओं से पिंघलती नहीं। प्रकृति में केवल मनुष्य को ही 'सत्य' 'शिव' तथा 'सुंदर' का बोध होता है। जहां तक हम जानते हैं आदमी ही सर्वश्रेष्ठ चेतन शक्ति है।

इतना सब होने पर भी आदमी अभी तक यह विश्वास करता चला आ रहा है कि प्रकृति से परे और उससे स्वतंत्र कोई शक्ति हैं। वह पूजा, पाठ, प्रार्थना और यज्ञों में उसकी सहायता प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है। उसकी शक्ति का

सर्वश्रेष्ठ अंश इसी भूत की सेवा में नष्ट हो गया है। जादू-टोने की सारी भयानक बातें इसी एक विश्वास का परिणाम हैं कि प्रकृति से परे कोई अत्यंत नीच स्वभाव का महान प्राणी है, जो प्राकृतिक नियमों से सर्वथा मुक्त है। इसी प्रकार सारे धार्मिक मिथ्या-विश्वास का आधार भी दो शक्तियों के अस्तित्व में विश्वास रहा है-एक बुरी और दूसरी अच्छी, जो जब चाहें, तब संसार में इच्छानुसार परिवर्तन कर सकती है। ध र्म का इतिहास इन दोनों शक्तियों में से एक को प्रसन्न करने और दूसरी के प्रकोप से बच निकलने के मानवी प्रयत्नों के इतिहास के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। दोनों शक्तियों ने मानव हृदय में घोर भय-संचार करने के अतिरिक्त और किया भी कुछ नहीं। शैतान की विकट हंसी और परमात्मा का प्रकोप समानरूप से भयानक रहे हैं।

आदमी को अपने ऊपर विश्वास करना सीखना चाहिए। धर्म ग्रंथों के पाठ उस कड़कड़ाती सर्दी से न बचा सकेंगे। घर, अग्नि और वस्त्र ही उसकी रक्षा कर सकेंगे। अकाल से बचने के लिए लाखों धर्मोपदेशों की अपेक्षा एक हल अधिक उपयोगी है। संसार के आरंभ से जितनी प्रार्थनाएं की गई हैं, वे सब उतने रोगों को दूर न कर सकेंगी, जितने रोग किसी एक सामान्य पेटेण्ट दवा से दूर हो सकते हैं।

मनुष्य के विचार, यदि उनका कुछ भी वास्तविक मूल्य है, तो उन्हें स्वतंत्र होना चाहिए। जहां भय होता है, वहां दिमाग जड़ हो जाता है। वहां बहादुरी से किसी भी समस्या को स्वयं हल न कर जैसा कोई कहता है, वैसा कांपते-कांपते स्वीकार कर लेता है। जब संसार के अधिकांश मनुष्य किसी छोटे-मोटे राजा के सन्मुख भी जमीन पर नाक रगड़ने के लिए तैयार रहते हैं, तो किसी काल्पनिक परमात्मा के सामने उनकी क्या गति होगी? ऐसी परिस्थितियों में उनके विचार किस मूल्य के होंगे?

जातियों के पतन और उत्थान की व्याख्या यह कहकर करने का कि 'यह परमात्मा की मर्जी है' कोई अर्थ नहीं। इस तरह की व्याख्या से 'अविद्या' और 'विद्या' में कोई अंतर नहीं रह जाता और किसी भी चीज की व्याख्या का कुछ प्रयोजन नहीं रह जाता।

क्या ईश्वरवादी यह कह सकेगा कि विज्ञान का वास्तविक प्रयोजन यह निश्चय करना है कि परमात्मा क्यों और कैसे काम करता है? इस दृष्टिकोण से तो विज्ञान का अर्थ किसी लाल-बुझक्कड़ कानून की खोज करना मात्र हो जाएगा।

दार्शनिक दृष्टिकोण से विज्ञान जीवन के नियमों का ज्ञान है, प्रसन्नता की शर्तों का ज्ञान है, हमारी परिस्थिति और हमारे संबंधों का ज्ञान है।

धुंधले अतीत से मानव ने कल्पनातीत दुख भोगे हैं। अधिकांश कष्ट कमजोरी को सहन करना पड़ा है और करना पड़ा है भोले-भाले लोगों को। स्त्रियों के साथ विषैले जंतुओं का-सा व्यवहार हुआ है और बच्चों को विषैले कीड़ों की भांति पैरों तले रौंधा गया है। छोटे-छोटे बच्चों तक की 'बलि' चढ़ाई गई है। छोटी-छोटी बच्चियों को सांपों को सौंप दिया गया है। जातियों की जातियों को शताब्दियों तक दास बने रहना पड़ा है और यह सब हर जगह और इतना अधिक हुआ है कि वाणी व्यक्त नहीं कर सकती। इस काल में दुखियों ने 'प्रार्थनाएं' की हैं, अकाल पीड़ितों ने 'याचनाएं' की हैं, किन्तु 'दैव' हमेशा बहरा और अंधा ही सिद्ध हुआ है।

आखिर देव आदमी के किस काम आए हैं?

यह कहना कि किसी परमात्मा ने दुनिया को बनाया, कुछ निश्चित नियम स्थिर किए और तब दूसरे विषयों की ओर ध्यान देने लगा। उसने अपने बच्चों को कमजोर, अज्ञानी, असहाय रहने दिया और अकेले ही जीवन संग्राम में जूझने के लिए छोड़ दिया, कोई उत्तर नहीं हुआ। यह घोषणा करने से कोई बात नहीं बनती कि यह परमात्मा किसी दूसरे संसार में अपनी प्रजा के कुछ लोगों को अथवा सभी को सुखी बनाएगा। हमें इस बात का क्या अधिकार है कि हम एक सर्वज्ञ, सर्वहिरत, सर्वशक्तिमान परमात्मा से यह आशा करें कि उसने जो कुछ अभी तक किया है अथवा कर रहा है, भविष्य में वह उससे कुछ अच्छा कर सकेगा? संसार असम्पूर्णताओं से परिपूर्ण है। यदि इसे एक अनंत शक्तिशाली ईश्वर ने बनाया है, तो हम किस आधार पर यह कहें कि वह इस संसार को जैसा यह है भविष्य में इससे अधिक

सम्पूर्ण बना देगा? यदि वह अनंत 'पिता' अपने पुत्रों को अभी अज्ञान और दरिद्रता की अवस्था में रहने देता है, तो इसका क्या प्रमाण है कि वह कभी उनकी दशा में कुछ सुधार करेगा? क्या भविष्य में परमात्मा अधिक शक्तिशाली हो जाएगा? क्या वह अधिक दयावान हो जाएगा? क्या अपनी दरिद्र संतान के लिए उसका प्रेम बढ़ जाएगा? क्या जो अनंत ज्ञानी है, जो अनंत शक्तिशाली है तथा अनंत करुणामय है, उसके आचरण में भी कुछ परिवर्तन हो सकता है? क्या 'अनंत' में भी किसी प्रकार के 'सुधार' की गुंजाइश है?

धार्मिक लोगों का कहना है कि यह संसार एक प्रकार का स्कूल है और जिन दुखों से हम घिरे हुए हैं, वे हमारी आत्माओं के विकास के लिए है। कष्ट पाने से ही हम पवित्र, शक्तिशाली, सदाचारी और महान बन सकते हैं।

थोड़ी देर के लिए मान लें कि यह ठीक है, तो ऐसे लोगों का जो बचपन में ही मर जाते हैं, क्या होगा? इस दर्शन के अनुसार छोटे बच्चों की आत्माओं का तो कभी विकास नहीं हो सकता? वे अभागे दुख दर्द न भोग सकें और इसलिए उनका विकास न हो सका और उसके परिणामस्वरूप अब उन्हें अनंत काल तक अविकसित मानसिक अवस्था में ही रहना पड़ेगा। यदि इस विषय में धार्मिक लोगों का कथन ही ठीक है तो सुखी लोगों से बढ़कर कोई अभागा नहीं। जो दुखी है, दरिद्री है, वे ही हमारे ईर्ष्या के पात्र होने चाहिएं। यदि इस जीवन में मानव के विकास के लिए दुखी रहना आवश्यक है, तो स्वग के सुखों में आत्मा का विकास कैसे हो सकता है।

जब से घड़ी का आविष्कार हुआ है, तब से कुछ लोग ऐसा समझने लगे हैं कि उनके 'रचना' के तर्क का उत्तर दिया ही नहीं जा सकता। धार्मिक संप्रदायों का कथन है कि यह संसार और जो कुछ इसमें हम देखते हैं, लगभग उसी रूप में बनाया गया था, जैसा हमें वह आज दिखाई देता है। घास, फूल, वृक्ष, पशु (आदमियों को लेकर) सभी विशिष्ट रचनाएं हैं। उनका परस्पर कोई संबंध नहीं है।

अति रूढ़िवादी भी तो यह स्वीकार करेंगे कि कुछ भूमि समुद्र के अंतर्गत चली गई है, कुछ भूमि को समुद्र ने भी अपने में समाहित कर लिया है और कुछ पर्वत सृष्टि रचना के आरंभिक काल की अपेक्षा कुछ नीचे जा सकते हैं। क्रमिक विकास का सिद्धांत हमारे पूर्वजों को अज्ञात था। 'विकास' की कल्पना उन्हें सूझी ही नहीं। हमारे पूर्वजों ने संसार में जिस-जिस चीज का जो स्थान है, उसे आदिकाल से वैसा ही माना। उन्हें लगा कि देव ने मानो पृथ्वी की अभी-अभी रचना की है। उन्हें अनंत वर्षों के शनैःशनै विकासों की कुछ जानकारी न थी। उनकी मान्यता थी कि वह असंख्य प्रकार की वनस्पति और पशु जगत आरंभ से ही ऐसा ही चला आया है।

क्या बनाई गई चीजों में जो विकास दिखाई देता है, उससे सिद्ध नहीं होता कि उनके रचयिता में भी विकास हो रहा है?

क्या एक सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्वभूतहित-रत 'परमात्मा' मनुष्य की उत्पत्ति करने जाकर सर्वप्रथम जीवन के तुच्छतम रूपों की रचना करेगा और इतने धीरे-धीरे कि किसी को पता तक न लग सके? अपनी रचना के गंवारू-आरंभ में, वह मनुष्य के रचना होने तक विकास करता रहेगा। क्या असंख्य युग केवल ऐसी बेढंगी शक्लों के निर्माण में नष्ट कर दिए जाएंगे? जिनका आगे कोई उपयोग नहीं? क्या आदमी की बुद्धि को इस बात में विवेक की गंध भी आ सकती है कि सारी पृथ्वी को रेंगने वाले भयानक जंतुओं से ढंक दिया जाए, जो केवल दूसरों की पीड़ा पर ही जीवित रहते हैं? क्या हम इसमें कुछ भी औचित्य देख सकते हैं कि पृथ्वी की रचना ऐसे ढंग से की जाए कि उसके एक बहुत ही थोड़े से हिस्से पर मनुष्य जैसा समझदार प्राणी पैदा हो सके? कौन है जो ऐसे संसार के रचयिता को 'दयालु' कह सके, जिसमें प्रत्येक जीव किसी न किसी दूसरे जीव को खा रहा है, अर्थात् प्रत्येक मुंह एक कसाई-खाना है और प्रत्येक पेट एक कब्र? क्या इस सर्वव्यापक और अनंत कसाईखाने में कहीं भी 'अनंत-ज्ञान' और 'प्रेम' ढूंढा जा सकता है?

लेखक की पुस्तक 'स्वतंत्र चिंतन' में से

**

हंसराज रहबर

□ राम कुमार कृषक
09868935366

मैं रवायत का पाबंद नहीं हो सकता
मेरी तहज़ीब अगर ख़ाम है तो ख़ाम सही
जिनके पिंदार के बुत तोड़ खुश होता हूं
उनकी दुनिया में बदनाम हूं, बदनाम सही

ये पंक्तियां हंसराज रहबर की एक नज़म से हैं, जिसमें वे अपनी अलग व्यवहारिक सैद्धांतिक के बारे में कह रहे हैं। रवायत कोई भी हो, उसको चुनौती देते हुए आगे बढ़ने का संकप और विश्वास ही हमें मानवीय विकास के अगले पड़ावों तक ले जाता है। रहबर का आत्मविश्वास यहां उस अहंकार के विरुद्ध मोर्चे पर है, जो बुतों की शक्ल धारण कर चुका है। लोग उन्हें अपरिपक्व और असंस्कृत कहें तो कहें।

उर्दू और हिन्दी साहित्य समाज में समान रूप से समादृत हंसराज रहबर का जन्म 9 मार्च, 1913 में अविभाजित पंजाब की पटियाला रियासत के हरियाऊ संगवां नामक गांव में हुआ था और निधन 23 जुलाई, 1994 के दिन दिल्ली में हुआ। साहित्य में उनकी ख्याति कथाकार, उपन्यासकार, समालोचक और शायर के रूप में तो है ही, लेकिन एक मार्क्सवादी चिंतक और भगत सिंह-विचारधारा से प्रेरित संस्कृतिकर्मी के नाते भी उन्हें जाना जाता है। भगत सिंह को वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद के भारतीय प्रतीक पुरुष की तरह देखते हैं और इस बात की हिमायत करते हैं कि 'सिर्फ मार्क्सवाद-लेनिनवाद और माओ-त्से-तुंग विचारधारा पढ़ लेने से जो एकपक्षीय समझ बनती है, उससे आदमी कठमुला और रूढ़िवादी बन जाता है।

हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी में (मौलिक और अनुदित) रहबर की करीब 70 पुस्तकें प्रकाशित हैं। इनमें से अगर उनकी दो दर्जन कथाकृतियों को अलग भी रखा जाए तो 'प्रेमचंद : जीवन, कला और कृतित्व', 'प्रगतिवादः पुनर्मूल्यांकन', 'योद्धा सन्यासी विवेकानन्द',ः 'तिलक से आज तक', 'भगतसिंहः एक जीवनी' तथा 'नेहरू बेनकाब' 'ग़ालि ब बेनकाब', 'गॉधी बेनकाब' के अतिरिक्त आत्मकथा 'मेरे सात जनम' के चारों खंड उनकी वैचारिक प्रतिबद्धता, मौलिकता और लेखकीय साहसिकता का जीवन उदाहरण है। सुधीर विद्यार्थी के शब्दों में, 'रहबर कहा करते थे कि अभिव्यक्ति की स्वाधीनता लेखक को कोई देता नहीं; अपनी सूझबूझ, साहस और त्याग के द्वारा खुद लेनी पड़ती है। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो वह शब्दों का बाजीगर है जो सामने खड़ी भीड़ का मनोरंजन कर रहा है। रहबर सही अर्थो में एक जन प्रतिबद्ध युद्धरत लेखक थे और कलम उनके लिए हथियार थी।'' (एक जनून था रहबर, पृ.4)

'मेरे सात जनम' में दर्ज रहबर का सातवां जन्म भगतसिंह-विचारधारा के प्रति उनकी सक्रिय प्रतिबद्धता का अंतिम सोपान है। इसके लिए उन्होंने 'भगतसिंह-विचारमंच' की स्थापना की, जिसके संस्थापक सदस्यों में से इन पंक्तियों का लेखक भी था। इसके अंतर्गत वे महानगरों से लेकर कस्बों तक 'भगत सिंह लाइब्रेरी' नाम एक श्रृंखला का निर्माण करना चाहते थे, ताकि उन्हें वाम स्टडी सर्किल की तरह चलाया जाये और हमारी नई पीढ़ी भगतसिंह के विचारों के महत्त्व को समझ सके।

लेकिन भगत सिंह तक पहुँचने के लिए रहबर ने कोई छलांग नहीं लागाई, बल्कि वे अपने इतिहास और सामाजिक संस्कृति का यथार्थ विश्लेषण करते हुए यहां पहुंचे। माओं का कथन है कि अगर कम्युनिस्ट राष्ट्रवादी और देशभक्त नहीं, तो वह कम्युनिस्ट नहीं । रहबर इस विचार से पूरी तरह सहमत थे और अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारावाद के संदर्भ में कहते थे कि अगर हम राष्ट्रीय नहीं हैं, तो अंतर्राष्ट्रीय

कैसे हो सकते हैं? यही कारण है कि भारत के संदर्भ में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के राष्ट्रीय रूप का नाम ही भगतसिंह विचारधारा है। यही कारण है कि मार्क्सवादी होकर भी वे तिलक और विवेकानंद का जनवादी मूल्यांकन करते हुए 'बोले सो निहाल' जैसे उपन्यास की रचना करते हैं। इस उपन्यास में उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की इस मिथ्या धारणा का खंडन किया है कि हिन्दुस्तानियों में प्रतिरोध और शासन करने की क्षमता नहीं है और इसीलिए वे दूसरों से शासित होते रहे है।

रहबर साहब किसी अदृश्य सत्ता में नहीं, बल्कि दृश्यमान प्रकृति में विश्वास रखते हैं। मार्क्स ने कहा था कि हेगेल का दर्शन सिर के बल खड़ा है, उसे पांव के बल पर खड़ा करने की जरूरत है। यानी समाज विचार का नहीं, बल्कि विचार समाज का प्रतिबिंब है। इसी सोच के चलते मार्क्स ने हेगेल का द्वंद्वात्मक आदर्शवाद से आगे बढ़कर भौतिकवाद की थ्योरी दी, क्योंकि मनुष्य ने किसी ईश्वरीय विधान के कारण नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ संघर्ष के चलते प्रगति की है। 'योद्धा सन्यासी विवेकानंद' में रहबर कहते हैं कि 'द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार साहित्य', दर्शन तथा राजनीति-किसी भी क्षेत्र में सही समझ गलत समझ के साथ संघर्ष में विकसित होती है।' इसी सिद्धांत को वे अपने वैचारिक विकास के साथ जोड़ते हैं।

वे सनातनी और आर्यसमाजी पृष्ठभूमि से होते हुए मार्क्सवाद तक आए थे। इसलिए 'अदम' को नकारने की बजाय वे उसके होने पर संदेह करते हैं। संदर्भतः उनका एक तज़िया शेर-

अदम की बात कुछ सुनते किसी से,
कोई तो लौटकर आता वहां से।

वैदिक धर्म-परम्परा में मौजूद अनेक मिथकीय चरित्रों को भी रहबर बिना किसी नकार भाव के आधुनिक मनुष्य से जोड़कर देखते हैं-

ज़हर शिव ने नहीं हमने भी पिया है 'रहबर'
यह तसलसुल तो तसलसुल ही रहेगा फिर भी

✳

मन का मन से मेल यही है प्रीत इसी को कहते हैं
राधा ने जब कृष्ण को देखा आंखों में सौ दीप जले

दरअसल, हंसराज रहबर को किसी एक दार्शनिक पृष्ठभूमि से जोड़ कर नहीं समझा जा सकता। उनका समूचा लेखन, धर्म, संस्कृति, इतिहास और राजनीति से गहरे संबद्ध है। वे कम्युनिस्ट थे और जनपक्षधर प्रतिबद्धता के साथ व्यापक अर्थो में राष्ट्रवादी। मनुष्य की बेहतरी, सामाजिक समानता और राष्ट्र के सम्मान-स्वाभिमान के लिए वे सदैव 'सरफरोशी की तमन्ना' से लबरेज रचनाकार हैं। उनके कुछ और जरूरी शे'र-

अहले-जुनूं की रस्म निभाने को जी करे
मक़लत को दौड़-दौड़ के जाने को जी करे
ये ख़ामियां ख़ुदा की गवारा नहीं हमें
इस ज़िंदगी को ढब से बनाने को जी करे

✳

लोग-बाग चुप क्यों हैं शहर की हवा क्या है
पूछते हैं हमसे आप आपसे छिपा क्या है
मैक़दे की वीरानी देखते नहीं बनती
जाम मुंह पे दे मारे रिंद की ख़ता क्या है

✳

नहीं रख सकता डर तूफ़ां का मुझको दूर मंज़िल से
ज़रा इक बार चलने दो मेरी कश्ती को साहिल से
पुरानी को मिटाकर मैं नई क़दरें बनाता हूं
वो नावाक़िफ समझते हैं मुझे आदाबे-महफ़िल से

पुरानी क़दरों को मिटाकर नई क़दरें और उस नए के प्रति गहरे आत्मविश्वास की यह अभिव्यक्ति उस वैज्ञानिक चिंतन और इतिहास की तर्कसंगत समझ से जुड़े बिना संभव नहीं थी, जिससे वे जुड़े। बदलाव की बुनियादी समाजार्थिकी के लिए संघर्षरत ताकतों का पक्ष-समर्थन उन्हें भगतसिंह की क्रांतिकारी वैचारिकी और उनके अधूरे संघर्ष का ही विस्तार लगता था। स्वामी विवेकानंद को उन्होंने योद्धा सन्यासी कहा तो भगत सिंह उनके लिए क्रांतिकारी योद्धा रहे। भारतीय क्रांति के संदर्भ में रहबर दोनों को जरूरी समझते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि हंसराज की नई क़दरों में हम इसे भी शामिल कर सकते हैं और स्वयं उन्हें भी एक योद्धा रचनाकार कहा जा सकता है।

(डा. रणजीत लिखित पुस्तक 'भारत के प्रख्याल नास्तिक' से साभार)

कैसे हासिल हो शांत और स्थिर मन

सुरजीत सिंह ढिल्लों (डा.)
0175-2214547

दार्शनिकों का विचार है कि 'मज़े जहान के अपनी नज़र में खाक नहीं।' मन को आनंद के साथ जोड़ कर रखने वाली अवस्था एक मंजिल है, जिस पर पहुंचने के यत्न तो सभी करते रहते हैं, परन्तु पहुंचता कोई भी नहीं। इसका कारण यह है कि यह प्राकृतिक रूप से संभव ही नहीं है। मस्तिष्क की रचना इस प्रकार की है कि इसकी विचार शक्ति मन किसी भी एक मूड के साथ लंबे समय तक नहीं निभा सकता। बदलते रहने वाले मूड, मन की विशेषता है।

मन की शांत अवस्था के बारे में चर्चा प्रत्येक महफिल में होती रहती है, विशेष तौर पर दार्शनिकों की महफिल में आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व महात्मा बुद्ध ने इस अवस्था के लिए निर्वाण के पद का प्रयोग किया था। इसे प्राप्त करने के लिए उन्होंने इच्छाओं, क्रोध, रूठना एवर्त घृणा के सम्पूर्ण तौर पर त्याग के ऊपर बल दिया था। निर्वाण 'अस्तित्व विहीनता' को दर्शाता है। अपनी प्राकृतिक प्रवृतियों का त्याग करने के अर्थ भी अपने अस्तित्व को भूल जाने के हैं। जीते-जागते इनका त्याग कर सकना हर एक के लिए संभव भी नहीं। हां, इन मनोवेगों के कटाक्ष को प्रबल इच्छा शक्ति के द्वारा नियंत्रित अवश्य किया जा सकता है।

हमारे चिंतन पर पश्चिमी विचारधारा की छाप बारे चर्चा तो प्रायः होती ही रही है, परन्तु जिस हद तक भारत में उपजे विचारों ने पश्चिमी चिंतन को प्रभावित किया है, उसके बारे में सुनने को बहुत ही कम मिल रहा है। जर्मन दार्शनिक शॉपनहार की सोच उपनिषदों एवं महात्मा बुद्ध के विचारों से बहुत ही प्रभावित हुई थी। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुए इस दार्शनिक का मन की शांत अवस्था के प्रसंग में अनुभव इसी प्रभाव में से उपजा था। उसका विश्वास था कि कोई व्यक्ति, चाहे वह देवता पुरुष ही क्यों न हो तथा कितना भी शांत अस्तित्व का प्रभाव दे, उसके मन के अंदर भावनाओं का संघर्ष एवं विचारों की उथल-पुथल सदैव जारी रहती है। यह संघर्ष मृत्यु तक कभी भी नहीं रुकता। इस कारण प्रत्येक व्यक्ति को जीवन भर बेचैनियों के साथ उलझते रहना पड़ता है। मन के अंदर आरजुओं के अंधड़ चलते ही रहते हैं, जिनका संतुष्ट होना संभव नहीं है। असंतुष्ट आरजुओं की वेदना के कारण भी मन का बेचैन रहना स्वाभाविक है।

दूसरी ओर संतुष्ट हुई आरजुओं का खुमार भी कुछ समय के उपरांत साथ छोड़ जाता है। सफल हो जाने के उपरांत कुछ समय के लिए तो मन उल्लासमय स्थिति में रहता है, परन्तु फिर यह खुमार भी अन्य नशों की भांति शिथिल पड़ता-पड़ता उतर जाता है। इस समय यद्यपि करने को और कुछ नहीं, जब उकताऊपन के प्रभाव के अधीन स्वादहीनता का शिकार हुआ रहता है।

उकताऊपन का एकमात्र इलाज है व्यस्त रहना। व्यस्तता भी यदि दिलचस्प, व्यक्ति के स्वभाव के अनुकूल एवं व्यक्तिगत शौक में से उपजा हो, तब व्यस्तता जीवन में रस भरती रहती है। अन्यथा इसके कारण भी मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। कोमल कला की उपासना, सत्य की खोज, संगीत की साधना एवं ज्ञान अथवा विज्ञान के साथ प्रेम ऐसी व्यस्तताएं हैं, जोकि मन की उल्लासमयी अवस्था को डोलने नहीं देते। मनमोहक आकर्षक आदर्श अथवा

किसी व्यक्ति के ध्यान में गुम हो जाना भी अंतर्रात्मा को सुखद अनुभूति प्रदान करता है। यह ही आध्यात्मकता की प्रतीक व्यवस्था है एवं यह ही सूफीयाना खुमार है, इश्क है।

मन की शांति प्राप्त करने के लिए शापनहार के सुझाए गए इस रास्ते पर चलने योग्य ऐसा कोई साधारण व्यक्ति हो ही नहीं सकता, जिसकी अपनी तरह की जिम्मेदारियां हैं तथा अपने परिवार का पालन पोषण जिसका सदा साथ निभते रहने वाला सिरदर्द है। फ्रांसीसी दार्शनिक जांपालसार्तर के विचार भी साधारण व्यक्ति की दिलजोई नहीं करते। 20वीं शताब्दी के इस महान दार्शनिक का कथन है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में केवल अपनी गतिविधियों की परछाई होता है। व्यक्ति के गिर्द खालीपन का ऐसा जाल बिछा रहता है, जिसको उसके अहं ने बुना होता है तथा जो उसे अन्य लोगों के साथ भली प्रकार से मिलने-जुलने नहीं देता।

यह अनुभव तो हमें होता है कि हम हैं, परन्तु हम वास्तव में क्या हैं, यह हम सही तौर पर नहीं जानते। अपने-आपको जो हम लगते हैं, वह हम नहीं होते। जो भी हम करते हैं, उसके लिए होते तो हम स्वयं उत्तरदायी हैं, परन्तु स्वयं से हुए अपराधों के लिए हम औरों को दोषी ठहराते हैं। ऐसा करके हम स्वयं को धोखा ही नहीं दे रहे होते, बल्कि अपनी योग्यता का निरादर भी कर रहे होते हैं। अपने अस्तित्व को अर्थ प्रदान करने के लिए हम विश्वास का चुनाव करते हैं और अपने इष्ट-देवताओं का स्मरण करने लग जाते हैं। ऐसे उद्देश्य से ऐसा करना भी अपनी तुच्छता एवं अपने अस्तित्व के ओछेपन को स्वीकार करना होता है। सार्तर के अनुसार शांत एवं स्थिर मन ऐसा सपना है, जिसे साकार करने के लिए हम सभी दिशाहीन भटक रहे हैं।

अमेरिकी दार्शनिक विलियम जेम्ज ने साधारण व्यक्ति की करूणामयी स्थिति को समझ कर इसकी भावनात्मक व्याख्या करते हुए जीवन-ढंग अपनाने के लिए सुझाव दिए हैं। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुए इस दार्शनिक का अनुभव था कि हमारी आवश्यकताएं एवं हमारे विश्वास परस्पर मिले-जुले रहते हैं, यद्यपि इनके स्वभाव एक-दूसरे से भिन्न हैं। यह दोनों हमारे जीवन का आधार हैं हम अपनी आवश्यकताओं के अनुकूल विश्वास चुन लेते हैं तथा चुने हुए विश्वासों में से फिर आवश्यकताएं उत्पन्न होने लगती हैं। जो-जो, जिस-जिस के काम आ रहा है, तो फिर उसके साथ निभ जाने से इतराज क्यों?

जेम्ज का तो यह विचार भी था कि उस सत्य के क्या अर्थ हैं, जिसका मानवीय स्वरूप संभव ही नहीं। वह यह भी मानता था कि ऐसे भ्रमों के साथ भ्रमाए रहना कदाचित जायज है जो हमारे काम आ रहे हैं तथा जिनका हमें लाभ मिल रहा है।

जहां पर शापनहार ने मानवीय अस्तित्व को भावनात्मक कशमकश के रूप में तथा सार्त्र ने आदर्शहीन खोखलेपन के तौर पर देखा, वहां पर जेम्ज ने इसको सिरे से उपयोगता के रंग में रंग दिया। ब्रिटिश दार्शनिक बरट्रंड रसल के चिंतन का आधार निरोल तर्क एवं वैज्ञानिक ढंग के साथ खोजे गए तथ्य थे। रसल का निधन 98 वर्ष की आयु में सन् 1970 में हुआ था। उसके अनुसार अनुकूल जीवन के तीन उद्देश्य हैं : स्नेहमयी इच्छा, ज्ञान की खोज एवं मानवता के लिए तड़प। आदर्शक सुगन्धि का प्रसार करते हुए यह उद्देश्य मानव के प्राकृतिक स्वभाव का विरोध भी नहीं करते। ये हमारी भावनाओं, हमारी सूझ एवं उत्सुकता को संतुष्ट करते हुए उद्देश्य हैं। ये हमारी नैतिकता का आधार भी बनाए जा सकें, तो हम अपने वर्तमान से कहीं अधिक सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। रसल यह भी मानता था कि सही व्यस्तताएं वे हैं, जो अपने-आप के लिए संतुष्टि का साधन तो बने ही, परन्तु जो औरों के लिए भी प्रसन्नता के रास्ते खोल सकें।

-हिन्दी अनुवाद- ***बलवंत सिंह लैक्चरार***

अंधविश्वास में घिरता देश

□ संजीव सैनी

टी.वी. चैनलों पर आज दर्शकों को अंध ाविश्वास परोसा जा रहा है। यह बहुत ही चिंता का विषय है। आने वाले समय में इन अंधविश्वास के भरे प्रसारणों का हमारे समाज पर क्या असर होगा? ये प्रसारण हमारी संतानों को बौद्धिक रूप में पंगू बना देंगे, इसका आंकलन हमारे विद्वानों, विवेकशील व प्रबुद्ध लोगों द्वारा किया जाना अभी बाकी है।

अंधविश्वास की धुंध बेशक कई शताब्दियों से छाई हुई है, लेकिन आजकल बहुत सारे टी.वी. चैनल इसे ओर भी सघन बनाने में लगे हुए हैं। अंध ाविश्वासों के प्रसार में बहुत अधिक तेजी आ गई है। पुराने लोग घरेलू स्तर की वस्तुओं से कुछ सीमित से कर्मकांड किया करते थे, परन्तु आजकल तो यह बहुत बड़ा कारोबार बन गया है। बहुत से टी.वी. चैनलों पर कथित साधू, बाबा, धर्मगुरु, तांत्रिक, ज्योतिषी, पुजारी व आचार्य इत्यादि पैसे के बलबूते चैनलों से समय खरीदकर लोगों की 'अगली दुनिया' संवारने का धंधा करते हैं। ये अपना जीवन इस दुनिया में सवांर कर हर प्रकार की सुख-सुविधाओं का केवल आनंद ही नहीं उठा रहे, बल्कि अरबों-खरबों रुपए की सम्पति के स्वामी भी बने बैठे हैं।

अनेक टी.वी. चैनलों पर बहुत घटिया किस्म की विज्ञापनबाजी प्रसारित होती है। जैसे सौतन से छुटकारा, कारोबार में वृद्धि, गृहकलेश, 10 दिन में विवाह, 5 दिन में विदेश का वीजा के कथित जादूई पैकेज सरेआम बेचे जा रहे हैं। इसके अलावा करामाती लॉकेट मालाएं, नग, मुंदरियां, रक्षा के ताबीज इत्यादि विभिन्न कम्पनियों द्वारा तैयार किए जा रहे हैं। भारतीय समाज का 'भाग्य चमकाने' वाले ये सामान धड़ल्ले से बिक रहे हैं। एक 'महापुरुष' ने तो अपने आशीर्वाद का रेट हजारों से लेकर लाखों रुपए तक तय कर रखा है।

ये लोग वी.आई.पीज आशीर्वाद भी देते हैं। बहुत से राजनीतिज्ञ इनसे महंगे आशीर्वाद लेने जाते हैं। एक बाबा जी जो तीसरी आंख से देखने का दावा करते हैं, के अनुसार बर्फी, समोसा, चाट, गोलगप्पे इत्यादि खाने या खाने के कारण दिव्य शक्तियां रुक जाती हैं।

हमारे लोगों को यह अवश्य सोचना चाहिए कि जिन देशों में इस प्रकार का आडम्बर कम होता है, वहां के लागे हमारी तुलना में कहीं अधिक बेहतर जीवन व्यतीत करते हैं, जबकि हमारा देश, जहां तांत्रिकों और पाखंडी बाबाओं की अधिकता है, वहां लोगों की जीवन स्थितियां दिन-ब-दिन बदतर होती जा रही हैं। हमारे देश में समाज में अंधविश्वास फैलाने और किसी के दुख-तकलीफ का करामाती ढंग से इलाज करने को कानूनी तौर पर अपराध माना गया है, लेकिन सरकारों को भी चाहिए कि वे लोगों की मानसिकता वैज्ञानिक एवं विवेकशील बनाने के प्रयत्न करें।

लेकिन हमारे टी.वी. चैनलों पर तो सरेआम कानून की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं और बड़े जोर-शोर से जनता को बौद्धिक कंगाली की ओर ध ाकेला जा रहा है। विचारणीय बात यह है कि टी.वी. चैनलों पर यह सारा कुछ देखने वाली हमारी संतानों में से क्या विवेकशील, विद्वान और वैज्ञानिक पैदा हो सकेंगे? हमारे समाज की स्थिति आज यह बन गई है कि यहां मजबूरीवश कट्टरपन बढ़ रहा है। लोगों एकजुटता की बजाए उन्हें मजहबी एवं साम्प्रदायिक आधार पर विभाजित किया जा रहा है, ताकि उनमें परस्पर टकराव पैदा किया जा सके। पाखंडी बाबाओं, तांत्रिकों और काले इल्म के विशेषज्ञों के पास जाकर अपना भविष्य तलाश करने का प्रयास करने वाले अंधविश्वासों का एक अच्छा-खासा वर्ग पैदा हो गया

है। इससे समाज में अंधकार और भी बढ़ रहा है।

देश की आबादी तेजी से बढ़ रही है, जिसके कारण बेरोजगारी भी विकराल रूप ग्रहण करती जा रही है। काम-धंधे और कमाई से खाली यह बेरोजगार इन पाखंडी लोगों के पास जाकर 'डूबते को निकले का सहारा' की उक्ति के अनुसार अपना भविष्य संवारने के लिए हाथ-पांव मार रहे हैं। अनेक प्रकार की समस्याओं में घिरे लोगों ने पाखंड की दुकान चलाने वलों को ही अपना इष्ट मान लिया जाता है। ये लोग अपने अनुयायियों की अंधश्रद्धा का अनुचित लाभ उठाते हुए मोटी कमाई करते हैं और ठाठ से जीते हैं, जबकि अपने सेवकों को संयम और संतोष से जीने का पाठ पढ़ाते हैं।

हमारे नेता कहते हैं कि हमारे देश के पास युवा शक्ति बहुत अधिक है लेकिन जब रोजगार के साधन नहीं मिलते तो ये युवा अपना वर्तमान और भविष्य पाखंडियों को समर्पित कर देते हैं और अंत में उनके हाथ सिवाए पछतावे के और कुछ भी नहीं लगता।

भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमारे राजा-महाराजाओं ने विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध कई अनेक निर्णायक युद्ध लड़े, लेकिन अंध ाविश्वासी होने के कारण वे पराजित हो गए। हर काम ग्रहों की चाल देखकर और ज्योतिषियों से पूछ कर करते थे। हमारे देश में अंधविश्वास का अंधेरा यदि इतना गहरा न होता तो शायद देश का इतिहास कुछ और ही होता।

इसके विपरीत जिन देशों ने रूढ़िवादी विचारों का परित्याग करके विवेकशीलता और वैज्ञानिक व उदारवादी चिंतन को अपनाया। वे प्रगति करते-करते हमसे बहुत आगे निकल गए। आज अनगिनत पीर बाबाओं, तांत्रिकों, मजारों इत्यादि की बहुलता होने के बावजूद हम लाखों रुपए खर्च करके प्रगति कर चुके इन्हीं देशों में जा बसने के लिए हर तरह के हथकंडे अपना रहे हैं। अंधविश्वास का यह चक्कर इतना खतरनाक है कि इससे समाज शताब्दियों पीछे चला जाता है।

आज टी.वी. चैनलों पर हमारे बच्चों को जो कुछ दिखाया जा रहा है। वह पहले की तुलना में 100 गुना इतना विवेकहीन बना देगा कि समाज में उच्च स्तर के डाक्टर, इंजीनियर, अध्यापक, वैज्ञानिक, वैचारिक व लेखक पैदा करने की क्षमता ही नहीं रह गई। हमारे अधिकतर टी.वी. चैनल कार्पोरेट घरानों द्वारा संचालित हैं, जोकि एक सोची-समझी नीति के अनुसार न केवल अपनी कमाई बढ़ाने, बल्कि अपने इस कारोबार का भविष्य सुरक्षित करने में लगे हुए हैं।

कुछ टी.वी. चैनल बेशक जनकल्याण, जनजागरण एवं रचनात्मक सोच वाले कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं, लेकिन अधिकतर चैनलों पर दर्शकों का जोर-शोर से अंधविश्वास परोसा जा रहा है। इसके साथ ही देश के युवा वर्ग को अश्लील डांस और भोग विलास की संस्कृति की दलदल में धंसने की प्रेरणा दी जा रही है। यदि सरकार ने इस तरह के कार्यक्रमों पर तुरंत रोक न लगाई, तो हमारा समाज जिस दलदल की ओर अग्रसर हो रहा है, उसमें से बाहर निकलने में हमें कई शताब्दियां लग जाएंगी।

❁ ❁

कुछ नहीं होता

☐ डा. रणजीत

नहीं होता
कुछ नहीं होता अभी भी
विचार-विमर्श से
बहस-मुबाहसे से
समझाने-बुझाने से
अनुनय-विनय से
औचित्य और न्याय के सारे तर्कों से
कुछ नहीं होता
पांच हज़ार साल के सारे सांस्कृतिक विकास के बाद भी जिसकी लाठी है, उसी के भैंस है।
गज़ब की वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के बाद भी आदमी का सबसे कारगर हथियार
अभी भी डण्डा ही है।
कितनी बुरी बात है
कि चांद पर पहुंच जाने के बाद भी आदमी
अभी डण्डे से ऊपर नहीं उठ पाया है।

किश्त -14

ब्रह्माण्ड यात्रा

धूमकेतुओं का घर

□ डा. अवतार सिंह ढींढसा
094634-89789

दोस्तो, कूपर-पट्टी के बौने ग्रहों की यात्रा के पश्चात् आओ देखें कुछ वे अंतरिक्षीय पिण्ड, जिन्होंने मानवता को सदैव भयभीत किया है। आदिकाल से मानव तारों से परिपूर्ण रातों को निहारता आया है। जीवन आवश्यकताओं, तल्ख तजुर्बों एवं रात्रि के भय ने उसकी चिंताओं में वृद्धि अवश्य की ही होगी। वास्तव में मानव स्वयं कभी भी किसी वस्तु अथवा घटना से भयभीत नहीं होता, परन्तु समाज के कुछ स्वयंभू 'स्याने' (बुद्धिमान) लोगों ने उसे डराकर अपना कोई न कोई उल्लू सीध ा करना होगा। इस प्रकार ही घटित हुआ हमारे अगले पड़ाव के अंतरिक्षीय पिण्डों के साथ। अतः मानव के लिए अपने कष्टों का कारण आकाशीय घटनाक्रमों को मानना स्वाभाविक ही था। स्वाभाविक इसलिए कि विज्ञान एवं कम्पयूटर के युग में से गुजर रहा आधुनिक मानव आज भी अपने दुखों का कारण आकाशीय घटनाक्रमों को ही मानता आ रहा है। वैज्ञानिक विचारधारा आज भी वह मुकाम हासिल नहीं कर सकी, जोकि होनी चाहिए थी। इसी भय में से ही प्रकृति को मनाने के उद्देश्य से मानव ने इन आकाशीय घटनाक्रमों की पूजा का संकल्प चित्रित किया होगा, जो आज भी जारी है। ऐसा लगता है कि मानव ने अन्य सभी ओर तो उन्नति की चीजों को अपना लिया है, परन्तु आधुनिक मनुष्य का प्रकृति को मनाने हेतु पूजा का संकल्प अभी भी जारी है।

आकाश में धूमकेतुओ से मानव आज भी उसी प्रकार डरता है। धूमकेतु क्या होते हैं, चलो आओ तनिक उनकी ओर भी चल कर देखें। कूपर पट्टी में घूमते बौने ग्रहों के पार वो देखो, छोटी एवं लंबी पूंछों वाले सैंकड़ों ही नहीं, बल्कि लाखों की संख्या में घूम रहे हैं।

हम अभी कूपर पट्टी में ही हैं, क्योंकि यह इतनी विशाल है कि यदि हमारा अंतरिक्ष यान एक सैकिंड में 12 किलोमीटर की दूरी तय करे तो भी हमें इसको पार करने में लगभग 400 वर्ष लग जाएंगे। इन्हे हिन्दी में धूमकेतु एवं अंग्रेजी भाषा में इनको Comet कहा जाता है। यह शब्द यूनानी भाषा में से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'केशों वाला'। 1000 शताब्दी ईसा पूर्व पहले चीन एवं कैलडिया (जिसे वर्तमान में इराक कहा जाता है) में इन धूमकेतुओं का वर्णन मिलता है।

साथियो, तुम्हारे इस प्रश्न का मुझे बहुत ख्याल है कि धूमकेतु कूपर पट्टी में घूमते हैं। फिर ये हमारी पृथ्वी के नज़दीक कैसे आ जाते हैं। इसका प्रथम कारण तो यह है कि कूपर पट्टी के पिण्डों के आपसी गुरुत्वाकर्षण के कारण किसी एक अंतरिक्षीय पिण्ड का पथ प्रभावित होकर बदल जाता है तथा यह सूर्य के निकट के ग्रह-पथ में पहुंच जाता है। दूसरा कारण...कि कई बार कूपर पट्टी पिण्डों को नेपचून, यूरेनस शनि अथवा जुपिटर का गुरुत्वाकर्षण इनको अपनी ओर खींचता है, जिसके परिणाम स्वरूप ये एक नया पथ अपना लेते हैं। एक थ्योरी के अनुसार शनि के बड़े उपग्रह 'टाईटन' को भी कूपर पट्टी पिण्ड ही माना गया है। यह पहले एक बौना ग्रह ही था, परन्तु शनि के गुरुत्वाकर्षण ने इसे अपने ही इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगा दिया। टाईटन वास्तव में बुध ग्रह से भी बड़ा है। यहां पर यह जरूर ध्यान देने योग्य बात है कि क्या ग्रह हम मानवों पर प्रभाव डालते हैं? दोस्तो, एक ग्रह उसके नजदीकी

पूर्ण ग्रह अथवा अंतरिक्षीय पिण्ड पर गुरुत्वाकर्षण के कारण प्रभाव डालते हैं, परन्तु शर्त यह है कि प्रभाव ग्रहण करने वाला ग्रह भी खरबों क्विंटल पुँज वाला हो, परन्तु एक औसत मनुष्य का वजन तो 100 किलोग्राम से भी कम ही होता है। अतः किसी भी मनुश्य, पशु अथवा पक्षी पर यह गुरुत्वाकर्षण शून्य के समान होता है। दूसरा कारण यह भी है कि हमारी पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बाहर के किसी भी ग्रह के गुरुत्वाकर्षण से कई गुना अधिक है।

दोस्तो, धूमकेतुओं की आयु का अनुमान भी लगाया जा सकता है, परन्तु ये तो सदैवे ऐसे ही रहेंगे, क्योंकि जब अंतरिक्षीय बादल से सूर्य एवं ग्रह बन गए, तो कूपर पट्टी में बचा-खुचा मलबा ही रह गया। यह आज भी इसी रूप में घूम रहा है जैसा कि यह 450 करोड़ वर्ष पूर्व था। यह भी माना जाता है कि जीवित वस्तुओं के लिए आवश्यक पदार्थ अर्थात् अणु, परमाणु ये धूमकेतु ही पृथ्वी पर ले कर आए। जीवित चीजों के लिए आवश्यक रासायनिक पदार्थ जैसे कि कार्बन, हाईड्रोजन, इनसे बने यौगिक एवं जल, यह सभी कुछ धूमकेतु ही पृथ्वी पर लेकर आए हैं, क्योंकि धूमकेतुओं में 50 प्रतिशत से अधिक पुंज जल ही होता है तथा 10-20 प्रतिशत कार्बन के यौगिक। फिर ये हमारे लिए खतरनाक कैसे हुए ? फैसला आपके हाथ...क्योंकि ज्योतिष ने तो शिक्षित लोगों से भी अपनी 'दान दक्षिणा' पूजा पाठ के बहाने से लेकर ही जानी है।

हमारा पुरातन भारतीय वैदिक खगोल विज्ञान धूमकेतुओं के बारे में अत्यंत हास्यास्पद बातें बयान करता है। अथर्ववेद में 'खतरनाक धूमकेतुओं' के बारे में कुछ जानकारी दी हुई है। इनको श्रेणीबद्ध भी किया गया है। धूमकेतु देखने में अत्यंत सुंदर एवं आकर्षक होते है, परन्तु मानव ने इनके साथ कुछ डर भी जोड़ रखे हैं। कहा जाता है कि धूमकेतु के उदय होने के कारण पृथ्वी पर अकाल पड़ेगा, बाढ़ आएगी, तबाही मच जाएगी तथा राजाओं की मृत्यु होगी। वराहमिहिर द्वारा लिखित 'बृहत-संहिता' में 33वां अध्याय 'मारने वाले धूमकेतुओं' की संख्या के साथ भरा पड़ा है। इसमें धूमकेतुओं के ज्योतिषीय प्रभावों के बारे में खूब जानकारी लिखी हुई है।

दोस्तो, ये धूमकेतु भी सूर्य के गिर्द चक्कर लगाने वाले अंतरिक्षीय पिण्ड ही हैं। इस कारण ये ग्रहों जैसे ही हैं। परन्तु 330 वर्ष ईसा पूर्व में यूनानी दार्शनिक अरस्तु ने अपनी पुस्तक 'मीटियोरोलोजी' में लिखा है कि धूमकेतु 'सूर्य के नीचे वाले' मंडल में सूर्य की भांति ही पृथ्वी के गिर्द चक्कर लगाते हैं। उसने कहा कि पृथ्वी के वायुमंडल में स्थित ऊंचाई पर ये 'शुष्क एवं गर्म मण्डल' में चक्कर लगा रहे हैं।

अरस्तु का विचार था कि ये पृथ्वी में से निकल कर सूर्य के निकट पहुंच जाते हैं। उसकी सोच थी कि शेष ब्रह्मांड तो 'पूर्ण रूप में स्थिर' है। इसलिए धूमकेतु ब्रह्मांड में परिवर्तन के कारण नहीं, बल्कि पृथ्वी के मौसम में परिवर्तन होने के कारण उत्पन्न होते हें 'मौसमी' होने के कारण ये कभी-कभी दिखाई देते हें। टॉल्मी ने एवं शेष विश्व ने भी एक हजार वर्ष तक अरस्तु को सही माना।

सन् 1267 ई. में 'थॉमस एकुइन्ज' एवं 'रोगर बेकन' ने अपनी पुस्तक 'ऑप्स टर्सियम' में कुछ शंकाएं उठाई, परन्तु धूमकेतुओं के दुष्प्रभावों को वे भी मानते हैं तथा 1600 ई. तक इनको अपशगुन के सूचक ही माना जाता रहा। सन् 1577 ई. में डेनमार्क के खगोल शास्त्री 'टाईको ब्राहे' ने सुबह एवं सायंकाल को इन तारों की स्थितियों एवं गतियों को नोट करके यह दर्शाया कि धूमकेतुओं का पृथ्वी के मौसम के साथ कोई संबंध नहीं है। बल्कि ये तो 'ब्रह्माण्डीय पिण्ड' है। 'विस्थापन-आभास' (Parallax) एक ऐसी विधि है, जिसके द्वारा पृथ्वी पर बैठे हुए ही ब्रह्माण्ड की वस्तुओं की स्थिति का पता लगाया जा सकता है। तात्पर्य यह कि निकट की वस्तु दूर की वस्तु की अपेक्षा अपनी स्थिति जल्दी बदलती है। 'टाईको ब्राहे' ने देखा कि चंद्रमा धूमकेतु की अपेक्षा शीघ्र स्थिति बदलता है, अर्थात् इसका विस्थापन धूमकेतु से अधिक है, इसलिए धूमकेतु...चंद्रमा से भी ऊंचे हैं। उसका अनुमान था

शेष पृष्ठ 26 पर

डा. कलबुर्गी : क्रूर धर्मान्धता की बलि-वेदी पर मानवता की बलि

☐ राज नारायण

कर्नाटक का सांस्कृतिक केंद्र धारवाड़ जिला। इसी जिले का एक नगर, कल्याणनगर। डा. (प्रोफेसर) मल्लेशप्पा एम. कलबुर्गी। इस नगर में स्थित अपने मकान में फोन पर बात करने में मशगूल 30 अगस्त के दिन प्रातःकाल 8.30 बजे के लगभग दरवाजे पर दस्तक होती है। पत्नी उमा देवी दरवाजा खोलती है। देखती है 25-26 साल का एक युवक सामने है। एक अन्य सामने मोटर-साइकिल के पास खड़ा है। पहला युवक डा. कलबुर्गी से मिलने की जिद्द करता है। पत्नी उन्हें बुलाकर रसोई में चली जाती है। डा. कलबुर्गी जैसे ही युवक के सामने आते हैं। वह उनके माथे पर बहुत करीब से दो गोलियां दाग कर मोटर साइकिल वाले युवक के साथ भाग जाता है। जमीन पर गिर पड़े लहुलूहान प्रो. कलबुर्गी को पहले एक प्राईवेट अस्पताल और फिर जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हें पहुंचने पर मृत पाया गया। कर्नाटक विश्वविद्यालय, हम्पी के पूर्व उपकुलपति, कन्नड़ साहित्य के प्राख्यात विद्वान, शोधकर्त्ता, वाचन साहित्य के विद्वान, प्रगतिशील चिंतक और नास्तिक प्रो. (डा.) मल्लेशप्पा, एम. कलबुर्गीकी इस जघन्य हत्या की खबर पूरे कर्नाटक और पूरे देश में आग की तरह फैल गई। शोक की लहर दौड़ गई। बेंगलूरू में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त एवं प्रसिद्ध अभिनेता गिरीश कर्नाड की अगवाई में कर्नाटक तथा अन्य प्रांतों के बुद्धिजीवियों, रंगकर्मियों, साहित्यकारों, पत्रकारों आदि के साथ विशाल संख्यक लोगों ने शोक समारोह आयोजित किया और इस जघन्य हत्या की भर्त्सना की। उनके पार्थिव शरीर को जिला अस्पताल में कालेज ग्राऊंड में एक विशाल मौन जुलूस निकाल कर ले जाया गया, जहां लोगों के दर्शनार्थ रखा गया। इस अवसर पर उनकी याद में अनेक स्कूल/कालेज स्वतः बंद कर दिए गए। लिंगायत समुदाय के विभिन्न संगठनों ने और बासवसेने के सदस्यों ने आस-पड़ौस के जिलों से काली पट्‌टी बांधी। हम्पी पहुंच कर उनके शव के चारों ओर घेरा बनाकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। अगले दिन यानी 31 अगस्त 2015 को उनके घर में आवश्यक परम्परागत कर्मकांड कराकर उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

देश के प्रमुख समाचार पत्रों, सोशल मीडिया ने इस धर्मान्ध हत्याकांड की घोर निंदा की। इलैक्ट्रोनिक मीडिया में सिर्फ एन.डी. टी.वी. न्यूज चैनल और विख्यात टी.वी. जर्नलिस्ट रवीश कुमार ने इस खबर को प्रसारित किया। बाकी टी.वी. न्यूज चैनल तो बहु-पति-व्रता, चमक-दमक-भरी और अपनी पुत्री की हत्या की दोषी इन्द्राणी मुखर्जिया एंड कम्पनी की ही खबर प्रत्येक क्षण प्रसारित करने में जुटे रहे। मानो कि सबसे बड़ी राष्ट्रीय समस्या और सर्वाधिक महत्व वाला समाचार वही हो! शर्मनाक और घृणावाद।

बहरहाल, पुलिस ने बजरंग दल के एक स्थानीय नेता भवित शेट्‌टी को उस पर पहले से ही दो शिकायतें दर्ज होने और उसके इस ट्वीट के आधार पर गिरफ्तार कर जांच शुरू कर दी है : 'तब यू.आर. अनन्तमूर्ति था और अब एम.एम कलबुर्गी। हिन्दुत्व का मज़ाक उड़ाओ और कुत्ते की मौत मरो और प्यारे के.एस. भगवान अगली बारी तुम्हारी ही है।' पुलिस ने हीला-हवाली करते हुए 3 सितम्बर को संदिग्ध अभियुक्तों का स्केच डा. कलबुर्गी की पत्नी उमा देवी के बयान के आधार पर सी.आई. डी. को सौंप दिया है और इसे सी.बी.आई को भी सौंपने का निश्चय किया है। बहरहाल, एक अन्य संदिग्ध व्यक्ति प्रसाद अट्‌टावर को भी हिरासत में ले लिया गया है, जो रामसेने का स्थानीय सक्रिय एवं मुखर सदस्य है। इस हत्याकांड से सम्बन्ध संदिग्ध व्यक्तियों से यह निश्चित हो गया है कि हत्या घोर दक्षिणपंथी हिन्दुत्ववादियों द्वारा की गई है और हत्या

भाड़े के कातिलों द्वारा कराई गई है। पुणे में 68 वर्षीय प्रसिद्ध मानवतावादी तथा अंधविश्वास एवं पाखंड के विरुद्ध संघर्ष करने वाले डा. नरेन्द्र अच्युत दाभोलकर की अगस्त 2013 में इसी तरह भाड़े के कातिलों द्वारा हत्या कराई गई थी। फिर साल 20 फरवरी 2015 के दिन कोल्हापुर में कम्युनिस्ट एवं नास्तिक चिंतक-लेखक गोविन्द पंसारे की जघन्य हत्या इसी तरह की थी।

कट्टर धर्मान्ध लोग और धर्म के ठेकेदार लोग तर्क, तथ्य और विज्ञान की तेज रोशनी को सहन नहीं कर पाते हैं। वे तथ्यपूर्ण एवं तर्कपूर्ण वाद-विवाद से दूर भागते हैं और अंधविश्वास तथा पाखंड के विरुद्ध आवाज उठाने वालों का सफाया कर देने के लिए इसी तरह के हत्या-अभियान चलाया करते हैं। आज दुनियाभर में तालिबानी, आइसिस, बोकोहरम, के.के.के., स्किनहेड जैसे फिरकापरस्त तथा नस्लवादी संगठन ऐसे ही आतंकवादी मानव-मेघ का खूनी कार्यक्रम चला रहे हैं। बजरंग दल जैसे कट्टर हिन्दुत्ववादी संगठन उनसे प्रेरणा ले रहे हैं। उन्हीं की थैली के चट्टे-बट्टे हैं, लेकिन वे भी आइसिस आदि की तरह ही यह भूल जाने की गलती कर रहे हैं कि इस तरह से किसी नरेन्द्र दाभोलकर, कलबुर्गी, पंसारे आदि की हत्या कर वे हजारों नरेन्द्र दाभोलकर पंसारे और डा. कलबुर्गी को ही जन्म दे देते हैं। किसी व्यक्ति विशेष की हत्या से उसके मानवीय कार्यों तथा विचारों की हत्या कतई नहीं हो जाती। इसलिए दाभोलकर, पंसारे, डा. कलबुर्गी अमर हैं, अमर रहेंगे। उनकी स्मृति में पूरे देश में अध्यापक दिवस 5 सितम्बर के दिन सायं 5 बजे विरोध-विक्षोभ दिवस मनाने का कार्यक्रम बुद्धिजीवियों की ओर से तय किया गया है।

डा. मल्लेशप्पा एम. कलबुर्गी का संक्षिप्त परिचय : 77 वर्षीय दिवंगत शहीद डा. कलबुर्गी का जन्म 28 नवम्बर 1938 के दिन कर्नाटक राज्य में बीजापुर जिले की सिण्डकी तहसील के यरमल नामक गांव में रूढ़िवादी लिंगायत परिवार में हुआ था। डा. कुलबर्गी अत्यंत कुशाग्र बुद्धि के थे। अपने गहन अध्ययनों और शोध के फलस्वरूप उन्हें यह जानने में देर नहीं लगी कि वर्ण व्यवस्था पर आधारित भारतीय समाज घोर विषमतावादी और अमानवीय है। कर्नाटक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और बद में उपकुलपति बने डा. कलबुर्गी ने विचारोत्तेजक लेख लिखने के साथ-साथ निचली जातियों के बीच सुधार के सामाजिक कार्य किए। वह पक्के नास्तिक बन गए थे। वह हिन्दू धर्म में पत्थर की निर्जीव मूर्तियों और खासकर शिवलिंग जैसी नरू मूर्तियों की पूजा के घोर विरोधी थे। इससे लिंगायत समुदाय सहित सारा कट्टर हिन्दुत्ववादी वर्ग उनके विरुद्ध हो गया था, लेकिन उनके विचारों का लोहा मानने वाले और प्रशंसक एवं समर्थक ज्यादा संख्या में थे। इससे दक्षिणपंथी कट्टर हिन्दू और भी क्षुब्ध हुए। वर्ष 1980 में जब उन्होंने पत्थरों की निर्जीव मूर्तियों की पूजा के विरोध में लेख लिखा, तो उनके अपने ही लिंगायत समुदाय के लोगों ने उनका उनके घर पर ही घेराव कर लिया था और मारने की भी धमकी दी थी। जब वर्ष 1984 में उन्होंने 12वीं सदी के समाज सुधारक संत चन्नवासवन्ना के भतीजे के जन्म के बारे में एक विवादास्पद लेख लिखा, तो लिंगायत समुदाय के लोगों ने उन्हें फिर जान से मार डालने की धमकी लिखकर जारी की थी।

पर, डा. कलबुर्गी बहुत ही निर्भीक व्यक्ति थे। जैसा कि लगभग हर नास्तिक होता है। उनके लगभग 400 विचारोत्तेजक शोध-लेख 'मार्ग' संकलन के रूप में प्रकाशित हुए और बहुत ही लोकप्रिय हुए। उन्हें 'मार्ग-4 शीर्षक-शोध-लेख संकलन पर वर्ष 2006 का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान कयिा गया। उनके अधीन बहुत से छात्रों ने शोध कार्य किया और इस समय कर रहे थे। इस साल फरवरी में फिर मूर्ति पूजा का खंडन करते हुए जब उन्होंने विवादास्पद बयान दिया था। जब उन्हें जान से मारने की खुली धमकी मिली थी। तब पुलिस ने उन्हें छह महीने के लिए सुरक्षा दे दी थी, लेकिन डा. कलबुर्गी ने दो महीने पूर्व पुलिस सुरक्षा हटवा दी थी। उनके शोध-छात्र उनकी सुरक्षा कर रहे थे। अपनी निर्भीकता के चलते उन्होंने अपने शोध-छात्रों के द्वारा सी.सी. टी.वी. उनके घर में लगाने के प्रस्ताव को भी स्वीकार नहीं किया। हत्या (30 अगस्त 2015) से चार दिन पहले ही उनकी आंखों का आप्रेशन हुआ था और वह अपने घर में स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे। उनके परिवार में उनकी विधवा पत्नी, एक पुत्र तथा

तीन पुत्रियां हैं और सभी सुखी गृहस्थ हैं। आइए, हम उनके आदर्शों को अपना कर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दें। विख्यात हिन्दी कथाकार उदय प्रकाश ने अपने कथा संग्रह 'मोहन दास' पर जिमले साहित्य, अकादमी अवार्ड को विरोधस्वरूप वापिस कर देने का निर्णय लिया है। मल्लेशप्पा माडिवलप्पा कलबुर्गी जिन्दाबाद। तर्कशीलता जिन्दाबाद! मानवता जिन्दाबाद! नास्तिकता जिन्दाबाद! धर्मान्धता छोड़िए, मानवता को जाड़िए।

मो : 9394508880

स्मृतिशेष

तर्कशल साथी श्री रोशन लाल नरड़ का निधन

तर्कशील सोसायटी हरियाणा के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रोशन लाल नरड़ का 12 जनवरी 2016 को बीमारी के चलते देहांत हो गया। वे लगभग 46 वर्ष के थे। सोसायटी के सम्पर्क में वे 1992 में आए और फिर लगातार सक्रिय रहे। अपने गांव नरड़ जिला कैथल में उन्होंने अनेक बार तर्कशील कार्यक्रम कराए और लोगों को तर्कशीलता से जोड़ने के प्रयास करते रहे। गांव में अपनी लोकप्रियता के चलते वे मेंबर पंचायत भी बने। अपने छोटे से आटा चक्की के व्यवसाय से उन्होंने अपने तीन बच्चों-दो पुत्रियों और एक पुत्र को उच्च स्तरीय शिक्षा दिलाई। तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों में लगातार भागीदारी के कारण वे सोसायटी की राज्य कार्यकारिणी में सदस्य भी रहे। साधारण शैली में तर्कशीलता पर अपने विचार रख पाने की योग्यता के कारण वे बेहद लोकप्रिय थे। उनके बिछुड़ने से सोसायटी ने अपना एक कर्मठ साथी खो दिया है। तर्कशील सोसायटी उनके निधन पर गहरे दुःख के प्रकट करती है और उनके परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करती है।

पृष्ठ 23 का शेष .... (बह्माण्ड यात्रा)

कि ये चंद्रमा से 6 गुना दूरी पर हैं। नजदीक की वस्तु दूर की वस्तु की अपेक्षा आंखों के नजदीक होती है तथा अपनी स्थिति बदलती है।

वर्ष 1680 में लगभग 100 वर्षों के बाद एक धूमकेतु दिखाई दिया था। भौतिक विज्ञानी आईजेक न्यूटन ने अपनी 'गणित कैलकुलस' खोज विधि के द्वारा उस धूमकेतु के पथ की गणना करके बताया कि यह पथ 'पैराबॉलिक' है, अर्थात् अत्यधिक अण्डाकार। न्यूटन के मित्र 'हैले' ने कहा कि यह धूमकेतु अब 1758-59 में दिखाई देगा। 1758-59 तक हैले तो जीवित नहीं रहा, परन्तु जब यह धूमकेतु उसके अनुमान के अनुसार दिखाई दिया तो इसका नाम 'हैले का धूमकेतु तारा' ही प्रसिद्ध हो गया। सारे विश्व ने 'हैले' को सम्मान दिया तथा वह अमर हो गया। यह धूमकेतु 1986 में दिखाई दिया था तथा अब लगभग 2061-62 में यह फिर से दिखाई देगा।

दोस्तो, धूमकेतु के सिर अर्थात् मुख्य हिस्से पर पानी से बनी बर्फ से ही अनुमान लगता है कि ये सूर्य से इतने अधिक दूरी पर चले जाते हैं, जहां पर बर्फ के जमान दर्जे से भी अधिक ठण्ड है। परन्तु कूपर पट्टी में से सभी पिण्ड सूर्य के निकट नहीं आते।

दोस्तो, तुम्हारा अब यह प्रश्न होगा कि यह कैसे पता लगाया जाता है कि धूमकेतु 'कूपर पट्टी' में से आया है अथवा कहीं और से? यदि धूमकेतु सूर्य के गिर्द ग्रह-पथ रास्ते के समतल चल रहा है, तो यह कूपर-पट्टी पिण्ड है, क्योंकि कूपर-पट्टी भी सूर्य के गिर्द ग्रह-पथ रास्ते के समतल ही है, परन्तु यदि कोई धूमकेतु सूर्य के गिर्द किसी अन्य रास्ते से आता है, तो यह 'ऊरट-बादल' पिण्ड है। क्योंकि ऊरट-बादल किसी एक समतल में नहीं, बल्कि सौर परिवार के इर्द-गिर्द एक फुटबाल की भांति है। हां, इस ऊरट बादल की यात्रा हम तुम्हें अगले अंक में करवाएंगे....(क्रमश)

हिन्दी अनुवाद -**बलवंत सिंह लेक्चरार**

शहीद भगत सिंह की पुण्य तिथि पर विशेष

23 मार्च, 1931 के शहीदों को सलाम

☐ हेमराज स्टेनो
मो. 09876953563

23 मार्च, 1931 के तीनों शहीद -भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव-यद्यपि एक समान ही सम्मान के पात्र हैं। जब इस दिन को भगत सिंह का शहीदी दिवस कहा जाता है, तो यह तीनों ही शहीदों का प्रतीक होता है। इस संघर्ष में भगत सिंह के द्वारा नेतृत्वकारी भूमिका निभाई गई। इसलिए हम यहां भगत सिंह के समय के हालातों की बात करते हुए यह देखेंगे कि भगत सिंह की भूमिका की वर्तमान में क्या प्रासंगिकता है। यह सब विवेचन करने से पूर्व कुछ बात रवायती समझ के बारे में करते हैं।

शासक वर्ग द्वारा आमतौर पर प्रचारित किया जाता हे कि भगत सिंह के सपनों की आजादी आ गई है। यह वास्तव में भगत सिंह की आजादी के बारे में भ्रमात्मक प्रचार है, क्योंकि भगत सिंह ने स्पष्ट तौर पर लिखा था कि राजनैतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ आर्थिक स्वतंत्रता का होना अत्यावश्यक है, तब ही समानता आएगी, जिसे कि आजादी कहा जा सकेगा। अतः शासक वर्गों द्वारा वास्तविक आजादी आ जाने की खड़ी की गई भ्रमात्मक बात पूर्णतः गलत बात है।

एक रवायत यह भी चल रही है कि भगत सिंह के नाम पर क्लब एवं सोसायटियां बनाकर खेल उत्सव करवाने अथवा अन्य सुधारक कार्य करवाने को ही भगत सिंह के मार्ग पर चलना मान लिया जाता है। यह सब भगत सिंह की क्रांतिकारी विरासत की मूल भावना को मार देता है, चाहे ऐसा करने वालों की नीयत कितनी भी साफ क्यों न हो। भगत सिंह ने जुलाई, 1928 में साधु वेस्वानी, जिसने उस समय 'भारत युवक संघ' की लहर चलाई थी, के बारे में नवयुवकों को चौकस करते हुए लिखा था कि साधु वेस्वानी भावुकता की बातें करते हुए एक स्थान पर कह जाते हैं कि 'हमें अपने राष्ट्रीय आंदोलन को जनता के सुधार का आंदोलन बना देना चाहिए, तब ही हम बोल्शेविज्म-रूसी कम्युनिस्टों के खतरों से भी बड़े खतरे, लोगों के परस्पर आपसी युद्ध से बचा सकेंगे। गरीबों के पास जाओ, गांवों में जाओ, उन्हें दवा-दारू मुफ्त में बांटो, वह इतना कहकर ही समझते हैं कि हमारा कार्यक्रम पूर्ण हो गया है। वे रहस्यवादी कवि हैं (समाज में असमानता एवं दुर्दशा की स्थिति क्यों है? यह किसी व्यक्ति की समझ में न आने पर जब वह मायूस हो जाता है, तो वह किसी आलौकिक शक्ति अथवा किसी गलत कल्पना का सहारा चाहता है, यह रहस्यवाद होता है। रहस्यवाद, मायूसी का कुदरती प्रकटावा होता है-लेखक)। उन्होंने आगे लिखा कि साधु वेस्वानी के विचार एक ही शब्द में बताए जा सकते हैं कि 'फिर से वेदों की ओर लौट चलो।' 'वेदों में परमात्मा ने संसार का समस्त ज्ञान भरा हुआ है। इससे आगे और प्रगति नहीं हो सकती। हमारे भारतवर्ष ने प्रत्येक स्तर पर जो प्रगति कर ली थी, उससे आगे न तो दुनिया बढ़ी है और न ही बढ़ सकती है।' यहां पर यह स्मरण कर लेना उचित रहेगा कि वर्तमान में हिन्दुत्व की शक्तियां भी इसी बात को प्रचारित कर रही हैं।

अतः सुधारक कार्यो तक ही सीमित रहना भगत सिंह के मार्ग पर चलना नहीं है। यद्यपि सुधारक कार्यों का अपने-आप में महत्व अवश्य होता है।

कुछ हल्के भगत सिंह का शहीदी दिवस तो मनाते हैं, परन्तु वे भगत सिंह के कथनानुसार उद्देश्यों के बारे में स्पष्ट नहीं होते। अतः इस प्रकार से मनाया गया भगत सिंह का शहीदी दिवस एक रस्म बन कर रह जाता है, क्योंकि भगत सिंह ने स्वयं ही कहा था कि 'हमारा दिमाग उन उद्देश्यों के बारे में, जिन की प्राप्ति के लिए हम संघर्षरत हैं,

साफ होना चाहिए।'

इसलिए इन रवायती तौर तरीकों से परे हट कर जब हम उस समय पर दृष्टि डालते हैं तो भगत सिंह के समय में अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष के मोटे तौर पर चार रूझान सामने आते हैं। अब हम उन पर दृष्टिपात करते हैं।

नंबर एकः महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ किए जाने वाले आंदोलन वाला रूझान था। इस रूझान का वास्तविक उद्देश्य क्या था, इसके बारे में भगत सिह ने निर्णय देते हुए लिखा था कि 'हमें कांग्रेस के आंदोलन की संभावनाओं, पराजयों एवं प्राप्तियों के बारे में किसी प्रकार के भ्रम में नहीं रहना चाहिए।...यह दावे के साथ आजादी के लिए नहीं खड़े होते, बल्कि ये उनके साथ हिस्सेदारी के हक में है।' 1947 में अंग्रेजों के साथ समझौता करके कांग्रेस द्वारा सत्ता हासिल कर लेने पर भगत सिंह के उस निर्णय की पुष्टि हो गई।

नंबर दो : इसी प्रकार दूसरा रूझान था सुभाष चंद्र बोस वाला। भगत सिंह ने अपने समय में इस रूझान के बारे में निर्णय देते हुए लिखा था कि 'बम्बई की एक सभा में सुभाष जी ने भाषण दिया कि भारतवर्ष का विश्व के नाम एक खास पैगाम है। वह विश्व को आध्यात्मिक सबक देगा।' उन्होंने आगे लिखा कि सुभाष चंद्र बोस कहते हैं कि अंतर्राष्ट्रीयवाद वाले (अर्थात् समस्त विश्व के मजदूर वर्ग के सांझा निशाने अर्थात् पूंजीवादी व्यवस्था का खात्मा एवं मजदूर वर्ग का स्वामित्व) हमारे राष्ट्रवाद को संकुचित दृष्टिकोण समझते हैं, परन्तु यह भूल है। भारतीय राष्ट्रवाद का ख्याल ऐसा नहीं है। वह न तो संकुचित है, न स्वार्थ से भरा हुआ है और न ही क्रूरता है, क्योंकि इसकी जड़ अथवा मूल तो सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् है।

भगत सिंह आगे लिखते हैं कि 'यह भी वही साधु वेस्वानी वाला रहस्यवाद है, कोरी भावुकता है। वे प्रत्येक बात में अपने पुरातन समय की महानता को देखते हैं। वे कहते हैं कि 'पंचायती राज एवं लोगों का राज' भारतवर्ष में अत्यंत पुराना है। वे तो यहां तक कहते हैं कि साम्यवाद भी भारतवर्ष के लिए नई चीज नहीं है।

इस प्रकार उन्होंने सुभाष चंद्र बोस को पुरातन समय में से कुछ ढूंढने वाला कहा। भगत सिंह की शहीदी के पश्चात् सुभाष चंद्र बोस का जो रोल सामने आया, वह जर्मन साम्राज्य के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध को उचित मानता था। इस प्रकार उनकी भूमिका पूर्णतः साम्राज्यवाद-विरोधी नहीं थी।

इसके विपरीत जवाहर लाल नेहरू के बारे में भगत सिंह ने कहा था कि वे कहते हैं 'कि प्रत्येक नवयुवक को बगावत करनी चाहिए। राजनैतिक मैदान में ही नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक मैदान में भी। मुझे ऐसे व्यक्ति की कोई आवश्यकता नहीं, जोकि आकर कहे कि फलां बात कुरान में लिखी हुई है। कोई बात जो अपनी समझ की परख से ठीक न प्रमाणित हो, उसे चाहे वेद व कुरान में कितना भी अच्छा कहा गया हो, नहीं माननी चाहिए।' भगत सिंह ने आगे लिखा कि नेहरू कहते हैं कि 'जो लोग अब भी कुरान के जमाने के यानि आज से 1300 वर्ष पूर्व के अरब के हालात पुनः पैदा करना चाहते हैं अथवा जो पीछे वेदों के समय की ओर ताक रहे हैं, उनको मेरा कहना है कि यह तो ख्याल में ही नहीं आ सकता कि वह जमाना पुनः आ जाएगा, वास्तविक दुनिया पीछे की ओर नहीं लौट सकती, काल्पनिक दुनिया को चाहे कुछ दिन यहीं पर पकड़े रखो।'

इस प्रकार से भगत सिंह ने सुभाष चंद्र बोस एवं नेहरू की तुलना करते हुए कहा कि 'इस समय भारत को दिमाग के पोषण की आवश्यकता है और वह पं. जवाहर लाल नेहरू से ही मिल सकता है।' परन्तु साथ ही उन्होंने चौकस करते हुए लिखा कि 'इस का तात्पर्य यह नहीं कि उनके अंधानुयायी बन जाना चाहिए।'

इस प्रकार से देखने पर सुभाष चंद्र बोस पुरातन विचारों के स्वामी होने के कारण उनका वास्तविक आजादी का भविष्य-नक्शा ही नहीं था। भगत सिंह की शहीदी के बाद सुभाष चंद्र बोस का जो रोल सामने आया, वह जर्मन साम्राज्यवाद के साथ मिलजुल कर अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष को आगे बढ़ाने का था अर्थात् पूर्णतः साम्राज्यवाद विरोधी

नहीं था।

नंबर तीन : एक तीसरा रूझान यह था कि वह अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष को देशभक्ति का संघर्ष नहीं मानता था। यह रूझान था आर.एस.एस. वाले संघ परिवार का। संघ परिवार ने अंग्रेजों के विरुद्ध चलने वाले आंदोलन से अपनी दूरी बनाए रखी थी। इसी कारण से संघ परिवार अंग्रेजों का कभी भी निशाना नहीं बना। संघ परिवार के चरित्र के बारे में गहन अध्ययन करने वाले विद्वान प्रो. राम पुन्यानी लिखते हैं कि अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष के बारे में संघ परिवार के गुरु जी, गोलवल्कर के विचार थे कि 'अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध युद्ध को वह देशभक्ति ही नहीं मानता था। उसका कहना था कि यह लड़ाई में हिन्दू राष्ट्रवाद के वास्तविक तत्व से रिक्त करती है एवं आजादी के संघर्ष को साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष बनाती है।' यह स्मरण रखा जाना चाहिए कि साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन ही उस समय राष्ट्रीय स्वतंत्रता अथवा देशभक्ति का आंदोलन था। जब अंग्रेजों के विरुद्ध हमारे देश का आंदोलन चल रहा था तो वीर सावरकर, जिसकी मूर्ति संसद में लगी हुई है, कहता था कि 'सुपरमेसी का संघर्ष अंग्रेजों के चले जाने के पश्चात् शुरू होगा। ईसाई एवं मुस्लिम वास्तविक शत्रु हैं, जिनको केवल हिन्दुत्व के द्वारा ही पराजित किया जा सकता है।'

इसी प्रकार बंकिम चन्द्र चटर्जी ने एक उपन्यास-आनन्द मठ लिखा, जिसमें वंदे मातरम् का गीत फिट किया। इस में उसने एक पात्र से कहलवाया कि अंग्रेजों का शासन स्थापित होने से ही सनातन हिन्दू धर्म फूले-फलेगा। इसमें उसने आनद मठ के वैष्णव शिष्यों द्वारा मुस्लमानों की गई बर्बादी का गुणगान किया है।

वास्तविकता यह है कि संघ परिवार ने अंग्रेज विरोधी आंदोलन में कोई भाग नहीं लिया और न ही ले सकता था, क्योंकि यह इसे देशभक्ति का आंदोलन ही नहीं मानता था। संघ परिवार तो मुसलमानों एवं इसाईयों को ही प्रमुख शत्रु मानते हुए इनके विरुद्ध लड़ाई को हिन्दू कौम की लड़ाई मानता था। तात्पर्य यह है कि संघ परिवार का रूझान देशभक्त न होकर सांप्रदायिक एजेण्डे पर ही चलता रहा।

यही कारण है कि जब इतिहास के बारे में बात चलती है तो संघ परिवार वाले ले देकर वीर सावरकर की बात करते हैं तथा यह वही वीर सावरकर है, जिसने जेल के कष्टों को सहन न करते हुए अंग्रेजों से क्षमा-प्रार्थना की थी तथा अंग्रेजों के संविधान के अनुसार चलने का प्रण किया था।

अतः वास्तविकता यह है कि संघ परिवार वाला यह दूसरा रूझान अंग्रेज विरोधी न होकर सांप्रदायिक एजेण्डा लागू करने की बात ही करता था। आज भी नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली हिन्दुत्वी सरकार का सांप्रदायिक फासीवाद खुल कर सामने आ रहा है। जहां पर नरेन्द्र मोदी महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देता हुआ दिखाई देता है, वहीं पर हिन्दू महासभा नाथू राम गोडसे का बलिदान दिवस मनाती हुई दिखाई देती है। इन साम्प्रदायिक संगठनों के पास अपने इतिहास एवं वर्तमान में कुछ भी सकारात्मक नहीं है, जिस पर वे गर्व कर सकें।

चौथा : चौथा रूझान था भगत सिंह व उनके साथियों द्वारा चलाया गया आजादी का संघर्ष। यह खरा रूझान ही वास्तविक संघर्ष करते हुए वास्तविक आजादी हासिल करने का इच्छुक था। अंग्रेजों से ये किस प्रकार की वास्तविक आजादी हासिल करना चाहते थे, इसके बारे में भगत सिंह ने लिखा है कि हमारे देशवासियों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि शोषक अंग्रेज हों अथवा देशी। उनका कहने का भावार्थ था कि जब मेहनतकश जनता का शोषण होता रहेगा तो उनके हालात कभी भी नहीं सुधर सकते। इसीलिए उनका सपना यहां पर शोषण पर आधारित व्यवस्था को समाप्त करके समानता वाले समाज का निर्माण करना था। इस संबंध में भगत सिंह ने लिखा है कि 'हमारा विश्वास है कि आजादी सभी लोगों का मौलिक अधिकार है। प्रत्येक व्यक्ति को उसकी मेहनत फल का आनन्द उठाने का पूरा अधिकार है तथा प्रत्येक राष्ट्र अपने बुनियादी कुदरती साधनों का पूरा मालिक है। यदि कोई सरकार, जनता, उनके बुनियादी अधिकारों से वंचित करती है, तो लोगों का केवल अधिकार ही नहीं, बल्कि आवश्यक कर्त्तव्य है कि ऐसी सरकार को बेदखल

कर दें, क्योंकि बर्तानवी सरकार इन सिद्धांतों, जिनके लिए हम लड़ रहे हैं, के बिल्कुल विपरीत है, इसलिए हमारा दृढ़ विश्वास है कि प्रत्येक प्रयत्न एवं प्रत्येक अपनाया गया तरीका, जिसके द्वारा क्रांति लाई जा सके एवं इस सरकार का खात्मा किया जा सके, वह नैतिक तौर पर जायज है। हम वर्तमान ढांचे के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिज्ञ पक्षों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के हक में हैं। हम चाहते हैं कि वर्तमान समाज को पूर्णतः एक नए और बेहतर समाज में बदल दिया जाए। इस तरह से मानव के हाथ से दूसरे मानव का शोषण असंभव बनाकर समस्त लोगों के लिए सभी क्षेत्रों में पूर्ण आजादी को यकीनी बनाया जाए। हम महसूस करते हैं कि जब तक सामाजिक ढांचा बदला नहीं जाता एवं उसके स्थान पर समाजवादी समाज स्थापित नहीं हो जाता, सारी दुनिया एक विध्वंसकारी प्रलय के खतरे के नीचे रहेगी।'

इस सारी विचार चर्चा से स्पष्ट हो जाता है कि भगत सिंह एवं उसके साथियों वाला रूझान अंग्रेजों एवं सभी प्रकार के शोषकों से सम्पूर्ण आजादी हासिल करने के लिए संघर्ष का रूझान था।

परन्तु आज भगत सिंह के समय वाले हालात नहीं हैं, क्योंकि 1947 के बाद से हमारा देश बर्तानवी साम्राज्यवाद का सीधा उपनिवेश नहीं रहा। यह बहुत बड़ा परिवर्तन है। यह विचार कि 1947 में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, केवल सत्ता ही बदली है, यह उचित नहीं है। साम्राज्यवाद ने शोषण का उपनिवेशवादी रूप बदल कर इसके स्थान पर शोषण का नया रूप नवउपनिवेशवादी ढंग अपना लिया है जो और भी घिनौना एवं भयानक रूप है।

यह इस प्रकार है कि जब अंग्रेज शासन करते थे, तो वे कृषि का शोषण करने के लिए मुख्य तौर पर लगान ही वसूल करते थे। 1947 में जब सत्ता का हस्तांतरण हुआ तो उस समय भारत की कृषि, उद्योग एवं सेवाएं इत्यादि की कुल आय यदि 100 रुपए की होती थी, उसमें से 55 रुपए कृषि की आय होती थी। परन्तु आज इसका हिस्सा केवल 14 प्रतिशत ही रह गया है। तब कृषि पर निर्भर आबादी लगभग 70 प्रतिशत थी, परन्तु अब 50 प्रतिशत ही रह गई है। इससे देखा जा सकता है कि आबादी 20 प्रतिशत कम हुई है, परन्तु कुल आय में से कृषि का हिस्सा 40 प्रतिशत कम हो गया है। इन 14 प्रतिशत में से भी यदि बड़े किसानों की आय निकाल दें, तो 50 प्रतिशत छोटे, सीमांत एवं दरम्याने किसानों की आय 02 प्रतिशत से भी कम हो जाएगी। पिछले 66 वर्षों के समय में इस विलक्षण घटनाक्रम ने कृषि उजाड़ कर रख दी है। कृषि के उजाड़े का अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि 02 प्रतिशत आमदनी पर कृषि व्यवसाय के साथ जुड़े तीन लाख से भी अधिक ग्रामीण निर्धन पिछले 20 वर्षो में आत्महत्या करने की ओर धकेल दिए गए हैं। प्रत्येक 30 मिनट के पश्चात् एक किसान आत्महत्या कर रहा है। यह ही नहीं, बल्कि पंजाब में से ही दो लाख किसान कृषि छोड़ने के लिए मजबूर हो गए हैं तथा अखिल भारत स्तर पर 2500 किसान प्रतिदिन कृषि छोड़ रहे हैं तथा 42 प्रतिशत किसान कृषि छोड़ने के लिए तैयार हैं यदि उनके पास कोई अन्य विकल्प हो।

अतः 66 वर्षों में नव उपनिवेशवादी ढंग का क्रूर चेहरा और भी मुखर रूप से सामने आया है। आज हालत इस हद तक बुरी है कि हमारे देश में सरकार चाहे किसी भी राजनीतिक पार्टी की रही है अथवा रह रही है, परन्तु इसने अपने तौर पर हमारे देश के किसी भी मसले पर अपने तौर पर स्वतंत्र निर्णय नहीं ले सकती। बीते सालों से ये निर्णय करने का अधिकार साम्राज्यवादी देश एवं उनकी संस्थाएं जैसे कि विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं विश्व व्यापार संगठन इत्यादि के पास है। उदाहरण के तौर पर किसानों की जो सबसिडी समाप्त की जा रही है, यह विश्व व्यापार संगठन तय कर रहा है। उसके निर्देशानुसार ही हमारे जैसे देशों की सरकारें नीतियां लागू कर रही हैं, क्योंकि ये उनके दबाव में है।

इसका एक उदाहरण लेते हैं। कृषि विशेषज्ञ देविन्द्र शर्मा द्वारा वर्ष 2015 में लिखे गए एक लेख 'लोगों द्वारा पैदावारी प्रबंध परन्तु पैदावार लोगों के लिए नहीं' में उन्होंने दर्शाया है कि भारत के संदर्भ

में कृषि संबंधी विश्व बैंक का एजेण्डा है कि वर्ष 2015 तक भारत के लोगों से शहरों की ओर 40 करोड़ लोग प्रवास करेंगे। यह एजेण्डा 1996 में तय किया गया था। यद्यपि यह एजेण्डा पूर्ण रूप से लागू नहीं भी हुआ, परन्तु इस एजेण्डे के तहत भारत की विभिन्न सरकारों द्वारा पिछले 20 वर्षों से कृषि सैक्टर को विशाल स्तर पर उजाड़ा जा रहा है, जैसा कि पहले यू.पी.ए. सरकार का प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, वित्तमंत्री पी. चिदंबरम एवं रिजर्व बैंक के गवर्नर ने विश्व बैंक की भाषा बोलते हुए भारत में आर्थिक विकास के लिए कृषि में से आबादी को बाहर निकालने की आवश्यकता पर बल दिया था। मनमोहन सिंह ने अपने समय में कहा था कि कृषि में 70 प्रतिशत किसानों की जरूरत नहीं है। मोदी ने प्रधानमंत्री बनकर इस एजेण्डे को जोर-शोर के साथ लागू करने के लिए नौजवानों को कृषि से अलग करके उन्हें हुनरमन्द बनाने पर जोर दे रहा है। इससे देखा जा सकता है कि नीतियां साम्राज्यवाद तय कर रहा है और हमारी सरकारें उनको लागू करते हुए जनविरोधी फैसले ले रही हैं और जनता को इस बारे में कोई जानकारी तक नहीं होती। अब देखो कि यदि सीधा उपनिवेशवादी ढंग होता, तो लोगों को एकदम ज्ञात हो जाना था कि अंग्रेज ये नीतियां हमारे लोगों पर लागू कर रहे हैं।

परन्तु अब हालत अलग हैं। इसलिए नव-उपनिवेशवादी ढंग, उपनिवेशवादी शोषण से भी घिनौना, भयानक एवं पेचीदा है।

अतः निष्कर्ष यह है कि भगत सिंह के समय की उपनिवेशवादी लड़ाई से हालातों में हुए एवं हो रहे परिवर्तन को समझते हुए इस का निर्णय करते हुए और इसकी पेचीदगी की गांठ को खोलते हुए जनपक्षीय आंदोलन खड़ा करने की ओर आगे बढ़ना चाहिए। यह ही 23 मार्च के शहीदों को सही सलामी होगी।

स्रोत पुस्तकें-शहीद भगत सिंह एवं उनके साथियों के दस्तावेज एवं फाज़िज्म ऑफ संघ परिवार।

अनुवाद- बलवंत सिंह लेक्चरार

■

कविता

□जगविन्द्र सिंह (कैथल)
93555-349001

हम तो बस इसी बहाने निकले हैं
धरती की गोद में बैठकर आसमां को झुकाने निकले हैं
जुल्मतों के दौर से इंसां को बचाने निकले हैं
विज्ञान की ज्वाला जलाकर अंधेरा मिटाने निकले हैं
हम इंसान हैं, इंसानों को जगाने निकले हैं
हम इंसान हैं, इंसानों को इंसान बनाने निकले हैं।

हम अंधविश्वास को दहलाने निकले हैं
हम गरीबों की भूख दिखाने निकले हैं
हम किसी धर्म-मजहब के नहीं,
हम तो फासिवाद, धर्म-जात की नफरतों को मिटाने निकले हैं
हम इंसानों को जगाने निकले हैं
हम इंसान हैं, इंसानों को इंसान बनाने निकले हैं।

हम तो लोगों को मिलाने निकले हैं
शहीदों के देश में, ये अहसास दिलाने निकले हैं
किस तरह बलिदानों से स्वतंत्रता दिलाई
ये फिर बतलाने निकले हैं
भगत सिंह, शहीद सराभा को सुनाने निकले हैं
हम इंसानों को जगाने निकले हैं
हम इंसान हैं, इंसानों को इंसान बनाने निकले हैं।

हम जवानों को जवानी का महत्व समझाने निकले हैं
ना मरे जवानी नशे की महामारी से, बचाने निकले हैं
हम देशभक्त हैं, देशभक्त बनाने निकले हैं
विज्ञान की ज्वाला से, पाखण्ड को मिटाने निकले हैं
हम इंसानों को जगाने निकले हैं
हम इंसान हैं, इंसानों को इंसान बनाने निकले हैं।

क्यों मुजफ्फर नगर जला, क्यों गुजरात सुलगा
क्यों बच्चे मारे पेट में, क्यों नारी का अपमान हुआ
हम वो राज बताने निकले हैं
हम लोगों की आंखों से पट्टी हटाने निकले हैं
अब अगर तू न समझा जगविन्द्र,
आगे क्या अंजाम होगा तेरे देश का
हम वो अनुमान लगाने निकले हैं
हम इंसानों को जगाने निकले हैं
हम इंसान हैं, इंसानों को इंसान बनाने निकले हैं।

बाबाओं के काले कारनामे

झारखंड में डायन बता कर पांच महिलाओं की हत्या

रांचीः झारखंड की राजधानी रांची सेकरी 37 किलोमीटर दूर मंडर थाने के कजिया गांव में डायन होने के शक में शुक्रवार रात पांच महिलाओं की हत्या कर दी गई।रांची ग्रामीण के पुलिस अधीक्षक राजकुमार लकड़ा ने कहा कि आधी रात के करीब ग्रामीणों ने लाठी और धारदार हथियारों से हमला कर महिलाओं को मार डाला। ग्रामीणों को महिलाओं पर जादूटोना करने का शक था। पांचों महिलाएं अलग-अलग परिवार की थीं। पुलिस ने इस सिलसिले में करीब दो दर्जन लोगों को हिरासत में लिया है। महिलाओं के शव बरामद कर लिए गए हैं।

ग्रामीणों को शक था कि ये महिलाएं डायन थीं और इनके कारण गांव में शांति नहीं रहती। परिजनों के मुताबिक ग्रामीणों ने दरवाजा खुलवाया और एक-एक की महिलाओं को घर से बाहर निकाल लिया और धारदार हथियारों से हमला कर उनकी हत्या कर दी। हमलावरों ने काफी देर तक शवों को अपने कब्जे में रखा और पुलिस को भी विरोध का सामना करना पड़ा। बाद में समझाने-बुझाने के बाद पुलिस शव पोस्टमार्टम के लिए ले गई।

-अमर उजालाः 9-8-2015

नशे में पुजारी और 2 सेवादारों ने पूर्व विधायक के गनमैन को पीटा।

चण्डीगढ़-शराब के नशेमें सेक्टर-19 के श्री गोरखनाथ सिद्ध हनुमान मंदिर के पुजारी बाबा छोटूनाथ और उसके सेवादारों ने हकिरयाण के बादली में 2005 से 2009 तक विधयक रह चुके एक विधयक के गनमैन की जमकर पिटाइ कर दी। इससे पहले   पुजारी और पूर्व विधायक ने पंचकुला में शराब पी और पुजारी को ड्रॉप करने से पूर्व विधायक चंडीगढ़ सेक्टर-19 आए। झगड़े की बात तब शुरू हुई जब पुजारी ने गनमेन से कहा कि मेरा मोबाइल नेताजी की गाड़ी में रह गया है। उनसे कहो कि मोबाइल देकर जाएं। फिल्हाल पुलिस ने बाबा छोटूनाथ और उसके दो सेवादारों को गिरफ्तार कर कोर्ट में पोश किया । कोर्ट ने तीनों को 14 दिन की न्यायियक हिरासत में भेज दिया है।

पुलिस को बुधवादर देर रात करीब एक बजे सूचना मिली कि सेक्टर-19 स्थित श्री गोरखनाथ सिद्ध हनुमान मंदिर में झगड़ा हो रहा है। सेक्टर-19 पुलिस स्टेशन के एसएचओ सवर्ण सिंह ने बताया कि रात को उन्होंने पाया कि बाबा छोटूनाथ और उसके सेवादार सुनील और सोमबीर ने र्पूव विधायक के गनमैन को बुरी तरह से पीटा हुआ था। आरोपियों ने गनमैन की वर्दी तक फाड़ डाली थी। पुलिस के मुताबिक लड़ाई के वक्त पूर्व विधायक नहीं थे। पूर्व विधायक और छोटू नाथ एक दूसरे को पहले से जानते हैं। वीरवार रात भी दोनों ने पंचकूला में साथ ही शराब पी थी। पुलिस ने बताया कि जब पूर्व विधायक ने बाबा छोटूनाथ और गनमेन को मंदिर में छोड़ा तो उसका मोबाइल पूर्व विधायक की गाड़ी में ही रह गया। जिस पर छोटूनाथ ने गनमैन से कहा कि पूर्व विधायक से कहो कि मोबाइल लेकर आएं। इसी बात पर दोनों में बहस हो गई और बात मारपीट तक पहुंच गई। इसके बाद छोटूनाथ और दोनों सेवादारों ने गनमैन शेर सिंह की जमकर पिटाई की। पुलिस का कहना है कि छोटूनाथ की मेडिकल रिपोर्ट में शराब पीने की पुष्टि हुई है।

-अमर उजाला (20-11-2015)

नाबालिग की शादी करवाने वाला तांत्रिक गिरफ्तार

कुरुक्षेत्र। सौदागरण मौहल्ले के एक व्यक्ति ने एक तांत्रिक और दो महिलाओं पर नाबालिग पौत्र को नशा देकर एक महिला से शादी कराने का आरोप लगाया है। पलिस ने शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर महिलाओं तथा आरोपी तांत्रिक को गिरफ्तार कर लिया है।

सौदागरण मौहल्ला थानेसर निवासी सुनील कुमार पुत्र पठान चंद ने 13 नवम्बर 2014 को पुलिस को शिकायत देकर दो महिलाओं व एक तांत्रिक पर उसके पौत्र अमन कुमार को अगवा करने और उसकी शादी का आरोप लगाया था। आरोपी तांत्रिक व महिलाओं ने मिलकर नशा देकर धोखे से उसकी शादी एक महिला ने करा दी है। अमन के अनुसार उसकी आयु करीब 18 वर्ष है। मामले में पुलिस चौकी कृष्णा गेट प्रभारी उपनिरीक्षक रा कुमार के नेतृत्व में सहायक उपनिरीक्षक साहब सिंह की पुलिस टीम ने जांच के दौरन मामले में आरोपी तांत्रिक नलवी वासी हंसराज को गिरफ्तार कर लिया है। इस मामले में दो महिलाओं की गिरफ्तारी पहले ही की जा चुकी है।

-अमर उजाला 5-5-15

बहन से दुष्कर्म कर रहे तांत्रिक को लोगों ने धुना

पानीपतः थाना सदर के अंतर्गत आने वाली एक मंडी के 42 साल के एक तांत्रिक को आठ साल की एक बच्ची के साथ दुराचार करते रंगे हाथों दबोच लिया। लड़की के भाई ने आरोपी को पत्थर मारकर अपनी बहन को बचाया। बाद में आक्रोशित लोगों ने तांकत्रिक को पकड़कर जमकर धुनाई की और लोगों ने पास ही शराब के खोके को आग के हवाले कर दिया। तांत्रिक एक आटा मिल में काम करता है और वहीं पार किराए के मकान में रहता हैं वह बच्चियों को टॉफी व चानिकठ दकरि इपनक पास बुलाता था। उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।थाना सदर पुलिस आरोपी को हिरासत में ले लिया है। पुलिस की प्राथमिक जांच में भी बच्चियों के साथ गलत हरकत करने की बात सामने आई है। मामला थान सदर के अंतर्गत आने वाली एक मंडी में वीरवार शााम का हैं यहां पर रहने वाला गोनी मोहम्मद पड़ोस में ही रहलने वाली आठ साल की एक बच्ची के साथ दुराचार कर रहा था। लड़की के भाई ने उसको देख लिया और उसको पत्थर मार दिया। गोनी मोहम्मद पत्थर श्लगने के बाद भागने लगा। इसके बाद उसकी आवाज सनुकर लड़की का पिता व बाकली लोग भी आ गए। उन्होंने आरोपी को दबोच लिया और उसकी धुनाई कर दी।-

अमर उजालाः 12-2-16

बिहार में भगवान हनुमान को समन जारी

पटना- एक सरकारी वकील ने बताया है कि बुधवार (17 फरवरी) को बिहार के रोहतास जिला में सड़क के किनारे बने एक हनुमान मंदिर के संबंध में भगवान हनुमान को अदालत में पेश होने के लिए समन जारी किए गए हैं। रोहतास के उपमण्डल न्यायाधीश ने पी.डब्लयू. डी. द्वारा दायर की गई अतिक्रमण संबंधी एक शिकायत की सुनवाई करते हुए भगवान हनुमान को कोर्ट में पेश होने के लिये कहा है।

अदालत के आदेशों को जिला के अधिकारियों द्वारा रोहतास जिला के देहरीआनसोन मंदिर में भगवान हनुमान की मूर्ति पर चिपका दिया गया है। विभाग ने अपनी शिकायत में 'पँचमुखी' हनुमान मंदिर जिसके कारण ट्रैफिक के आने जाने में बहुत बाधा पड़ती है, को वहां से हटाने के लिये अदालत के दखल की मांग की है।

बजरंग दल कार्यकर्ताओं के एक ग्रुप व बीजेपी के कार्यकर्ताओं ने इस नोटिस का विरोध करते हुए इसे वापिस लेने की मांग की है।

-द ट्रिब्यून (18-2-2016)

**

स्वास्थ्य

गुणों की खान है करेला

शरीर के लिए वैसे तो सभी सब्जियां बेहद फायदेमंद होती हैं, परन्तु करेले को अधिकांश लोग इसके कड़वेपन की वजह से खाना बिल्कुल पसंद नहीं करते हैं। मगर इसके गुणों को देखते हुए इसका कड़वापन कोई दुर्गुण नहीं रखता। यह स्वादिष्ट भले ही न हो, परन्तु हमारे स्वास्थ्य एवं सौंदर्य दोनों के लिए बहुत लाभकारी है।

लाभकारी सब्जी-अंग्रेजी में बिटरगोर्ड के नाम से पुकारा जाने वाला करेला औषधीय गुणों से भरपूर एक लाभदायक सब्जी है। इतना ही नहीं, पौष्टिकता की दृष्टि से भी इसमें लगभग सभी तत्वों का समावेश पाया जाता है। यही वजह है कि प्रायः रोगियों को यह एक बेहतरीन औषधि के रूप में दिखलाई देती है।

गुणों की भरमार-आयुर्वेद के अनुसार करेला बेहद उपयोगी, सर्वसुलभ और सभी सब्जियों में से एक है जो रक्तशोधक होने के साथ-साथ प्रोटन, लोहा, तांबा, फॉस्फोरस और कैल्शियम का भी बेहतर स्त्रोत होता है। करेले में 6 ग्राम कार्बोहाईड्रेट, 15 ग्राम प्रोटीन, 20 ग्राम कैल्शियम, 70 मिलीग्राम फास्फोरस, 18 ग्राम लोह तत्व, विटामिन ए, विटामिन सी के अलावा इसमें गंधयुक्त बायशोल तेल, केरोटीन, ग्लूकोसाइड, सेपोसिस, एल्केलाइड एवं बिटर्स पाए जाते हैं। इन सभी पोषक तत्वों के कारण करेला केवल सब्जी न होकर औषधि का काम करता है।

जोड़ों के दर्द में आराम-जोड़ों के दर्द से परेशान बड़े-बुजुर्गो को नियमित रूप से उषाकाल के दौरान हल्की सी काली मिर्च के संग घी में करेले को भून कर सेवन व जोड़ों पर करेले के पत्तों का रस लगाना चाहिए।

पत्थरी का खात्मा-पथरी से क्षुब्ध रोगियों को करेले का रस खाली पेट पीना काफी फायदेमंद सिद्ध होता है। गुर्दे या मुत्राशय की पथरी से पीड़ित रोगी को 2 करेले का रस प्रतिदिन पीना चाहिए और इसकी सब्जी खानी चाहिए। इससे पथरी गलकर पेशाब के साथा बाहर निकल जाती है। करेले के 20 ग्राम रस में शहद मिलाकर कुछ दिनों तक पीने से पथरी गल जाती है और पेशाब के रास्ते निकल जाती है।

मधुमेह पर अंकुश-आधुनिक जीवनशैली की देन यानि मधुमेह होने पर करेले का अधिकाधिक सेवन करें। निस्संदेह मधुमेह नियंत्रण में रहेगा और यह इस रोग में रामबाण औषधि का काम करते हुए असरकारी साबित होगा। इसके लिए मधुमेह के शिकार हो चुके लोगों को नियमित करेले के पत्तों के रस का सेवन करना चाहिए अत्यंत लाभकारी होता है। करेले के टुकड़ों को छाया में सुखाकर, पीसककर महीने चूर्ण बना लें। छह ग्राम चूर्ण पानी के साथ सेवन करने से मधुमेह के रोगी को लाभ मिलेगा। इसका प्रतिदिन सेवन करने से चमत्कारिक लाभ मिलता है, क्योंकि करेला पेन्क्रयाज को उत्तेजित कर इंसुलिन के स्त्रावण को बढ़ाता है।

चर्म रोगों में उपयोगी-करेले का रस रोजाना इस्तेमाल करने से फोड़े-फुंसियों, दाद, खुजली आदि जैसे अनेक त्वचा संबंधी रोगों से निजात पाया जा सकता है। इसके पत्तों को पत्थर पर रगड़ कर चटनी जैसा बनाकर लेप लगाने से त्वचा के रोग मिटते हैं और इसी लेप से आग से जल जाने पर उत्पन्न व्रण भी ठीक हो जाते हैं।

हृदय रोग में असरकारक- करेले में पोटेशियम विशेष रूप से पाया जाता है। पोटेशियम मनुष्य के शरीर के लिए बहुत अनिवार्य होता है और तो और हृदय को स्वस्थ रखने में यह अपनी अहम् भूमिका निभाता है। सो हृदय संबंधी रोगों में काफी फायदा मिलता है।

रतौंधी में करेले का बीज काफी फायदेमंद होता है। करेले में विटामिन सी भी भरपूर मात्रा में होता है।

रक्त निर्माण में सहायक-करेले में लोहा, तांबा, फास्फोरस के अतिरिक्त कैल्शियम प्रचूर मात्रा में होता है, जो अस्थि विकास और रक्त निर्माण में काफी अधिक मदद करता है।

पेट रोग में रामबाण-करेला भूख को बढ़ाकर हमारी पाचन शक्ति सुधारता है। शीतल होने के कारण गर्मी से उत्पन्न विकारों पर शीघ्र लाभ करता है। करेले के तीन बीज और तीन कालीमिर्च को पत्थर पर पानी के साथ घिस कर बच्चों को पिलाने से उल्टी-दस्त बंद होते हैं।

खोज-खबर

ज्यादा चीनी खाने से बच्चे होते हैं मोटापे के शिकार

लंदन। बचपन में ज्यादा मिठाई, बिस्कुट और पेस्ट्री खाना स्वास्थ्य के लिए बेहद नुक्सानदायक साबित हो सकता है, लेकिन बच्चे इनका सेवन न करें, इसकी संभावना काफी कम रहती है। हालिया शोध में पाया गया कि साल भर में चार से 10 साल के बच्चे अपनी उम्र से दोगुना से भी ज्यादा यानी लगभग 22 किलोग्राम चीनी खा जाते हैं। ब्रिटिश शोधकर्ताओं के अनुसार ज्यादा चीनी खाने से बच्चों का स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हो जाता है। ऐसे में मां-बाप को अपने बच्चों के खान-पान को लेकर सावधानी बरतने की जरूरत है। उनका कहना है कि एक साल में बच्चे जरूरत से तीन गुना ज्यादा चीनी खा जाते हैं। इसके चलते बच्चे मोटापे की चपेअ में आने के साथ ही दांतों में सड़न की समस्या से जूझने लगते हैं।

डायबिटीज से निजात दिलाएगी नई एंटीबॉडी

बोस्टन। अब नई एंटीबॉडी से टाईप-टू डायबिटीज, फैटी लीवर और दिल की बीमारी का आसानी से इलाज किया जा सकेगा। अमेरिकी शोधकर्ताओं ने एक ऐसी एंटीबॉडी विकसित करने में कामयाबी पाई है जो ग्लूकोज के स्तर को बेहतर करने के साथ ही फैटी लिवर की समस्या से निजात दिलाने में मददगार है। शोधकर्ताओं का कहना है कि यह एंटीबॉडी मोटापे के लिए जिम्मेदार एपीटू नामक हार्मोन को कम करती है। इससे टाईप-टू डायबिटीज, दिल की बीमारी और फैटी लिवर का खतरा बेहद कम हो जाता है। एजेंसी

तनावमुक्त रहने के लिए बंद रखें ईमेल

अगर आप जिंदगी में तनाव महसूस करते हैं, तो ईमेल और मोबाइल का इस्तेमाल कम से कम करें। लंदन फ्यूचर वर्क सेंटर के ताजा अध्ययन के अनुसार, ईमेल हताशा और तनाव का कारण भी है। जो लोग लगातार ईमेल प्राप्त करते हैं। अध्ययन में पाया गया कि यदि ईमेल रात या सुबह के समय चैक किए जाते हैं तो यह भी तनाव का कारण बनता है। हालांकि आप कितना दबाव महसूस करते हैं यह आपके व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। अध्ययन के मुख्य लेखक रिचर्ड मैककिनन के अनुसार, भले ही संचार का मूल्यवान तरीका है, लेकिन यह अवसाद, दबाव और तनाव का जनक भी है। इस अध्ययन में दो हजार लोगों को शामिल किया गया।

नाश्ते से दूरी न कर दे बीमार

क्या आप अक्सर नाश्ता किए बिना घर से निकल जाते हैं? तो जरा संभल जाएं। ऐसा करने से आप बीमार हो सकते हैं। नाश्ता स्किप करने से शरीर को भरपूर ऊर्जा नहीं मिलती। यदि नाश्ता नहीं करने को आदत बना लेंगे तो मानसिक एवं शारीरिक रूप से बीमार हो सकते हैं। हेलिंस्की यूनिवर्सिटी के एक शोध में पाया गया है कि नाश्ता न करने से दिल एवं हड्डियों के रोग का खतरा तो बढ़ता ही है, साथ ही शरीर में बैड कोलेस्ट्रोल भी बढ़ने लगता है। शोध के मुताबिक, नाश्ता नहीं करने से अल्कोहल और धूम्रपान की लत लगती है। इससे शरीर को पर्याप्त कैलोरी नहीं मिलती और दिनभर थकान महसूस होती है, जिससे मेटाबॉलिज्म सिस्टम गड़बड़ा सकता है। प्रतिदिन नाश्ते में फल, दलिया, दूध, सूखे मेवे, स्प्राउट्स शामिल करें।

बच्चों का कोना

तैरते हुए लक्कड़ की पहेली

कोई भी वस्तु, चाहे वह तैरे या डूबे, पानी विस्थापित करती ही है।

पहेली :

- आप किसी शांत झील में नाव की सैर कर रहे हैं। एक लक्कड़ (लकड़ी का लट्ठा) नाव के पास तैर रहा है।
- पहले इसका जवाब तर्क के आधार पर देने की कोशिश करें। उसके बाद प्रयोग द्वारा अपना जवाब जांच सकते हैं। प्रयोग के लिए आपको चाहिए, पारदर्शी बरनी, पेपर कप, लकड़ी का छोटा टुकड़ा और मार्कर पेन।

इस तरह से करें:

- बरनी में तीन-चौथाई ऊंचाई तक पानी भर लें। पानी पर लकड़ी का टुकड़ा और पेपर कप तैरा दें। बरी पर मार्कर पेन से पानी की सतह चिन्हित कर लें।
- अब, लकड़ी के टुकड़े को कप में रख दें। देखिए पानी की सतह का क्या होता है।

संकेत : ▸ लकड़ी तैरने वाली वस्तु है। इसे नाव में रखा जाए या नाव के बाहर, यह अपने वजन के बराबर ही पानी विस्थापित करेगी।

आलू को तैराइए

तैरना-डूबना और घनत्व जैसे मुद्दों को समझने के लिए यह एक अच्छी गतिविधि है।

ज़रूरी सामान :

- कांच के तीन ग्लास, आलू, पानी, नमक, चम्मच और चाकू।

इस तरह से करें :

- एक ग्लास को पानी से आधा भरकर उसमें नमक घोलते जाएं। इतना नमक मिलाते जाना है कि और ज़्यादा नमक घुलने की गुंजाइश न रहे। दूसरे ग्लास में सादा पानी ले लें।
- आलू के दो समान आकार के टुकड़े काट लें। एक टुकड़ा सादे पानी में छोड़ दें, वह डूब जाएगा। दूसरा टुकड़ा नमक घुले पानी में छोड़ें, यह तैरेगा।
- अब नमकीन पानी के ऊपर सादा पानी तैराना है। इसके लिए, ग्लास की दीवार के सहारे चम्मच से पानी छोड़ें। यदि आप यह ठीक से कर पाए तो सादा पानी नमकीन पानी पर तैरेगा और आलू इन दोनों के बीच में तैरता रहेगा।
- किसका घनत्व ज़्यादा है : आलू या सादे पानी का? आलू या नमकीन पानी का? सादे पानी या नमकीन पानी का?

तर्कशील हलचल

ग्राम परसदा, चिंगरिया में जन जागरण सभा का आयोजन

अंधविश्वास निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डा. दिनेश मिश्र ने ग्राम परसदा, चिंगरिया में आयोजित जन जागरण अभियान में कहा कि जागरूकता के अभाव में ग्रामीण अंधविश्वास में पड़ जाते हैं तथा कही-सुनी बातों व बैगाओं के बहकावे में आकर अनुचित काम कर बैठते हैं। छोटा सा अंधविश्वास भी जीवन में बड़ी रूकावटें पैदा कर सकता है। भ्रम व भय इस रूकावट को बढ़ाने का काम करते हैं। पीढ़ियों से बरकरार सामाजिक कुरीतियां व कुपरम्पराएं किसी व्यक्ति को साहसिक निर्णय लेने से रोक लेती हैं, जिसके कारण प्रतिवर्ष अनेक निर्दोष व्यक्तियों को जानमाल का नुक्सान उठाना पड़ता है। हजारों वर्षों पहले जब मनुष्य के पास भोजन, सुरक्षा, वस्त्र व उपचार के संबंध में साधन नहीं थे, तब उसी काल में झाड़-फूंक, जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, भूत-प्रेत जैसी मान्यताएं विकसित हुई। जिन प्राकृतिक घटनाओं का कारण ज्ञात नहीं था, उन्हें चमत्कारिक माना गया, जब उनसे बचने के लिए अनुष्ठान बीमारियों के उपचार के लिए झाड़-फूंक जैसी मान्यताएं, समस्या के समाधान के लिए अलग-अ टोटके बने, परन्तु आज विज्ञान के युग में व्यक्ति जहां एक ओर तो वैज्ञानिक साधनों का जमकर उपयोग कर रहा है, वहीं दूसरी ओर अपनी सोच नहीं बदल पा रहा है। अपनी सोच को वैज्ञानिक बनाने के बदले उसी तंत्र-मंत्र, झाड़-फूंक जैसे पाखंड में ही फंसा हुआ है, जिस कारण हिंसा की ऐसी घटनाएं होती हैं।

डा. मिश्र ने कहा कि आज भी जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, भूत-प्रेत, झाड़-फूंक की मान्यता पूरी तरह से नहीं हट पाई हैं, जिसके कारण अंधविश्वास में पड़ कर किसी व्यक्ति पर जादू-टोना करके बीमार करने, उसे परेशान करने का आरोप लगा दिया जाता है। आजादी के 67 वर्षों बाद भी देश में अनेक अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियां व्याप्त हैं, जिनके कारण प्रतिवर्ष हजारों निर्दोष महिलाओं व मासूमों को भली-भांति की प्रताड़ना से गुजरना पड़ता है तथा प्रताड़नाओं के चलते अनेक मामलों में उनकी जान भी चली जाती है। हमारे देश में विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग के नागरिक हैं, जिनमें अलग-अलग परम्पराएं, कुरीतियां व अंधविश्वास है, जो सामाजिक परम्पराओं व बीमारियों व उनके उपचारों के नाम पर कायम है। कुछ चालाक लोग आम नागरिकों के मन में बसे अंधविश्वासों, आस्था अशिक्षा का लाभ उठाकर ठगी का शिकार बनाते हैं प्रत्येक छात्र को अक्षर ज्ञान के साथ ही सामाजिक अंधविश्वासों व कुरीतियों व उनके दुष्प्रभावों के संबंध में शिक्षित किया जाना चाहिए। आम जनता में वैज्ञानिक सोच का विकास आवश्यक है। देश में जादू-टोने, तंत्र-मंत्र, डायन-टोनही के आरोप व अंधविश्वास में हजारों महिलाएं अत्याचार की शिकार होती हैं। केंद्रीय सरकार ने संसद में इस तथ्य की पुष्टि की है। नेशनल क्राईम रिकार्ड ब्यूरो ने सन् 2001 से 2010 तक 1791 महिलाओं की मृत्यु डायन प्रताड़ना के कारण होना माना है। उसके बाद भी कोई ठोस कार्ययोजना न बनने से आज भी ग्रामीण अचल व कस्बों में यह मान्यताएं बदस्तूर जारी है। मैंने 'अंधविश्वास निर्मूलन अभियान' व 'कोई नारी डायन टोनही नहीं अभियान' के अंतर्गत गांवों में महिलाओं की दशा को प्रत्यक्ष देखा है। इसलिए मुझे पता है कि एक बार डायन या टोनही का आरोप लग जाने के बाद गांव में उनका जीवन कितना दुष्कर हो जाता है।

डा. मिश्र ने कहा कि नागरिकों में जानकारी बढ़ाने की आवश्यकता है-शिक्षा से, जागरूकता के प्रचार से व किसी के बहकावे में नहीं आएंगे। बहुत

सारे लोग चमत्कार की खबरों के प्रभाव में आ जाते हैं, जबकि हमने अनेक वर्षो से अभियान संचालित करने के दौरान यह देखा है कि चमत्कार के रूप में प्रचारित की जाने वाली घटनाएं सरल वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के कारण होती हैं, तो कुछ में हाथ की सफाई, चतुराई व रासायनिक अभिक्रियाएं होती हैं, जिनके संबंध में आम लोगों को जानकारी नहीं होती। सूर्य, चंद्रमा, राहू, केतू, मंगल के कथित चमत्कारों के नाम पर धूर्त व चालाक लोग फायदा उठा जाते हैं व सीधे-साधे नागरिक ठगी के शिकार हो जाते हैं। ग्रामीण आंचल में होने वाली जेवरों को दुगना करने, रुपयों के दुगना करने, भगवान दिखाने की घटनाओं के पीछे चालबाजी व धोखाधड़ी ही होती है। शिक्षित युवाओं को सामाजिक कुरीतियों के निर्मूलन के संबंध में आगे आने चाहिएं तथा प्रगतिशील विचारों को अपनाना चाहिए।

- डा. शैलेष जाधव

फेडरेशन ऑफ इंडियन रेशनलिस्ट एसोसिएशन की बैठक

विजयवाड़ा में 7 जनवरी, 2016 को फेडरेशन ऑफ इंडियन रैशनलिस्ट एसोसिएशन (फिरा) की मीटिंग डा.नरेन्द्र नायक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस में दक्षिण भारत के संगठनों ने विशेषतौर पर भागीदारी की। बैठक में फिरा के संरक्षक यू.कलानाथन ने मीटिंग की कारवाई का संचालन किया। इस अवसर पर फिरा के अध्यक्ष ने कहा कि हमारे संगठनों को देश में बन रहे सांप्रदायिकता पूर्ण माहौल एवं अंधविश्वास फैलाने वाली ताकतों से सचेत हो अपनी गतिविधियां चलाने की आवश्यकता है। इसके पश्चात् समस्त संगठनों ने अपनी-अपनी गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस समय फिरा के दिसंबर में होने वाले सम्मेलन के बारे में फैसला लिया गया कि वह सम्मेलन केरल का युक्तिवादी संगठन करवायेगा। मीटिंग में अन्य के अलावा श्री यू.कलानाथन, डा. दानेश्वर साहू, डा. विजयम, मि. राबर्ट रुस्टड, सुरेश गोड़ेराव, सोमू राम, अविनाश पाटिल, अनुपम सिंह, राम कुमार, मनोज बनसूद, ईश्वर नास्तिक एवं हरचंद भिंडर इत्यादि विशेष तौर पर शामिल हुए।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक बैठक सम्पन्न

17 जनवरी 2016 को कुरुक्षेत्र में सोसायटी अध्यक्ष गुरमीतसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, मंच संचालन डा. विजयकुमार राज्य कार्य कारिणी सदस्य ने किया। आपसी परिचय के बाद बैठक में तर्कशील कार्यकर्ता मान सिंह, कृष्ण कुमार पूंडरी, कृष्ण लाल राजौंद ने अपने अनुभव सांझे किए। मुख्य वक्ता के रूप में पूर्व अध्यक्ष और राज्य कार्य कार्यकारिणी सदस्य राजा राम हंडियाया ने सोसायटी को दरपेश चुनौतियों पर अपने विचार रखे और हिम्मत के साथ आगे बढ़ने की अपील की। तर्कशील पथ पत्रिका के संपादक प्रा. बलवन्त सिंह ने अंधविश्वास और धर्मिक कट्टरता को पूंजीवादी व्यवस्था से जोड़ कर अपना व्याख्यान दिया। अध्यक्ष गुरमीत सिंह ने देश भर और विश्व में चलते तर्कशील आंदोलन पर प्रकाश डाला। सभा में तर्कशील कार्यकर्ता रोशन लाल नरड़ के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया गया। कृष्ण लाल ने रोशन लाल नरड़ के तर्कशील जीवन पर प्रकाश डाला। और सोसायटी की तरफ से परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की। आगामी बैठक मार्च में करनाल में करने की घोषणा के साथ ही बैठक सम्पन्न हुई।

अनमोल विचार

सौभाग्यशाली जानवर, तुझे कभी प्रार्थनाएं नहीं दोहरानी पड़ीं, न ही तुझे पूजा-पाठ में खींच कर ले जाया गया है।

-जॉन ऑफ़ लाकलैंड

युवाओं में वैज्ञानिक चेतना पैदा कर रही है तर्कशील सोसायटी

फरवरी के पहले सप्ताह तर्कशील सोसायटी की साहित्य वैन वैज्ञानिक चेतना पैदा करने के लिए हरियाणा के जिला सिरसा के विभिन्न स्कूलों में पहुंची। तर्कशील सोसायटी पंजाब की इकाई कालांवाली (सिरसा) के सहयोग से विद्यार्थियों ने बड़ी मात्रा में साहित्य खरीदा। सबसे पहले गांव सकता खेड़ा के हाई स्कूल में प्रोग्राम पेश किया गया। मास्टर शमशेर सिंह द्वारा तर्कशीलय संस्था का निर्माण वह उद्देश्य के बारे जानकारी दी। उन्होंने प्रसिद्ध वैज्ञानिक, विचारक, इब्राहिम टी.कावूर के जीवन व उनके द्वारा किये गये चमत्कारों के पर्दाफाश व उनके द्वारा दैवीय शक्तियों का चमत्कारों को पेश करने पर दी गई चुनौती को विस्तार से बताया। डा. कावूद द्वारा लिखित 'देव और दानव' तथा 'देव पुरुष हार गये' नामक पुस्तकों का अनुवाद पंजाबी तथा हिंदी हुआ है और ये पुस्तकें पेजाब हरियाणा में हाथों बिकने रही हैं। इन पुस्तकों ने लोगों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सोचन पर मजबूर किया। और इन्हीं पुस्तकों के प्रभावित हो तर्कशील सोसायटी संस्था का गठन हुआ। अब तर्कशील संस्थाएं विभिन्न नामों से देश अथवा पूरे विश्व में कार्य कर रही हैं जिनका मुख्य उद्देश्य लोगों को अंधविश्वासों, वहमों-भ्रमों से जागरूक करना हैं और इन संस्थाओं द्वारा चमत्कार दिखाने पर करोड़ों का ईनाम रखा हुआ है जिसे कोई आज तक नहीं जीत पाया हैं। वैन संचालक जसवीर सिंह व मा.अजायब जलालाना द्वारा जादू के ट्रिक दिखा कर उनके पीछे छुपे हुए रहस्यों के बारे जानकारी दी गई। बच्चों व अध्यापकों को जागरूक करते हुए उन्होंने बताया कि बहुत सारे धूर्त बाबा लोग घरों तथा धर्मिक स्थलों पर जादूई चमत्कार दिखा कर भ्रमित करके लोगों का मानसिक, शारीरिक और आर्थिक शोषण करते हैं। लोगों के मानसिक बीमार होने पर चेलों, तांत्रिकों, सयानों, मुल्ला-मौलवियों द्वारा भोले-भाले लोगों को बड़े स्तर पर गुमराह किया जाता है। तर्कशील संस्थाएं लोगों को मानसिक स्वास्थ्य संबंधी भी जागरूक करती हैं। इसके इलावा घरों में ईंट पत्थर गिरना, ताबीज, खून के छींटे गिरना, बंद अलमारी में कपड़े कटना, आग लगनी और वस्तुओं का गायब होना, कसरें, ओपरी वस्तुओं का गायब होना, कसरें ओपरी पराई होना, हिस्टीरिया आदि के लिए घटनाओं का विश्लेष्ण करके कारण खोज कर स्थाई समाधान प्रस्तुत करती है। बाद में बच्चों के लिए साहित्य वैन की खिड़कियां खोल दी जाती हैं और वे आराम से पुस्तकों का अवलोकन करके खरीदारी करते हैं। सकता खेड़ा गांव में शहीद भगत सिंह लाईब्रेरी के मेंबरों ने इस प्रोग्राम में पूर्ण सहयोग दिया। प्रधान हरदीप सिंह, व गगनदीप सिंह व स्कूल मुख्य अध्यापक ने कार्यक्रम के आयोजन में विशेष भूमिका निभाई। बाद में गांव गंगा के सी.सै.स्कूल में वहां के प्रिंसीपल व अध्यापकों ने साहित्य वैन का स्वागत किया और बच्चों ने प्रोग्राम में उत्साह से दिलचस्पी ली और साहित्य की खरीद की। दूसरे दिन गोरीवाला स्कूल के विद्यार्थियों ने कहा कि उनके स्कूल में ऐसा वैज्ञानिक कार्यक्रम पहली बार हुआ है और उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला है। फिर नुहिंयावाली तथा बाद में आरोही माडल स्कूल, जलालाना के स्कूल में साहित्य वैन पहंची । वहां विद्यार्थियों ने बहुत सारे जिज्ञासा भरे प्रश्न पूछे और सुझाव दिया कि आपका ये प्रोग्राम हर महीने किया जाये ताकि उन्हें वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करने में आसानी हो। अगले दिन गांव सुखचैन, देसु मलकाना, फग्गू व रोड़ी गांव के स्कूलों में प्रोग्राम पेश किया गया, जिसमे प्रिंसीपल निर्मल सिंह के अतिरिक्त सिंकन्दर सिंह, जगदीश सिंह, वकील सिंह, बलजीत सिंह ने सराहनीय सहयोग दिया। रविवार के दिन छुट्टी होने पर गांव सुरतिया की चौपाल में कार्यक्रम पेश किया गया।

पूरे सात दिन तक तर्कशील साहित्य वैन से बड़ी मात्रा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला साहित्य खरीदा गया। इन पुस्तकों की कीमत बहुत ही कम होती जिससे ये हर व्यक्ति की पहुंच में हैं।

-रिपोर्ट-अजायब जलालाना, 9416724331

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में
धर्मनिरपेक्षता रहा मुख्य मुद्दा

आंध्रप्रदेश की नई बनी राजधानी विजयवाड़ा में दो दिवसीय नौवां अंतर्राष्ट्रीय सममेलन 6 व 7जनवरी,ख 2016 को समपन्न हुआ। इसमें देश एवं विदेशों से नास्तिक, तर्कशील, मानवतावादी एवं अन्य प्रगतिशील सोच वाले सेंकड़ों प्रतिनिधियों ने भागीदारी की। सम्मेलन का प्रारम्भ गोरा परिवार की सदस्या डा. डिमोस गोरा के स्वागत नृत्य के साथ हुआ। नास्तिक केन्द्र की अध्यक्ष श्रीमती जे. माइथरी ने सम्मेलन में भाग लेने आए प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह सम्मेलन नास्तिक, मानववाद एवं तर्कशीलता पर चर्चा करने का मंच हैं। वर्तमान समय में धर्मनिरपेक्षता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण समाज की मुख्य जरूरत हैं । नास्तिक केन्द्र के डायरेक्टर डा. जी. विजयम ने सम्मेलन का थीम प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम दो दिवसीय सममेलन में नास्तिक, जनतांत्रिक एवं मानवतावादी मूल्यों पर चर्चा करेंगे जो कि भारतवर्ष में बन रहे वर्तमान माहौल के लिए आवश्यक है। तत्पश्चात् डा. नरेन्द्र दाभोलकर, का. गोबिन्द पानसरे, प्रो.एम.एम.कलबुर्गी, बंगलादेशी ब्लॉगर अभिजीत एवं अन्य जिन्होंने तर्कशील एवं धर्मनिरपेक्ष विचारों के प्रसार के लिए बलिदान दिया है, की स्मृति में दो मिनट का मौन रखा। इस सम्मेलन की अध्यक्षता डा. वोल्कर मूलर, अध्यक्ष फ्री थिंकर ऑफ जर्मनी ने की। उन्होंने कहा कि भारत जैसे देश में हजारों वर्षो से भिन्न-भिन्न दार्शनिक परम्परा रही है जिस में नास्तिक एवं तर्कशील विचाधारा भी प्रमुख है। इसकी संस्कृति में दार्शनिक माहौल में मानवतावादी विचारधारा को फलने-फूलने का अवसर मिला है।

इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि एवं महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष अविनाश पाटिल ने अपने संबोधन में कहा कि धार्मिक कट्टरवादियों ने तर्कशील आंदोलन को तहस-नहस करने की मंशा से शहीद किया। परन्तु यह उनका भ्रम था। जबकि प्रगतिशील लोगों ने तर्कशील लहर का समर्थन करते हुए महाराष्ट्र निर्मूलन समिति की हजारों लोगों ने सदस्याता ग्रहण की, जिस से वहां इकाइयों की संख्या 200 से बढ़कर 300 से भी अधिक हो गई है। इस समय लहर के साथ नवयुवक एवं शिक्षित लोग जुड़ रहे हैं। हमें आशा है कि 2020 तक हम विशाल स्तर पर नौजवान पीढ़ी को अपने साथ जोड़ सकेंगे।

सम्मेलन के उद्घाटन के समय डा. के. विरामनी जो कि डी.के. के अध्यक्ष एवं परियार मेनियामायी विश्वविद्यालय के चांसलर भी हैं, ने कहा कि आज की नौजवान पीढ़ी सांम्प्रदायिक आतंकवाद की ओर आकर्षित हो रही है, यह एक चिंता का विषय है। अब वक्त आ गया है कि हम मानवतावादी मूल्यों के साथ लैस हों। उन्होंने यह घोषण भी की कि आगामी अंतर्राष्ट्रीय नास्तिक सम्मेलन तमिलनाडू में करवाने के लिए हमारी संस्था नास्तिक केंद्र का पूर्ण रूप से सहयोग करेगी। अरुण राय, अध्यक्ष, अमेरिकन नास्तिक संस्थान ने नास्तिक केंद्र की कार्यप्रणाली की सराहना की और कहा कि अमेरिका में भी स्वतंत्र विचार रखने वाले संगठनों को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके बावजूद भी धर्मनिरपेक्षता, नास्तिकता, तर्कशीलता एवं मानववादी चिंतन को जनसाधारण में फैलाया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि अमेरिका के चर्च द्वारा शिक्षा को प्रभावित किया जा रहा है जिसमें राजनेताओं का भी रोल है। जर्मनी के एम पी मिस्टर एलफ्रेड पीटजोल्ड, जो कि इस सम्मेलन में विशेष तौर पर पहुंचे थे, ने कहा कि धार्मिक, कट्टरता के कारण बहुत से लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है। आई.एस.आई.एस. के द्वारा इस्लामी राज के नाम पर फैलाया जा रहा आतंक चिंता का विषय है। `इस समय मानवतावादी विचारों की सारे विश्व को आवश्यकता है।

उत्तरी भारत में सरगर्म तर्कशील सोसायटी पंजाब एवं रेशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा से लगभग 34 प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन में बलविंदर बरनाला एवं हरचंद भिंडर द्वारा लिख गया पेपर (How to change the outlook of World Scenario) पढ़ा गया। जिस में देश के वर्तमान हालात विशेषतौर पर सांप्रदायिक शक्तियों द्वारा सरकार की शह पर की जा रही गुण्डागर्दी का गंभीर नोटिस लिया गया। इस समय तर्कशील, नास्तिक एवं मानवतावादी विचारधारा वालों के लिए इन का सामना करना एक बड़ी चुनौती है। हम सभी मिल कर इन सांप्रदायिक एवं अंधविश्वास फैलाने वाली ताकतों का डटकर मुकाबला करेंगे।

सम्मेलन में इससे अतिरिक्त 'नौजवान एवं आतंकवाद' व 'महिलाएं एवं सामाजिक परिवर्तन' विषयों पर ग्रुप चर्चा भी हुई जिसमें तर्कशील सोसायटी पंजाब एवं हरियाणा के प्रतिनिधियों ने विशेषतौर पर अनुपम सिंह की बेटी रैशल एवं आत्मा सिंह की बेटी सजोनर ने विशेष सरगर्मी दिखाई।

सम्मेलन में दूसरे दिन तर्कशील सोसायटी पंजाब की गतिविधियों का स्लाईड शो सोसायटी की पटियाला इकाई के साथी जनक राज द्वारा प्रस्तुत किया गया। सम्मेलन के अंत में डा.विजयम ने सम्मेलन को सफल बनाने के लिए सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि आगामी सम्मेलन जनवरी, 2018 में तमिलनाडू में रैशनलिस्ट फोरम तमिलनाडू के सहयोग से करवाया जाएगा। इस सममेलन में मि. रॉबर्ट रूस्टड ह्यूमनिस्ट एसोसिएशन नार्वे ने भी विशिष्ट अतिथि के तौर पर भाग लिया। इस समय नास्तिक, मानवतावादी एवं तर्कशील विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष एवं उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया जिनमें फिरा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. नरेन्द्र नायक एवं तर्कशील सोसायटी पंजाब के हरचन्द भिंडर भी सम्मिलित थे।

जंतर-मंन्त्र दिल्ली में धरना

डा.दाभोलकर, का. पानसरे एवं प्रो. एम. एम. कलबुर्गी के कातिलों की गिरफ्तारी के लिए सरकार पर दबाव बनाने के मकसद से दिनांक 12-2-2016 को महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के तत्वाधान में नई दिल्ली के जंतर-मन्त्र पर एक दिवसीय धरना दिया गया। इस धरने में डा. नरेन्द्र दाभोलकर एवं का. गोबिन्द पानसरे के पारिवारिक सदस्य डा. हामिद दाभोलकर एवं श्रीमती मेघा पानसरे (का. पानसरे की पुत्रवधू) विशेषतौर पर सम्मिलित हुए।

धरने के दौरान उनके परिवारों द्वारा मांग की गई कि उन तीन की हत्या में एक ही प्रकार के हथियारों का प्रयोग किया गया। उनकी हत्या के पीछे किसी भी प्रकार की कोई पारिवारिक अथवा निजी दुश्मनी नहीं थी । उनको केवल इस कारण मौत का शिकार होना पड़ा क्योंकि उन्होंने कट्टरवादी धार्मिक एवं सांप्रदायिक ताकतों के बारे में लिखा अथवा अंधविश्वास फैलाने वालों के विरुद्ध कानून बना कर लागू करने के लिए लगातार संघर्ष किया था। इस कारण हमारी मांग है कि इन तीनों केसों की जांच साझा तौर पर की जाए ताकि असली कातिलों तक जल्दी पंहुंच हो सके। (स्मरण रहे कि डा. दाभोलकर की हत्या 20 अगस्त, 2013, का. गोबिन्द पानसरे को 16 फरवरी, 2015 को गोली मारी गई थी जिससे उनकी मृत्यु 20 फरवरी को हो गई और प्रो. एम.एम.कलबुर्गी को उनके घर में 30 अगस्त, 2015 को गोली मार कर कत्ल कर दिया गया था।)

इस धरने में प्रमुख तौर पर तर्कशील सोसायटी पंजाब से श्री भूरा सिंह एवं हरचन्द भिंडर, रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा से लेक्चरार बलवन्त सिंह, अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति की ओर से अविनाश पाटिल, मेघा पानसरे, सुरेश गोडेराव, माधव एवं दिलीप अरालीकर आदि ने संबोधन किया और सरकार से जांच में तेजी लाने की मांग की।

केस रिपोर्ट

उसके नर्स बनने की दास्तान

□बलवंत सिंह लैक्चरार

मो : 94163-24802

दिलप्रीत दिल्ली यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएट थी। जब वह स्कूल में पढ़ रही थी, तभी उस के पिताजी यू.एस.ए.में चले गए थे। उसके पिता करनैल सिंह अत्यन्त परिश्रमी व्यक्ति थे। अमेरिका की नागरिकता मिलने के पश्चात् करनैल सिंह ने वहां पर अपना अच्छा खासा कारोबार जमा लिया था। अमेरिका में रहते भारतीयों के साथ उसका काफी अच्छा मेलजोल बन गया था। यू.एस.ए. की नागरिकतामिलने के पश्चात् उसने भारत से अपने परिवार को भी अमेरिका में बुला लिया था। तब तक दिलप्रीत ने अपनी ग्रेजुएशन पूर्ण कर ली थी।

अमेरिका में पहुंचने के कुछ ही समय के पश्चात् करनैल सिंह ने अपने परिचित एक भारतीय परिवार में एक सुशिक्षित लड़के के साथ दिलप्रीत कौर का रिश्ता तय कर दिया। वह लड़का अमेरिका में इंजीनियर था। उसकी अभिलाषा थी कि दिलप्रीत शादी के उपरांत नर्सिंग की पढ़ाई करके एक नर्स का लाईसैंस बनवाकर यूएसए में नर्स की जॉब करे। दिलप्रीत ने अपनी मजबूरी बताई कि उसने ग्रेजुएशन में साईंस नहीं पढ़ी, अतः उसे अब नर्सिंग की पढ़ाई में परेशानी आएगी। परन्तु लड़के ने उसे प्रोत्साहन दिया कि वह नर्सिंग की पढ़ाई में उसकी पूर्ण तौर पर सहायता किया करेगा।

शादी होने के पश्चात् दिलप्रीत कौर ने अपने पति के कहने पर यूएसए में नर्सिंग के कोर्स में दाखिला ले लिया। शुरू के कुछ समय तक उसके पति ने दिलप्रीत का पढ़ाई में अत्यंत सहयोग दिया, जिसके कारण वह नर्सिंग कोर्स के प्रथम चार सैमेस्टरों में 80 प्रतिशत से भी अधिक अंक लेकर उत्तीर्ण हो गई। इसी दौरान उनके घर एक पुत्री ने भी जन्म ले लिया। पुत्री को जन्म देने के पश्चात् भी एक सैमेस्टर में दिलप्रीत ने 82 प्रतिशत अंक प्राप्त कर लिए। परन्तु अब धीरे-धीरे उनके घर का माहौल बिगड़ने लग गया। सारे परिवार में तनाव का वातावरण बनता चला जा रहा था। इस कारण से दिलप्रीत अब अपनी पढ़ाई में ध्यान नहीं दे पा रही थी। अतः वह अब पढ़ाई में पिछड़ती ही चली जा रही थी। पहले तो उसका पति हर बात में उसका सहयोग करता था, परन्तु अब वह छोटी-छोटी बात पर उससे झगड़ने लग जाता था।

दिलप्रीत के पिता करनैल सिंह को जब उनके घर के माहौल का पता चला, तो वह अत्यंत परेशान हो उठा। दिलप्रीत की सास कुछ महीने पूर्व भारत में आई थी और एक-डेढ़ महीना भारत में रह कर गई थी। जब उसकी सास भारत से वापिस अमेरिका में लौटी, तबसे उनके घर में झगड़ा अधिक होने लगा था। रोज-रोज का यह झगड़ा दिलप्रीत के लिए असहय हो चला था। वास्तव में हमारे भारत के अधिकतर लोग चाहे किसी भी विकसित से विकसित देश में चले जाएं और चाहे कितनी भी धन दौलत कमा लें, परन्तु उनकी सोच फिर भी रूढ़िवादी ही रहती है। ऐसे लोग अंधविश्वासों से ग्रस्त मानसिकता को ही अपनाए रहते हैं। यही हाल दिलप्रीत के मायके एवं ससुराल दोनों परिवारों का था।

दिलप्रीत एवं उसके मायके वालों को लगता था कि जबसे उसकी सास इंडिया होकर आई है। वह इंडिया के किसी तांत्रिक से कोई तंत्र-मंत्र करवा कर लाई है। भारत से वापिस आने के बाद उसकी सास हर रोज घर में धूप-अगरबत्ती जलाती रहती है और साथ ही हर रोज सुबह-सवेरे घर में भारत से अपने साथ लाई हुई एक पानी की बोतल में से थोड़ा सा

पानी लेकर, फिर उसमें अपने घर में से पानी मिलाकर सारे घर में छिड़कती रहती है। अपने पति के तिरस्कार पूर्ण रवैये एवं अपनी सास द्वारा घर में उल्टे-सीधे काम करने के कारण दिलप्रीत के मन में पक्का यकीन हो गया कि उसकी सास द्वारा भारत में किसी तांत्रिक द्वारा किए गए तंत्र-मंत्र के कारण ही घर का माहौल बिगड़ता जा रहा है।

उसी दौरान करनैल सिंह ने किसी आवश्यक कार्य के चलते भारत में आना था। करनैल सिंह के मन में योजना थी कि भारत में आकर वह अपने आवश्यक कार्य करने के साथ-साथ वह अपने समधियों द्वारा करवाए गए तंत्र-मंत्र को तोड़ने का उपाय भी करवा ही वापिस अमेरिका जाएगा। दिलप्रीत के निवेदन ने करनैल सिंह के निश्चय को और भी पक्का कर दिया।

भारत में आकर करनैल सिंह ने अपने पैतृक गांव में अपनी बची-खुची थोड़ी-बहुत जमीन-जायदाद को बेचना था। अपने पैतृक गांव में दो-तीन दिन के ठहराव के दौरान उसे अपने रिश्तेदार से तर्कशील सोसायटी के द्वारा जनहित में किए जाते कार्यो का पता चला तो वह अपने उस रिश्तेदार को साथ लेकर एक दिन मेरे पास आ गया। मेरे पास आकर उसने अपनी बेटी के जीवन की दुखभरी गाथा मुझ से कह सुनाई और मुझ से अनुरोध करने लगा कि मैं दिलप्रीत की सास द्वारा उनके घर में करवाए गए जादू-टोने की समस्या को हल कर दूं मैंने उसे सोसायटी का पोस्टर देकर समझाने की कोशिश की कि तंत्र-मंत्र करने से किसी का भी कोई नुक्सान अथवा फायदा नहीं हो सकता। परन्तु उसकी आंखों और दिमाग पर अंधविश्वास की एक ऐसी पट्टी बंधी हुई थी कि वह केवल एक ही रट लगाए जा रहा था कि मेरी बेटी का घर बचाकर दिखाओ, तब ही मैं आपकी तर्कशील सोसायटी को मानूंगा।

वक्त की नज़ाकत को देखते हुए मैंने उसे अपना मोबाइल नंबर देकर कह दिया कि दिलप्रीत को कह देना कि भारत के दिन के समयानुसार वह फोन पर मुझ से बात कर ले। मेरा विचार था कि दिलप्रीत तो नर्सिंग का कोर्स करते हुए साईंस विषय को पढ़ रही है। वह मेरी विज्ञान सम्मत बातचीत को अवश्य समझ जाएगी। कुछ दिनों के पश्चात् करनैल सिंह वापिस अमेरिका लौट गया और उसने मेरा फोन नंबर दिलप्रीत को दे दिया।

दो-तीन दिन के पश्चात् ही एक दिन दिलप्रीत का मेरे पास फोन आ गया। मैंने फोन पर उसे अपनी सारी समस्या बताने को कहा। उसने शुरू से आखिर तक अपनी राम कहानी कह सुनाई। वह बार-बार इसी बात पर जोर दे रही थी कि उसकी सास भारत के किसी तांत्रिक से कोई तंत्र-मंत्र करवा कर लाई है, जिसके कारण उनके घर में ऐसी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं।

मैंने फिर मनोवैज्ञानिक ढंग से उससे बातचीत करनी आरंभ कर दी तथा उसे पूर्ण धैर्य रखकर अपनी शादी से लेकर वर्तमान दौर तक के समस्त घटनाक्रम को तरतीब बार बताने के लिए प्रेरित किया। उस दौरान उसने फोन पर लगभग एक घंटे में अपने जीवन का सारा घटनाक्रम बता दिया उसकी बहुत सी बातें तो वही थी, जोकि उसके पिता ने मुझे बताई थी, परन्तु कुछेक ऐसी बातें थी, जिससे मैं उसकी समस्या की जड़ तक पहुंच गया। मैंने उसे ढांढस बंधाते हुए समझाया कि वह हर सप्ताह अथवा दो सप्ताह में एक बार पूर्ण रूप से आरामदायक अवस्था में बैठकर मुझ से फोन पर बात कर लिया करे, इससे उसकी सारी समस्या का हल हो जाएगा। उसने एक समस्या और बताई कि वह अपने घर में बैठकर अथवा लेट कर आरामदायक अवस्था में लंबे समय तक फोन बातचीत नहीं कर सकती। फिर इस समस्या का हल उसने स्वयं ही ढूंढ लिया। उसने बताया कि आज भी वह अपने कालेज से ही फोन पर बात कर रही है। और आगे से वह अपनी कार पार्किंग में लगाकर कार की सीट को आरामदायक स्थिति में खोलकर, फिर बातचीत कर लिया करेगी।

इस प्रकार जब भी वह स्वयं को मानसिक तौर पर परेशान महसूस करती, तो वह मुझ से फोन पर बातचीत कर लिया करती। फोन पर ही मनौवैज्ञानिक काऊंसलिंग हो जाने पर वह मानसिक

तौर पर अत्यंत मजबूत महसूस करती। धीरे-धीरे उसका मनोबल बढ़ता चला गया और वह दिलोजान से अपनी पढ़ाई में व्यस्त हो गई। बार-बार मनोवैज्ञानिक काऊंसलिंग के द्वारा में उसके अवचेतन मन में यह बात बिठाने में सफल हो गया कि अब वह भारत जैसे देश के किसी पिछड़े हुए समाज में रहने की अपेक्षा एक विकसित देश के उन्नत समाज की निवासी है।

निराशा के एक दौर में वह अपने पेपर ही ड्राप करना चाह रही थी और अब मेरे द्वारा मनोवैज्ञानिक प्रोत्साहन मिलने पर उसने नए जोश से अपनी तैयारी शुरू कर दी और आगामी सैमेस्टर में उसने 93 प्रतिशत अंक प्राप्त कर लिए। उसके कुछ समय पश्चात् उसने वहां नर्स के लाईसैंस के लिए एप्लाई कर दिया और वह पेपर भी उत्तीर्ण करके नर्स का लाईसैंस प्राप्त करने में कामयाब हो गई। फोन पर इस खुशी को उसने बड़े चाव के साथ सांझा किया और बताया कि 'मैं जल्दी ही भारत आऊंगी और आपसे मिलकर आपका धन्यवाद करूंगी।' परन्तु एक वर्ष से ऊपर समय हो गया है मुलाकात तो दूर, उसका फिर कभी फोन भी नहीं आया।

समस्या के वास्तविक कारण-प्रत्येक मां-बाप का अपनी सन्तान के साथ लगाव तो होता ही है, परन्तु देखने में आता है कि अपने नाकामयाब बेटे की चिंता मां-बाप अपने कामयाब बेटे से अधिक करते हैं। दिलप्रीत का पति तो अमेरिका में इंजीनियर था, परन्तु उसका दूसरा भाई निठल्ला एवं निकम्मा था। वह शराबी और अय्याश था। घर वालों ने कई बार से किसी न किसी कामकाज पर लगवाया, परन्तु वह अपने कर्त्तव्य के प्रति हमेशा उदासीन रहा। उसकी गैर जिम्मेदारी को देखते हुए उसके इंजीनियर भाई ने अपनी शादी होने के बाद उसे सहायता देना बंद कर दिया और उसे साफ तौर पर कह दिया कि अपनी कमाई कर और अपना गुजारा चला। परन्तु उसकी मां चाहती थी कि वह छोटे भाई की मदद अवश्य करे। परन्तु उसने अपनी मां से भी साफ तौर पर कह दिया कि वह एय्याशी के लिए अपने छोटे भाई को कोई भी पैसा नहीं देगा।

दिलप्रीत भी नहीं चाहती थी कि उसका पति अपने निकम्मे एवं एय्याश भाई की मदद करके उस पर पैसा लुटाए। जब उसके पति ने अपने भाई के प्रति कठोर रवैया अपनाया तो उसे बहुत अच्छा लगा। परन्तु इसी दौरान उसका पति बीमार रहने लग गया। डाक्टरी चैकअप में रिपोर्ट आई कि उसकी किडनियां खराब होनी शुरू हो गई हैं उसकी दवा-दारू तो चलती रही, परन्तु धीरे-धीरे उसकी किडनियां और भी खराब होती चली जा रही थी। एक बार जब उसकी तबीयत ज्यादा खराब हो गई तो डाक्टरों ने उसकी किडनी का बदलना आवश्यक बता दिया और उसका जीवन बचाने के लिए परिवार के किसी सदस्य को अपनी एक किडनी उसे प्रदान करने के लिए तैयार रहने का अनुरोध किया।

ऐसे समय में उनकी मां ने अपनी हिम्मत दिखाई और अपनी एक किडनी अपने बेटे को प्रदान कर दी। बेटे को जन्म देने और मुसीबत के समय में अपनी किडनी प्रदान करके उसका जीवन बचाने वाली मां के प्रति उस बेटे ने कृतज्ञ तो होना ही था। अस्पताल से अपना नया जीवन प्राप्त करके घर वापिस आने के पश्चात् वह अपनी मां के प्रति पूर्णतः कृतज्ञता से भर गया। अब वह अपनी मां की प्रत्येक आज्ञा का पालन करने लग गया। अपनी मां के कहने पर वह अपने छोटे भाई की हर प्रकार से मदद करने लग गया।

दिलप्रीत को अपने पति के तंदुरुस्त होने की तो खुशी थी, परन्तु उसका अपने छोटे भाई की हर प्रकार से मदद करना उसे अखरने लग गया। जब इसकी शिकायत वह अपने पति से करती तो वह उसकी बात को अनसुना कर देता। धीरे-धीरे इस बात तो लेकर उनमें तकरार बढ़नी शुरू गई। स्वास्थ्य ठीक होने पर उनकी मां ने भारत में आने का प्रोग्राम बना लिया। भारत में आकर उसने कई तीर्थस्थलों की यात्रा भी की और अपने रिश्तेदारों से मिलती-जुलती भी रही। हो सकता है कि इस दौरान वह किसी तांत्रिक अथवा बाबाओं इत्यादि के पास भी गई हो, जिसने उसे घर की सुख-शांति के नाम पर धूप-अगरबत्ती एवं जल वगैरह दिया हो जोकि अमेरिका अपने घर में वापिस जाकर वह धूप-बत्ती

........शेष पृष्ठ 47 पर.

प्रदूषण

आर.पी.गांधी
9315446140

जीवन में काम आने वाले पदार्थ अगर प्रदूषित हैं, तो यह प्रदूषण कहलाएगा। सबसे पहली आवश्यकता जो जीवन के लिए अति आवश्यक है वह है आक्सीजन, जो हमारे सांस द्वारा शरीर में पहुंच कर रक्त को शुद्ध करती है। अगर वायुमंडल ही दूषित है, तो हमें शरीर के लिए आवश्यक आक्सीजन उपलब्ध नहीं हो पाएगी, जिससे शरीर की कार्यक्षमता पर दुष्प्रभाव पड़ेगा। इतना ही नहीं, प्रदूषित वायु में हानिकारक गैसों की विद्यमानता के कारण शरीर पर पड़ने वाला दुष्प्रभाव और बढ़ जाएगा। जैसे-जैसे उद्योग-धंधे बढ़ रहे हैं। उसी अनुपात में वायु में प्रदूषण भी बढ़ रहा है। विकास के नाम पर उद्योग धंधों का बढ़ना स्वाभाविक है। हमारी बढ़ती हुई दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को ये उद्योग धंधे ही पूरा करते हैं। केवल कृषि से जीवन की सारी आवश्यकताएं पूरी नहीं की जा सकती। राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को मजबूती प्रदान करने के लिए कल-कारखानों की जरूरत रहती है। इन कारखानों से पैदा हुए उत्पाद राष्ट्र की आवश्यकता को तो पूरा करते ही है। साथ में निर्यात करने पर विदेशी पूंजी लाने में भी सहायक होते हैं।

वायु प्रदूषण का दूसरा मुख्य कारण यातायात के साधन हैं। इन यातायात के साधनों ने जहां हमारे जीवन को गति प्रदान की है और सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना आसान बना दिया है, वहीं इससे वायु प्रदूषण में भी वृद्धि हुई है। वास्तव में कोई भी वैज्ञानिक आविष्कार जिसने मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है, वहीं उसने मानव जीवन को खतरे में भी डाला है। बड़े-बड़े नगरों में यातायात के साधन अधिक होने के कारण वहां इस समस्या ने भयंकर रूप धारण कर लिया है और वहां पर मानव जीवन भी बुरी तरह प्रभावित हुआ है। उदाहरण के लिए दिल्ली में प्रदूषण एक भयंकर समस्या बन गई है और इससे सांस से संबंधित अनेक रोगों से लोग पीड़ित हो रहे हैं। यही कारण है कि दिल्ली सरकार और उच्चतम न्यायालय ने कुछ कड़े कदम उठाए हैं, जिनमें एक जनवरी 2016 से दिल्ली में परिवहन के साधनों के चलने पर कुछ शर्तें लगाई गई हैं। इसके अतिरिक्त न्यायालय के आदेश अनुसार एक जनवरी 2016 से डीजल के 2000 सीसी अधिक शक्ति वाले वाहन दिल्ली राजधानी क्षेत्र में रजिस्टर नहीं किए जाएंगे। ये सब उपाय प्रदूषण के विकराल रूप धारण करने पर ही करने पड़े हैं। यद्यपि इन उपायों से जनता और कार बनाने वाली कम्पनियों में बेचैनी पैदा हो गई है, क्योंकि जनता अब अपनी मर्जी से कार को किसी भी दिन सड़क पर नहीं ला सकेगी। दूसर ओर बड़ी कार बनाने वाली कम्पनियों के बड़े वाहनों की बिक्री कम हो जाएगी, जिससे उनके लिए आर्थिक संकट खड़ा हो सकता है। ये सभी समस्याएं बढ़ते हुए वायु प्रदूषण का ही परिणाम हैं। इसके अतिरिक्त वायु प्रदूषण ने अनेक रोगों को जन्म दिया है, जिनसे ग्रसित होकर लोग मौत का शिकार बन रहे हैं। अतः वायु प्रदूषण पर नियंत्रण पाना अति आवश्यक है, ताकि मानव जीवन सुरक्षित रह सके।

वायु प्रदूषण का एक और कारण है घरों से उठाए गए कूड़ा-कर्कट को खुले में फैंक देना तथा खुले में शौच जाना। इन कारणों से भी वायु प्रदूषित होती है और वायु संस लेने के काबिल नहीं रहती। इस समस्या से निपटने के लिए कूड़ा-कर्कट को इक्ट्ठा कर एक जगह दबा देना चाहिए, ताकि वायु प्रदूषण भी रुके और कूड़ा-कर्कट से अच्छी कार्बनिक खाद बन सके। खुले में शौच की समस्या से निजात पाने के लिए घरों में शौचालयों का निर्माण अति

आवश्यक है। ऐसा करने पर जहां प्रदूषण से छुटकारा मिलेगा, वहीं मानव जाति को होने वाली असुविधा से भी छुटकारा मिलेगा। पशुओं के गोबर से भी प्रदूषण होता है। अनेक बार गांव में गोबर से उपले बनाकर उनसे ईंधन का काम लिया जाता है, जो सही ढंग नहीं है, क्योंकि गोबर से निकलने वाली गैस वायुमंडल में मिलकर वायु को प्रदूषित तो करती ही है, साथ में वह एक साफ-सुथरा ईंधन भी है, जो उड़कर व्यर्थ चली जाती है। इस प्रकार गोबर से गोबर गैस प्लांट द्वारा गैस बनाकर उसे एक स्वच्छ ईंधन के रूप में प्रयोग में लाया जा सकता है। इससे हमें तीन लाभ प्राप्त होते हैं। स्वच्छ गैस ईंधन की प्राप्ति, प्रदूषण से छुटकारा, अच्छे कार्बनिक खाद की प्राप्ति।

इसके अतिरिक्त दीवाली पर चलाए जाने वाले पटाखे, आतिशबाजी वगैरा भी प्रदूषण को बढ़ाते हैं। यह हमारे पर्व मनाने के गलत तरीकों का परिणाम है। हमें अपनी मानसिकता को बदलना होगा और पर्वो को शालीनता के साथ सभ्य तरीके से मनाना होगा, ताकि किसी भी तरह से प्रदूषण न हो। इसके साथ-साथ जो लोग बीड़ी-सिगरेट पीते हैं, वे भी प्रदूषण को बढ़ाते हैं। बीड़ी-सिगरेट, हुक्का पीने से जहां इनका इस्तेमाल करने वाले स्वयं के स्वास्थ्य का नुक्सान करते हैं, वहीं पर वे वायुमंडल को प्रदूषित कर दूसरों के लिए भी हानिकारक सिद्ध होते हैं।

विद्युत बनाने के लिए थर्मल पावर प्लांट लगाए गए हें, जिनमें कोयले का बहुत अधिक मात्रा में प्रयोग होता है। कोयले के जलने से कोयले के कुछ अधजले कण वायुमंडल में मिल जाते हैं जो वायुमंडल को दूषित करते हैं। ऐसी वायमु में जब मानव जाति सांस लेती है तो ये अधजले कण मानव के फेफड़ों में जाकर श्वास-रोग पैदा करते हैं। अतः अब आवश्यकता है कि ऐसे पावर प्लांओं को बंद करके ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों का सहारा लिया जाए, जेसे पवन ऊर्जा, जल ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा आदि जिनसे प्रदूषण न्यूनतम मात्रा में होता है और वायुमंडल सुरक्षित रहता है।

कृषि क्षेत्र में प्रयोग होने वाले रसायन भी प्रदूषण का एक कारण हैं फसलों को कीटों एवं खरपतवार से बचाने के लिए इन रसायनों का सहारा लिया जाता है। इनसे निकलने वाली गैसें एवं सूक्ष्म कण वायुमंडल में मिलकर इसको नुक्सान पहुंचाते हैं, जो मानव जाति के लिए हानिकारक सिद्ध होते हैं। अतः कृषि क्षेत्र में इन रसायनों पर निर्भरता कम की जाए और इनका विकल्प तलाश किया जाए जो वायुमंडल को नुक्सान न पहुंचाए। खेती में कार्बनिक खेती को प्रोत्साहन देकर भी इस समस्या से निपटा जा सकता है।

अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूत्रि के लिए वनों को काटा जा रहा है, जिससे पेड़-पौधों की संख्या कम होती जा रही है। परिणामस्वरूप वायु का शोधन उचित मात्रा में नहीं हो पाता, जिससे प्रदूषण में वृद्धि हो जाती है। अतः हमें वनों की कटाई पर अंकुश लगाना होगा और अधिक से अधिक संख्या में पेड़-पौधे लगाकर उनका संरक्षण करना होगा। इससे वायु प्रदूषण को रोकने में सहायता मिलेगी। इसी समस्या के समाधान के लिए नारा दिया गया है 'बच्चे कम और पेड़ अधिक'

प्रदूषण का दूसरा अवयव जल प्रदूषण है। इसके भी अनेक कारण हैं। इसमें प्रमुख कारण है उद्योग धंधों से निकलने वाले अपशिष्ट द्रव्यों को नालों के रास्ते नदियों में डाल दिया जाता है या यूं ही बहने दिया जाता है। इससे ये अपशिष्ट पदार्थ नदी के जल को प्रदूषित करते हैं और यही जल भूमि द्वारा अवशोषित कर पृथ्वी के नीचे चला जाता है। ट्यूबवैलों द्वारा जब इस पानी को पीने के लिए अथवा सिंचाई के लिए निकाला जाता है, तो यह अपने में हानिकारक पदार्थ लिए होता है, जिससे कई खतरनाक बीमारियां पैदा होती हैं। यहां तक कि कई बार यह दूषित जल फसलों को भी नुक्सान पहुंचाता है। ऐसे पानी से उगाए जाने वाले खाद्यान्न साग-सब्जियां हानिकारक रसायन मिश्रित होती हैं, जिनके प्रयोग करने पर नाना प्रकार की बीमारियां शरीर को लग जाती हैं। हमारे अपने देश में नदियां जिन्हें पवित्र माना जाता है और लोग उन्हें पूजते हैं। उनके जल को पवित्र मानकर धार्मिक कृत्यों में प्रयोग किया जाता है। मगर अब ये नदियां पवित्र नहीं रह

गई हैं अपशिष्ट पदार्थो के मिलने से ये मलिन हो गई हैं। यद्यपि समय-समय पर इनके शुद्धिकरण के लिए करोड़ों रुपए की राशि खर्च की जाती है, लेकिन परिणाम आशाजनक नहीं होते और खर्च की गई राशि व्यर्थ चली जाती है। वर्तमान में सरकार इन नदियों को प्रदूषण से बचाने के लिए विशेष योजनाएं बना रही है। देखना होगा कि सरकार के ये प्रयास कहां तक सफल होते हैं।

जल प्रदूषण के एक अन्य कारण कृषि में प्रयुक्त होने वाले रसायन भी हैं। रासायनिक खादों और कीटनाशकों के रूप में हम जहरीले पदार्थ फसलों में डालते हैं। ये जहरीले पदार्थ पानी में मिलकर उसको प्रदूषित करते हैं। देखा गया है कि इन रसायनों के छिड़काव अथवा पानी में मिलनाने से खेतों में पाए जाने वाले मेंढक, सांप तक मर जाते हैं, जिससे इनके विषैले प्रभाव का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। अतः हमें चाहिए कि ऐसे जहरीले पदार्थो का प्रयोग कृषि क्षेत्र में न्यूनतम हो और इनकी जगह अन्य विकल्प खोजे जाएं, जो कृषि की पैदावार बढ़ाने में तो सहायक हों, मगर जल को प्रदूषित न करें

जल प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है कि फैक्ट्रियों और आबादी से निकलने वाले अपशिष्ट जल को नदियों में डालने से पहले उसका शोधन किया जाए। इसमें से निकलने वाले हानिकारक पदार्थो का सुरक्षित निपटान किया जाए। जल को पूर्ण शोधन के बाद ही नदियों में डाला जाए या सिंचाई के काम किया जाएं या किसी और उपयोग में लाया जाए। इससे नदियों का जल सुरक्षित रह पाएगा।

वायु-प्रदूषण, जल प्रदूषण के अतिरिक्त एक और प्रदूषण है, जो मानव जाति के लिए आज के युग में एक समस्या बना हुआ है। यह है ध्वनि प्रदूषण। इसके भी अनेक कारण हैं जैसे धार्मिक-उत्सव, राजनीतिक पार्टियों के कार्यक्रम, विवाह शादियों में बजने वाले डीजे और बाजे, परिवहन के साधन, उनमें लगे तीखी आवाज के हार्न, कल-कारखानों का शोरगुल आदि। इन सभी प्रकार के ध्वनि प्रदूषणों से मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। विशोकर वृद्ध व्यक्तियों और बीमार व्यक्तियों पर इन ध्वनि प्रदूषणों का गंभीर प्रभाव पड़ता है। उनकी बीमारी बढ़ जाती है। कई बार उनको दिल के दौरे पड़ जाते हैं। ऊंची आवाज में लगातार रहने पर श्रवण शक्ति कमजोर हो जाती है और अनेक केसों में सिर दर्द की शिकायत पैदा हो जाती है। इसके साथ-साथ ध्वनि प्रदूषण विद्यार्थियों की पढ़ाई में भी बाधा डालता है। एक विद्यार्थी ध्वनि-प्रदूषण के कारण अपना ध्यान पढ़ाई पर केंद्रित नहीं कर पाता। कई बार पड़ौस में जगराता होने पर परीक्षार्थी अपनी परीक्षा की तैयारी ठीक से नहीं कर पाते, जिससे उनके कैरियर पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कुल मिलाकर प्रदूषण चाहे वह किसी भी प्रकार का हो, मानव जाति के लिए हानिकारक है। अतः आवश्यक है कि इन प्रदूषणों को नियंत्रित कर जीवन को सुरक्षित रखा जाए ☐

पृष्ठ 44 का शेष.(उसके नर्स बनने की...)

करती रही हो और किसी बाबा के निर्देश के अनुसार घर में जल भी छिड़कती रही हो। परन्तु इन सभी क्रियाकलापों का दिलप्रीत के मन पर विपरीत प्रभाव ही पड़ता चला गया और वह अवसाद में चलती चली गई। उसको मनोभ्रम हो गया कि उसकी सास भारत से किसी तांत्रिक से तंत्र-मंत्र करवा कर लाई है, जिससे वह अपने बेटे को अपने वश में करती जा रही है। वह सोचती थी कि इसी कारण से ही उसका पति उसका साथ देने की बजाए अपनी मां का आज्ञा का ही पालन करता जा रहा है, जबकि उसका पति अपनी मां द्वारा उसे किडनी प्रदान करने के कारण उसका आज्ञाकारी बनता जा रहा था। दिलप्रीत अंधविश्वास का शिकार होकर अपने पति से उल्टा-सीधा बोलती थी और उनमें आपसी तनाव बढ़ता चला जा रहा था तथा इस तनाव का प्रभाव दिलप्रीत की पढ़ाई पर भी पड़ने लग गया था।

यदि मेरे द्वारा फोन से ही मनोवैज्ञानिक तौर पर उसका मनोबल बढ़ाकर सही दिशा प्रदान न की गई होती तो अंधविश्वास के अवसाद में उसके साथ कोई दुर्घटना भी घट सकती थी। ☒

नास्तिक होने का अर्थ

□एस.एस. चव्हान,

ईश्वर के अस्तित्व को न मानने वाले को नास्तिक कहा जाता है। नास्तिक होने का दूसरा अर्थ है सभी धर्मों का सम्मान करना। हर व्यक्ति को अपने विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता भारतीय संविधान ने प्रदान की है। अदृश्य शक्ति या ईश्वर के अस्तित्व को नकारने का अर्थ देशद्रोह या अपराध नहीं होता। नास्तिक होने का हमें गर्व होना चाहिए। ईश्वर या धर्म के नाम पर समाज को लूटने वाले पाखंडी लोगों की संख्या आज बढ़ रही है। ईश्वर से हमारी बिल्कुल दुश्मनी नहीं है और ईश्वर का हम विरोध भी नहीं करते, लेकिन ईश्वर और धर्म के नाम पर भोले-भाले लोगों को जो पाखंडी लूट रहे हैं, उनका हम विरोध करते हैं। ढोंगी आस्तिकता से सच्ची या पूर्ण नास्तिक होना अधिक अच्छा है। संत गाडगे बाबा ने कहा था- असली संत सब चल गए, बचे चपाती चोर। सच्चा नास्तिक कभी भी कामचोर, धोखेबाज, भ्रष्टाचारी और आलसी नहीं हो सकता। वह तो अपने काम पर निष्ठा रखता है। मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता होता है। इसे नास्तिक अच्छी तरह से जानता है। वह हर घटना के बारे में तर्क करता है। जो तर्क नहीं करते, वे मूर्ख होते हैं। केवल कर्महीन मनुष्य ही भाग्य को कोसते हैं। उनके सामने शिकायतों का अंबार पड़ा होता है।

निडरता ही आत्मविश्वास दिला सकती है। अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति और तर्कशील सोसायटी लोगों को निडर बनाने का कार्य करती है। आज विश्व में धार्मिक कट्टरता फैल रही है। आज आतंकवाद फैल रहा है। किसी भी प्रकार की कट्टरता मानव जाति के लिए घातक है। नागरिक व्यक्ति कट्टरपंथी नहीं बन सकता। वह तो मानवता का पुजारी होता है। आस्तिकता का ढिंढोरा पीटने वाले ८० प्रतिशत लोग ढोंगी होते हैं। यह अंदर की बात है। महान समाज सेवक बाबा आमटे का कहना है कि सच्चा युवक वही है, जो जातियता, अंधश्रद्धा एवं भ्रष्टाचार जैसी गलत नीतियों पर प्रहार करता है। ऐसी युवा पीढ़ी ही राष्ट्र निर्माण में जागृति ला सकती है। अंधविश्वास की महामारी तो केवल वहीं प्रहार करती है, जहां अंधभक्ति के कीटाणु हों। नास्तिकता आत्मविश्वास और स्वाभिमान पैदा करके शारीरिक एवं मानसिक कष्टों से बचाती है। धर्म की चिकित्सा करना गलत नहीं है। नास्तिक लोग ढोंग और पाखंडबाजी नहीं करते और पाखंडों से दूर रहते हैं।

नास्तिक किसी को दिव्य शक्ति का डर नहीं दिखाते। स्वर्ग और नरक यह सब काल्पनिक बातें हैं। मृत्यु के बाद पुनर्जन्म नहीं होता। क्योंकि आपके पूर्वजों ने कभी आपको लेटर लिखकर स्वर्ग की जानकारी बताई है? फोन या मिस्ड कॉल किया है क्या? जीना यहां मरना यहां इसके सिवा जाना कहा। यह नास्तिक जानते हैं। अंधविश्वास छोड़ो और देश को बलवान बनाओ। दकियानूसी विचारों से दूर रहो। अनावश्यक कर्मकांडों को छोड़ो। किसी पुरोहित नाम के दलाल के हाथों से सत्यनारायण की पूजा एवं अन्य विधि, विवाह समारोह मत कराईए। जन्म कुंडली, शुभ-अशुभ, नसीब आदि काल्पनिक बातों को मारो गोली और तर्कशील बनो। इसी में सबकी भलाई है। क्योंकि जो डर गया वह मर गया। आप आस्तिक रहो या नास्तिक इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन आपके अंदर मानवता, तर्कशीलता, ईमानदारी, सच्चाई, दया, प्रेम, करूणा, भाईचारा आदि गुण होना बहुत जरूरी है। संत कबीर जी कहते हैं कि आया था किस काम से सोया चादर तान, सूरत संभाल ले गाफिला अपने आप पहचान।

गोंदिया (महाराष्ट्र)
मो : 09422131605

खतरनाक जगह

□ बलजीत भारती
मो. 8295051400

जब स्कूल शब्द जहन में आता है तो आभास होता है कि जैसे यह एक बहुत ही पवित्र और अच्छी जगह है। आमतौर पर यह सोचा जाता है कि स्कूल बच्चों को अनुशासित, सुसंस्कृत बनाने के लिए सर्वोत्तम स्थान है और यही वह जगह है जहां पर बच्चे के भविष्य का निर्माण होता है। अभिभावक का एक लक्ष्य होता है कि बच्चे को किसी अच्छे स्कूल में दाखिल करवा दें। अब उनका बच्चा कुछ न कुछ बनने योग्य होकर ही स्कूल से बाहर आएगा। यानि स्कूल में प्रवेश एक अच्छे भविष्य की गारंटी समझा जाता है।

लेकिन क्या यथार्थ में भी ऐसा ही है। मैंने 25 साल स्कूलों में अध्यापन का कार्य किया है। न केवल सरकारी स्कूलों में बल्कि प्राईवेट स्कूलों में भी। मुझे स्कूलों को बहुत करीब से देखने व समझने का अवसर मिला है। इसीलिए स्कूलों के बारे में उपरोक्त धारणा जो हमारे मनों में स्थित है, मुझे हकीकत से कोसों दूर जान पड़ती है।

आज दो-अढ़ाई साल के बच्चे को स्कूल में भेजने का प्रचलन आम हो गया है। आप अंदाजा लगा सकता हैं कि जो बच्चा अभिभावक की निगरानी में रहकर अपनी दिनचर्या उन्मुक्त तरीके से सीख रहा है, उसे इस उम्र में स्कूल में एक सिस्टम में बांधने की कोशिश की जाए, तो क्या होगा। कैसे चलना है, कैसे उठना है, कैसे बैठना है, कब बोलना है, कब नहीं बोलना, यह सब उनकी टीचर तय करती है। इस उम्र में बच्चा उस पक्षी की तरह है जो अभी-अभी उड़ना सीख रहा है और बार-बार पेड़ की एक टहनी से दूसरी टहनी पर फुदक रहा है। यदि उसके पंख और पैर बांध दिए जाएं, तो वह कभी भी उड़ना नहीं सीख पाएगा। यही बात बच्चे के साथ भी लागू होती है। बच्चा इस दुनिया में रोज नई बातें सीखना चाहता है, उछलना चाहता है, कूदना चाहता है, चिल्लाना चाहता है, सारी दुनिया को अपनी बांहों में भरना चाहता है, लेकिन तब तो हद ही हो जाती है, जब प्री-नर्सरी के एक बच्चे को मैडम जोर से चिल्लाकर कहती है-'चुप्प्प...मुंह पे उंगली रखो।' मैं समझता हूं कि इससे बड़ा अत्याचार बच्चे के साथ कोई दूरा नहीं हो सकता। यह बच्चे को धीरे-धीरे मारने की शुरूआत हो रही है और हैरानी की बात यह है कि यह सब अनुशासन के नाम पर हो रहा है। प्राईमरी और मिडल कक्षाओं में भी हम लगातार इस प्रकार का अनुशासन सिखाने में लगे रहते हैं। भयंकर गर्मी या भयंकर सर्दी में घंटे-घंटे भर प्रार्थना सभा में बच्चे को खड़ा रखना कितना अमानवीय है। मैंने कितने ही बच्चों को प्रार्थना के दौरान गश खाकर गिरते देखा है। लेकिन प्रार्थना सभा का होना अवश्यंभावी है, नहीं तो बच्चा अनुशासित व धार्मिक कैसे बनेगा।

मुझे यह कभी समझ में नहीं आया कि अनुशासन के नाम पर बच्चों के विकास की राह में तरह-तरह से बाधाएं क्यों उत्पन्न की जाती हैं। हर बात को सिखाने के लिए डर ही क्यों दिखाया जाता है। अनचाहे विषय बच्चों के ऊपर थोप दिए गए हैं। बच्चा जो पढ़ना चाहता है वह पढ़ नहीं सकता और जो पढ़ना नहीं चाहता, वह पढ़ना पड़ेगा। नहीं पढ़ोगे तो मार पड़ेगी। अन्यथा फेल हो जाओगे। अच्छी जबरदस्ती है!

स्कूल की छुट्टी होने के समय जो खुशी बच्चों के चेहरे पर होती है, उसे मैं बयान नहीं कर सकता। ऐसा लगता है कि जैसे जेल से छूट कर आए हों। इन्हीं बच्चों के चेहरे सुबह देखने लायक होते हैं, जब वे स्कूल में आते हैं। एक कहावत याद आती है। 'एक आदमी एक बकरे को लिए जा रहा था। बकरा बहुत जोर-जोर से मिमियां रहा था। किसी ने पूछा कि कहां ले जा रहे हो? मालिक ने कहा कि इसे कसाई के पास ले जा रहा हूं। दूसरे व्यक्ति ने हंसकर कहा कि अच्छा, मैंने तो सोचा था कि इसे स्कूल में ले जा रहे हो।' बिल्कुल यही हाल बच्चे का होता है, जब वह स्कूल में जाता है, बच्चे को ये कहा जाता है कि तू बहुत उद्दंड हो गया है, तेरा इलाज स्कूल करेगा। अपने 25 साल के अध्यापन कार्यकाल के दौरान मैंने एक भी बच्चे को स्कूल में खुश नहीं देखा। अपने 25 साल के कार्यकाल के पश्चात् मेरे पास स्कूल के बारे में कहने के लिए एक भी अच्छी बात नहीं है। यह कितनी भयानक बात है।

आप सभी के छोटे बच्चे हैं। स्कूल जाते समय और स्कूल से आते समय बच्चे का व्यवहार आप भली प्रकार से देख सकते हैं। यदि बच्चे से पूछा जाए कि आप की इच्छा पूरी हो सकती है, बोलो क्या चाहते हो, तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वो कहेगा कि सभी स्कूल बंद होने चाहिएं। लोग भले ही स्कूल को बच्चे के भविष्य निर्माण का केंद्र समझते हों, लेकिन मैं स्कूल को जेल के बाद दुनिया की दूसरी सबसे खतरनाक जगह मानता हूं। यह वह जगह तो बिल्कुल ही नहीं है, जहां आपके बच्चे को होना चाहिए। यह जगह बच्चे के रहने लायक उस दिन होगी, जिस दिन स्कूल जाते समय बच्चे के चेहरे पर मुस्कान होगी और वापिस लौटते समय उदासी। ■

हरियाणवी कविता

डर के आगै भूत भागै

–रामेश्वर दास 'गुप्त'

अंधविश्वासी डर के कारण, न्यूये धक्के खावैं
जिनके मन मयं डर कोन्या, उड़ै भूत भागते पावैं

कुत्ते-बिल्ली जिसे जानवर, पीर के ऊपर मूत रहे,
उनकी गेल्या चिपटण वाले, ना दुनिया म्हं भूत रहे,
जिन के ना पै लूटण वाले, खोल दुकानें ऊत रहे,
शबाब-कबाब, धन म्हारा, वो उनके नां पै लूट रहे,
भूत जिन्न गर मांगै हिस्सा, उनको भी आंख दिखावैं।

भगवा बाणा पैहर बैठ गे, कातिल अर भ्रष्टाचारी
भगवानां के ठेकेदार बणे, ये मुल्ला और पुजारी,
हम नै उपदेश देण लाग रे, नशे बाज व्यभिचारी,
पढें-सुणैं हर रोज देखते, ना च्यौंद टूटती म्हारी,
अपणी रुखी भी दान करें हम, वो देशी घी की खावैं,

सौ म्हं अस्सी अंधविश्वासी, मन के रोगी जगह-जगह
इस कारण तो पैदा हो गे, अब ये ढौंगी जगह-जगह,
जप-तप अनुष्ठान करा रे, राज के भोगी जगह-जगह
राजा नै म्हारे खसम बणा दिए, झूठे जोगी जगह-जगह,
हम डरते वो शेर बणे ज्यां, गादड़ ईब धमकावैं।

म्हारी कमाई चुगण लाग रे, म्हारी राह के रोड़े,
फसल चरैं खुल्ले फिर रे, चोगिर्दे नै छूटे घोड़े,
तर्कशील सैं सारे हिन्द म्हं, बस गिणती के थोड़े,
'रामेश्वर' इनके डर तै, कई ढौंगी होए भगौड़े।
इस ऊँट नै कठ्ठे हो कै, पहाड़ के तलै ल्यावैं।

विशेष अपील

तर्कशील पथ के सभी सदस्यों से अपील है कि वे तर्कशील पत्रिका के कम से कम दो-दो सदस्य-ग्राहक और जोड़ें ताकि समाज में वैज्ञानिक जागरूकता को बढ़ाया जा सके

लेखकों/पाठकों के लिएः-

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए ।
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता, अपनी राय e-mai:tarksheeleditor @gmail.com आदि पर भेजी जा सकती है। ई-मेल भेजते समय SG-4 हिन्दी टाईप का ही उपयोग करें।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।

अपने मित्रों और रिश्तेदारों को किसी शुभ अवसर पर सरपराईज़ उपहार दीजिए। 100 रुपये चन्दा देकर साथ में उनका पता भेजें। आपकी ओर से एक वर्ष तक 'तर्कशील पथ' लगातार उनके घर भेजा जायेगा।

–संपादक मण्डल

राष्ट्रीय एवं अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर तर्कशील लहर के कदमों की ताल

नार्थ अमरीकन तर्कशील सोसायटी ओनटारियो (कनैडा) के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बलविन्द्र बरनाला एवं उपस्थित दर्शक

6-7 जनवरी को विजयवाड़ा में सम्पन्न हुए अंतर-राष्ट्रीय नास्तिक सम्मेलन में उपस्थित देश विदेश से तर्कशील नेतृत्व

नई-दिल्ली के जंत्र-मंत्र पर डा. नरेन्द्र दाभोलकर, कामरेड गोविन्द पनसारे एवं डा. एम एम कुलबर्गी के कातिलों की गिरफ्तारी के लिए दिए गए धरने की एक झलक

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिती महाराष्ट्र के प्रतिनिधी हुसैनीवाला बार्डर (पंजाब) पर शहीद भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त की समाधी पर पुष्पांजलि देने पहुँचे

फीरा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. नरेन्द्र नायक मोहाली (पंजाब) में सैमिनार को संबोधित करते हुए

14वें कृष्ण बरगाड़ी स्मृति सम्मान इस बार डा. रघुबीर कौर सचिव, देश भगत यादगार हाल जालंधर को दिया गया। इस अवसर पर तर्कशील नेतृत्व एवं स्मृति समागम कमेटी के प्रतिनिधी

बरनाला (पंजाब) में बन रहे तर्कशील भवन की माडल तस्वीर

अपील

साथी भगवंत सिंह यूके और आप सब के सहयोग से तर्कशील कैम्पस के निर्माण का कार्य जारी है, इस कैम्पस में सैमिनार कक्ष, संदर्भ पुस्तकालय और विज्ञान प्रदर्शनी शामिल होगी। यह भवन लोक पक्ष में की जाने वाली गतिविधियों का केन्द्र रहेगा, देश-विदेश से मिलने वाला सहयोग उत्साहवर्धक है, इस बड़े कार्य को पूर्ण करने के लिए सभी से सहयोग की अपील की जाती है, ताकि यह कार्य शीघ्र पूर्ण होकर अपने मिशन को समर्पित हो सके।

सम्पर्क : 98728 74620

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।